लूका
लिख्यो सुब-समिचार

लिखवा वाळोः लूका

लिखवा की वजाः ईसु मनख को बेटो

लिखवा को बखतः करीब ६० ईस्वी सन्।

यो सुब-समिचार लूका का मुजब दो बातहुंण के परगटे। एक तो या के ईसु परमेसर की परतिज्ञा का मुजब इसराइलहुंण को उध्दार करवा वाळो अने दूसरी या के ईसु मसीह आखा जग का लोगहुंण को उध्दार करवा वाळो हे। लूका ने लिख्यो के परमेसर का आतमा ने "गरीब-गुरबाहुंण के सुब-समिचार को परचार करवा सरु ईसु के जग माय मोकल्यो थो" यो सुब-समिचार लोगहुंण की हर तरा की जरुवत के पूरण करी सके हे। म्हान आनन्द का बारामें लूका, खास करिके पेलां पाठ माय ईसु का आवा की घोसणा करिके आखी बारता को सार दे हे, खास करिके ईसु का सरग जावा का बारामें पक्का परमाण दई के अने घणो खुली के बात लिखे हे, ताके मसीह लोगहुंण को बिसास बड़े के ईसु सरग पे उठई ल्यो हे। याज बात उने परेरितहुंण का काम माय बी लिखी हे।

रुप-रेखाः-

१. भूमिका *१.१-४*
२. ईसु को जनम, नानपणो, अने योहन बपतिसमा देवा वाळो *१.५-२.५२*
३. योहन बपतिसमा देवा वाळा की सेवकई *३.१-२०*
४. ईसु को बपतिसमो अने अजमाइस *३.२१-४.१३*
५. गलील से ईसु की सेवकई *४.१४-९.५०*
६. गलील से यरुसलेम *९.५१-१९.२७*
७. ईसु को यरुसलेम का ऐरे-मेरे को एक हफ्तो *१९.२८-२३.५६*
८. जीवतो होणो, नगे आणो, अने परमेसर कने जाणो *२४.१-५३*

लूका ने यो सुब-समिचार थियुफिलुस के लिख्यो

आदरणी थियुफिलुस,
१ नरा लोगहुंण ने उण बातहुंण का
बारामें लिखवा को काम अपणा हात माय
ल्यो जो हमारा माय घटी। २ठीक वीज
बातहुंण जो हमारे उण लोगहुंण से मिळी,
जिणने इनी बातहुंण के सुरु सेज देखी
थी अने जो परमेसर का बचन का सेवक
था। ३इकासरु सुरु सेज इनी सगळी
बातहुंण के होसियारी से अने सई-सई
परखवा का बाद, तमारा सरु लिखणों
म्हारे सई लाग्यो। ४जेकासे के तू उण
बातहुंण की सच्चई के जाणी ले जिणकी
थारे सीख दइगी हे।

योहन का जनम की भविसबाणी

५यहूदिया का राजा हेरोदेस का
राजकाल माय जकरियाह नामको एक
पुरोहित† थो जो पुरोहित अबियाह का
दळ को थो। अने उकी बइरा को नाम
इलीसिबा थो जो हारुन[a] का कुळ की
थी। ६वी दोइज परमेसर की नगे माय
धरमी था अने उणका चरित्तर परभु का
सगळा हुकम अने नेम-बिधान का मुजब
निरदोस था। ७वी बे-ओलाद था, क्योंके
इलीसिबा बांझ थी अने दोइज डोकरा-
डोकरी हुई ग्या था।
८असो होयो के जदे जकरियाह
अपणा दळ की सारी आवा पे परमेसर
का सामे पुरोहित को काम करी र्‌यो
थो ९तो पुरोहितहुंण की रीति मुजब
चिट्‌ठी लाखी के उके छांटी ल्यो के
परभु का मन्दर माय जई के धूप-बत्ती
जळाय। १०अने धूप-बत्ती जळावा का
बखत सगळा मनखहुंण बायरे पराथना
करी र्‌या था। ११अने उके धुप-देवा
की बेदी का सुदा हाताड़ी परभु को
एक सरगदूत उबो नगे आयो। १२अने
उके देखी के जकरियोह घबरायो अने
डर का मारे उबो को उबोज र्‌यो।
१३पण सरगदूत ने उकासे क्यो, "हे
जकरियाह डरे मती, क्योंके परमेसर
ने थारी पराथना सुणी ली हे; थारी
बइरा इलीसिबा से थारा सरु एक
बेटो पेदा होयगा अने तू उको नाम
योहन राखजे।" १४थारे आनन्द अने
खुसी रेगा, अने उका जनम से नरा
लोग आनन्द मनायेगा। १५† क्योंके
परभु की नगे माय उ म्हान रेगा। उ
दाखरस अने दारु नी प्येगा, उ अपणी
मेतारी की कोख सेज पवित्तर आतमा
से भर्‌यो होयो रेगा। १६उ इसराइल
जात का कुळ माय से नरा के उणका
परभु परमेसर आड़ी फेरी लायगा। १७†
अने उ परभु का अगड़े-अगड़े एलियाह
नबी की आतमा अने सामरत माय
हुई के चलेगा, के पूरखाहुंण का हिरदा
बाळ-बच्चाहुंण आड़ी फेरी दे अने हुकम
नी मानवा वाळाहुंण के असी समज
देगा के धरमिहुंण का जसा बिचार राखे
जेकासे के उ परभु सरु एक लायक
परजा तय्यार करे।"

---

[a] **१.५** हारुन; मूसा नबी को भई अने पेलो पुरोहित।

† **१.५:** १ इतयास २४.७-२४ † **१.१५:** गिणती ६.३ † **१.१७:** मलाकी ४.५–६

१८जकरियाह ने सरगदूत से पुछ्यो,
"हूं इके पक्की तरा से कसे जाणी सकूं?
क्योंके हूं तो डोकरो हुई ग्यो हूं अने
म्हारी घराळी बी डोकरी हुई गी।"
१९† सरगदूत ने जुवाब द्यो, हूं
जिबराइल हूं जो परमेसर का सामे उबो
रूं हूं। म्हारे इकासरु मोकल्यो के थार
से बातहुंण करूं, अने थारे यो सुब-
समिचार सुणउं। २०देख, जेना दन तक
ई बातहुंण पूरण नी हुई जाय तू गुंगो
रेगा अने बोली नी सकेगा, क्योंके तने
म्हारी बातहुंण पे जो ठीक बखत पे पूरण
होयगा बिसास नी कर्‌यो।"
२१उना बखत लोग जकरियाह
पुरोहित की बाट देखी र्‌या था, अने
उणके अचरज हुई र्‌यो थो के उके
मन्दर माय इतरी देर कायसरु लागी
री हे? २२पण जदे उ बायरे आयो तो
उणका से बोली नी सक्यो, अने वी
जाणी ग्या के उके मन्दर माय कईं
को दरसन मिळ्यो हे, क्योंके उ इसारो
करतो र्‌यो अने गुंगो बण्यो र्‌यो।
२३अने असो होयो के जदे उका
पुरोहितपणा की सेवा का दन पूरण
होया तो उ अपणा घरे अई ग्यो। २४इना
दनहुंण का बाद उकी घराळी इलीसिबा
भारीपग से हुई अने उने या कई के
खुद के पांच मइना तक छिपाड़ी राखी।
२५उने क्यो, "इना दनहुंण माय परभु
ने म्हार पे किरपा भरी नगे करिके,
मनखहुंण माय म्हारो लांछण मिटावा
सरुज, उने म्हारी बिणती सुणी।"

ईसु का जनम की भविसबाणी

२६इलीसिबा का छटवां मइना माय
परमेसर आड़ी से जिबराइल सरगदूत
गलील का नासरत नगर माय २७† एक
कुंवारी कने मोकल्यो, जेकी सगई यूसफ
नामका एक मनख से हुई थी जो दाऊद
का बंस को थो, अने उनी कुंवारी को
नाम मरियम थो। २८अने भित्तरे अई
के सरगदूत ने मरियम से क्यो, "हे
परभु की किरपा-पावा वाळी, परणाम!
परभु थारा गेले हे।" २९या बात सुणी
के मरियम घणी डरी गी अने वा सोंच-
बिचार माय पड़ी गी के यो कसतरा को
परणाम हे। ३०पण सरगदूत ने उकासे
क्यो, "हे मरियम, डरे मती! क्योंके थार
पे परमेसर की किरपा हुई हे। ३१† देख,
तू गरभ धारेगा अने एक बेटो जणेगा,
अने तू उको नाम ईसु राखजे ३२† उ
म्हान रेगा, अने परमपरधान को बेटो
केवायगा। परभु परमेसर उका पुरखा
दाऊद को राज ईसु के देगा। ३३अने उ
याकूब का घराणा पे हमेस्या तक राज
करेगा, अने उको राज कदी नी मिटेगा।"
३४मरियम ने सरगदूत से क्यो, "यो
कसे हुई सके, क्योंके हूं तो कुंवारीज[b]
हूं?"
३५सरगदूत ने उकासे क्यो, "पवित्तर
आतमा थार पे उतरेगा अने परमपरधान
की सामरत को छायळो थार पे रेगा।
इकासरु उ पवित्तर बाळक जो जनमेगा,
परमेसर को बेटो केवायगा। ३६देख, थारी

b **१.३४** कुंवारीज; बिना ब्याव करी, कइंका मनख के नी जाणूं।

† **१.१९:** दानियल ८.१६, ९.२१ † **१.२७:** मत्ती १.१८ † **१.३१:** मत्ती १.२१

† **१.३२–३३:** २ सेमुएल ७.१२, १३, १६; यसायाह ९.७

नातेदारनी इलीसिबा के बी इना बुड़ापा
माय एक बेटो होवा वाळो हे अने जो
बांझ केवाड़ी जाती थी यो उको छटवों
मइनो हे। [३७]† क्योंके परमेसर सरु कइंज
अबगो हयनी।"

३८मरियम ने क्यो "देख, हूं तो परभु
की दासी हूं। थारा बचन मुजबीज म्हारा
गेले होय।" अने सरगदूत उका कने से
चल्यो ग्यो।

मरियम अपणी नातेदारनी इलीसिबा कने

३९तो उणाज दनहुंण माय मरियम
उठी ने झट बळडा आळा परदेस माय
यहूदा का एक नगर आड़ी गी, [४०]अने
जकरियाह का घरे जई ने उने इलीसिबा
के परणाम कर्‍यो। [४१]असो होयो के
जसोज इलीसिबा ने मरियम को परणाम
सुण्यो असोज बाळक उकी कोख माय
जोर से उछळी पड़्यो अने इलीसिबा
पवित्तर आतमा से पूरण हुई। [४२]अने
उने उंची अवाज से हेला पाड़ी ने
क्यो, "तू सगळी नारीहुंण माय धन्य
हे, अने थारी कोख को फळ बी धन्य
हे! [४३]म्हार पे या किरपा कसे हुई के
म्हारा परभु की मेतारी म्हारा कने अई?
[४४]देख, जसाज थारा परणाम का सबद्
म्हारा कान माय पड़्या, बाळक म्हारी
कोख माय खुसी से उछळी पड़्यो।
[४५]धन्य हे वा नारी जेने बिसास कर्‍यो
के जो कंई परभु ने उकासे क्यो, उ
पूरण होयगा।"

मरियम ने परमेसर की म्हेमा को गीत गायो

४६† तो मरियम ने क्यो,
"म्हारी हिरदो परभु की बड़ई करे,
४७ अने म्हारो आतमा म्हारा उध्दार
करवा वाळा परमेसर माय खुस
हूं,
४८ † क्योंके उने अपणी दासी की
दीन-हीन दसा पे किरपा करी
हे।
इकासरु देखो, अबी से लई के
सगळा जुग की पीड़िहुंण म्हारे
धन्य केगा।
४९ क्योंके सगळा से सामरतवान ने
म्हारा सरु म्हान काम कर्‍या
हे,
अने उको नाम पवित्तर हे।
५० अने उकी दया पीड़ी दर पीड़ी
तक
उणका पे बणी रे हे जो उका से
डरे हे।
५१ उने अपणी भुजाबळ से सामरत का
काम कर्‍या हे
अने उणके खक्कळ-बक्कळ
करी लाख्या जो अपणा
हिरदा की भावनाहुंण माय
घमण्डी था।
५२ † उने राजाहुंण के सिंगासण से
पटकी लाख्या
अने गरीब-गुरबाहुंण के म्हान
करी लाख्या।

---

† **१.३७:** उत्पत्ती १८.१४ † **१.४६–५५:** १ सेमुएल २.१–१० † **१.४८:** १ सेमुएल १.११
† **१.५२:** अय्यूब ५.११, १२.१९

[५३] भूकाहुंण के तो उने अच्छी-भली
चीजहुंण से तिरप करी लाख्या
अने धणिहुंण के रित्ता हात हेड़ी
लाख्या।
[५४] जसा के उने हमारा पूरखाहुंण से
वायदो कर्‌यो
अने अई के अपणा सेवक
इसराइल की मदद करी।
[५५] [†]असोज उने रियाद करी ने अपणी
दया इबराइम
अने उका बंस से हमेस्या तक
करे हे!"

५६ गीत खतम करवा का बाद,
मरियम इलीसिबा का गेले तीन मइना
तक रई के अपणा घरे नासरत पाछी
अई।

जकरियाह बड़ई को गीत गावा लाग्यो

५७ जदे इलीसिबा के बाळक जणवा
का दन पूरण होया तो उने एक बाळक
जण्यो। [५८] उका पड़ोसी अने नातेदारहुंण
ने जदे यो सुण्यो के परभु ने उका पे
घणी किरपा करी हे तो उणने उका गेले
खुसी मनई।

५९ [†] असो होयो के वी मनख आठवां
दन बाळक को खतणो करावा आया
अने उका पिता का नाम पेज उको नाम
जकरियाह राखवा लाग्या। [६०] पण उकी
मेतारी ने क्यो, "नी! उको नाम योहन
राख्यो जायगा।"

६१ तो उणने उकासे क्यो, "तमारा
नातेदारहुंण माय से कइंका कोज यो
नाम हयनी!" [६२] उणने उका पिताजी से
इसारो करी ने पुछ्‌यो के "तू उको कंई
नाम राखणो चावे?"

६३ जकरियाह ने लिखवा की पट्‌टी
मंगाड़ी अने उका पे लिख्यो, "उको नाम
योहन हे।" अने सगळा के अचरज होयो।
[६४] झट उकी जीब की गठाण खुली गी
अने जीब से परमेसर की इसतुती, करतो
होयो बोलवा लाग्यो। [६५] इका पे अड़ोसी-
पड़ोसिहुंण डरवा लाग्या अने यहूदिया का
आखा बळडा परदेस माय इनी सगळी
बातहुंण की चरचा होवा लागी। [६६] जिणने
इनी सगळी बातहुंण के सुणी उण सगळा
ने अपणा-अपणा मन माय बिचारी ने
क्यो "यो बाळक कसो रेगा?" क्योंके
जरुरीज परभु को हात उका पे थो।

जकरियाह की भविसबाणी

६७ अने उको पिताजी जकरियाह
पवित्तर आतमा से भर्‌यो होयो, यो कई
के भविसबाणी करवा लाग्यो;
[६८] इसराइल को परभु परमेसर धन्य
होय!
उने हमारी सुद्द लई अने अपणा
लोगहुंण के छुड़ावा को काम
पूरण कर्‌यो हे।
[६९] अने हमारा सरु अपणा दास दाऊद
राजा[c] का कुळ माय
उध्दार को एक सींग हेड़्‌यो हे,
[७०] पुराणा काल से अपणो वायदो
पवित्तर नबिहुंण का मुन्डा से
केवाड़्‌यो थो।

---

[c] **१.६९** दाऊद राजा; इसराइलहुंण को पूराणो राजो अने ईसु को पुरखो।
[†] **१.५५:** उत्पत्ती १७.७ [†] **१.५९:** लेव्यव्यवस्था १२.३

७१ हमारा दुसमनहुंण से
अने हमार से बेर राखवा वाळाहुंण
से उने हमारो छुटकारो कर्‌यो
हे।
७२ हमारा पूरखाहुंण पे दया करे
अने अपणा पवित्तर करार के
रियाद करे,
७३ याने उ वायदो जो उने हमारा पिता
इबराइम से कर्‌यो थो, ७४के
हमारे यो केवा दे के,
हम अपणा दुसमनहुंण का
हातहुंण से छुटी के डर्‌या
बिना,
७५ अपणा जीवन भर पवित्तरता
अने धरम से उकी सेवा करां।

७६ † "अने तू हे बाळक परमपरधान
को नबी केवायगा क्योंके
तू परभु का अगड़े-अगड़े चली के,
उको मारग तय्यार करे हे।
७७ अने उका लोगहुंण के
उणका पापहुंण की मांफी की
वजासे उध्दार को ज्ञान देगा।
७८ हमारा परमेसर की घणी दया से
हमारा अदरे से सूरज,
याने मसीह को उजाळो चळकेगा,
७९ † याने उणका पे जो इन्दारा अने
मोत का छायळा माय बेठ्या हे,
के हमारा पगहुंण की अगवाणी
सांती का रस्ता पे करे।"
८०अने उ बाळक बड़तो अने आतमा
माय बळवन्त होतो अने इसराइल पे
परगटवा का दन तक सुनसान जगा पे
र्‌यो।

ईसु को जनम

(मत्ती १.१८-२५)

२ उणाज दनहुंण माय असो होयो
के औगुस्तुस केसर रोम का राजा
आड़ी से यो हुकम आयो के आखा जगत
का लोगहुंण के गिण्या जाय। २या पेली
जणगणना जदे हुई जदे क्विरिनियुस
सीरिया देस को राजपाल थो। ३सगळा
लोगहुंण नाम लिखाड़ने सरु अपणा-
अपणा नगर के जावा लाग्या।

बेतलहम गांम (LUK २.४)

४तो यूसफ बी इकासरु के उ दाऊद
का घराणा को थो, गलील का नासरत
नगर से यहूदिया माय दाऊद का नगर
बेतलहम ग्यो, ५के अपणी होवा वाळी
घराळी मरियम का गेले जो भारीपग से
थी नाम लिखाड़े। ६उणके बेतलहम रेता
होया मरियम के बाळक जणवा का दन
पूरण होया। ७अने उने अपणो पेलाखोळ
को बेटो जन्म्यो, उने उके लतरा माय
लपेटिने टोपला[d] माय धर्‌यो क्योंके

[d] **२.७** टोपला; जेका माय घांस या बेलहुंण के सरु खावा की चीजहुंण राखे हे।
† **१.७६:** मलाकी ३.१ † **१.७९:** यसायाह ९.२

उणका सरु धरम साळा माय जगा नी
थी।

ग्वाळाहुंण तापिर्‌या (LUK २.८)

ग्वाळाहुंण के सरगदूतहुंण को सुब-समिचार

८अने उना देस माय कितरा ग्वाळा
था जो रात का बखत मांळ माय
रई के अपणी गाडरहुंण का खाडु को
नेपो करी र्‌या था। [९]अने असमान से
परभु को एक सरगदूत उणका सामे
अई उबो, परभु को उजाळो उणका
ऐरे-मेरे चमक्यो अने वी घणा डरी
ग्या। [१०]तो सरगदूत ने उणकासे क्यो,
"घबराव मती, क्योंके देखो, हूं तमारे
बड़ो आनन्द को सुब-समिचार सुणउं
हूं जो सगळा मनखहुंण सरु रेगा।"
[११]क्योंके आज राजा दाऊद का नगर
माय तमारा सरु एक उध्दार करवा
वाळो जन्म्यो हे। अने योज मसीह[e]
परभु हे। [१२]अने तमारा सरु उको यो
सेलाणी हे, के तमारे एक बाळक लतरा
माय लपेट्‌यो अने टोपला माय लेट्‌यो
मिळेगा।"

१३तो एक दम से उना सरगदूत का
गेले सरगदूतहुंण को दळ परमेसर की
इसतुती करता होया अने यो केता
नगे आया।

[१४]के "असमान माय परमेसर की
म्हेमा अने
धरती पे मनखहुंण माय सांती रे
जिणकासे उ खुस हे।"

१५अने असो होयो के जदे सरगदूत
उणका कने से सरग चल्या ग्या तो
ग्वाळाहुंण माय-माय केवा लाग्या, "आव
चलां! हम सुदा बेतलहम जई ने इनी
बात के जो हुई अने जेके परभु ने हमारे
बतई, चली के देखां।"

१६वी झट जई ने मरियम अने
यूसफ कने पोंच्या अने उणने टोपला
माय उना बाळक के लेट्‌यो होयो
देख्यो। [१७]यो देखी के ग्वाळाहुंण ने
वा बात बतई, जो उना बाळक का
बारामें उणकासे सरगदूत ने कई थी।
[१८]अने सगळा मनख वी बात सुणी
के जो ग्वाळाहुंण ने उणकासे कई,
अचरज कर्‌यो। [१९]पण मरियम इनी
सगळी बातहुंण के अपणा हिरदा माय
राखी ने उणका पे बिचार करती री।
[२०]ग्वाळाहुंण, जसो उणकासे क्यो थो
सगळो कई वसोज सुण्यो अने देखी
के परमेसर की म्हेमा करता होया
पाछा चल्या ग्या।

---

[e] **२.११** मसीह; परमेसर आड़ी से अभिसेक कर्‌यो होयो, इसराइल जात अने सगळी मनख जात को उध्दार करवा वाळो।

ईसु को नाम राखणो

२१[†] आठ दन पूरण होवा पे जदे
बाळक को खतणा को बखत आयो तो
उको नाम ईसु राख्यो, याने उ नाम जो
उकी कोख माय आवा से पेलां सरगदूत
ने क्यो थो।

ईसु के मन्दर माय अरपण कर्‌यो जाणो

२२[†] मूसा का नेम-बिधान[f] मुजब जदे
उणका सुद्द होवा का दन पूरण होया तो
वी बाळक के यरुसलेम नगर ल्याया के
ईसु के परभु परमेसर के सामे अरपण
करे। २३[†] जसा के परमेसर से द्‌या ग्या
नेम-बिधान माय लिख्यो: "हरेक पेलांपेल
को बेटो परभु सरु पवित्तर केवायगा।"
२४अने परमेसर से द्‌या ग्या नेम-बिधान
का मुजब, "एक जोड़ो पंडुक या कबुतर
का दो बच्चा लई के बली चड़ाय।"
२५अने देखो, यरुसलेम माय सिमियोन
नामको एक मनख थो जो धरमी अने
भगत थो। उ इसराइल का सुक-चेन की
बाट जोई र्‌यो थो अने पवित्तर आतमा
उका पे थो। २६अने पवित्तर आतमा ने
उका पे यो परगट्‌यो थो के जदत्तक तू
परभु का मसीह के देखी नी लेगा तदत्तक
मरेगा हयनी। २७उ पवित्तर आतमा का
केणा से मन्दर माय आयो, अने जदे
ईसु का मां-बाप परमेसर से द्‌यो नेम-
बिधान पूरण करवा सरु बाळक ईसु के
मन्दर माय लाया, २८तो सिमियोन ने
बाळक के खोळा माय लई ने परमेसर
की इसतुती करतो होयो केवा लाग्यो,

२९ "हे मालेख, अबे तू अपणा बचन
का मुजब
अपणा सेवक के सांती से बिदा
होवा दे,
३० क्योंके म्हारी आंखहुंण ने थारो
उध्दार देखी ल्यो हे।
३१ जेके तने सगळी जातहुंण का
लोगहुंण का सामे तय्यार
कर्‌यो हे;
३२ [†]के उ गेर यहूदिहुंण सरु परकास
देवा वाळो उजाळो
अने थारी नीजी परजा इसराइल
सरु म्हेमा होय।"

३३ईसु का बारामें की जावा वाळी
बातहुंण से उका मां-बाप के अचरज
होयो। ३४सिमियोन ने उणके आसीस
दई के ईसु की मेतारी मरियम से क्यो,
"देख, तो यो बाळक इसराइल माय नरा
के गिरवा अने जी उठवा को कारण
बणेगा, अने असी सेलाणी होवा सरु
ठेराड़्यो हे, जेको बिरोद कर्‌यो जायगा -
३५जेकासे के नरा का हिरदा का बिचार
परगट हुई जाय। अने तरवार थाराज
पराण के बेदेगा।"
३६हन्ना नाम की एक भविसबाणी
करवा वाळी नबिया थी जो असेर-गोत,
फनूएल की बेटी थी। वा घणी डोकरी
हुई गी थी। अने ब्याव करवा का बाद
सात बरस तक अपणा धणी का गेले

---

[f] २.२२ मूसा का नेम-बिधान; नरा बखत पेलां मूसा नबी आड़ी से परमेसर ने अपणे नेम माय पेलांपेल का बाळक का बारामें बताड़ी द्‌यो थो।

[†] **२.२१:** लेव्यव्यवस्था १२.३; लूका १.३१ [†] **२.२२–२४:** लेव्यव्यवस्था १२.६–८

[†] **२.२३:** लेव्यव्यवस्था १२.६-८; निरगमन १३.२ [†] **२.३२:** यसायाह ४२.६, ४९.६, ५२.१०

री थी, [३७]तो वा चोरासी बरस की उमर
तक रांडी री।[g]अने वा मन्दर के कदी
नी छोड़ती थी, पण रात दन बरत अने
बिणती करिके सेवा माय लागी रेती थी।
[३८]उनीज घड़ी वा वां अई के परमेसर के
धन्यबाद देवा लागी, अने उना सगळा
से बाळक का बारामें बात करवा लागी
जो यरुसलेम का छुटकारा की बाट जोई
र्‌या था।

पाछो नासरत आणो

३९[†] जदे वी परमेसर से द्‌यो नेम-
बिधान का मुजब सगळो कंई पूरण
करी चुक्या, तो अपणा नगर गलील
का नासरत गांम माय पाछा अई ग्या।
[४०]अने बाळक बड़तो, बळवन्त होतो अने
ज्ञान से पूरण होतो अने परमेसर की
किरपा उका पे थी।

बाळक ईसु मन्दर माय

४१[†] ईसु का मां-बाप हर बरस फसह
का परब[h] पे यरुसलेम नगर जाया करता
था। [४२]जदे ईसु बारा बरस को होयो
तो वी परब की परथा मुजब यरुसलेम
ग्या। [४३]उना दनहुंण के पूरण करिके
जदे वी पाछा अई र्‌या था। तो बाळक
ईसु यरुसलेम मेंज रई ग्यो अने मां-
बाप इनी बात से अण्जाण्या था। [४४]वी
या समजी के के उ जातरिहुंण का दळ
का गेले होयगा एक दन का पड़ाव तक
निकळी ग्या अने उके अपणा नातेदारहुंण
अने मिळवा वाळाहुंण माय ढुंडवा लाग्या।
[४५]अने उके नी पई के वी ढुंडता होया
यरुसलेम पाछा आया, [४६]अने असो होयो
के तीन दन पाछे उणने उके मन्दर माय
ज्ञानिहुंण का माय बेठ्यो, उणकी बातहुंण
सुणतो अने उणकासे सवाल करतो पायो।
[४७]अने सगळा मनख जो उकी सुणी र्‌या
था उकी समज अने उका जुवाबहुंण सुणी
के दंग रई ग्या। [४८]अने जदे उणने उके
वां देख्यो तो चकित होया अने उकी
मेतारी ने उकासे क्यो, "बेटा, तने हमारा
साते असो बरताव कायसरु कर्‌यो? देख,
थारा पिताजी अने हूं बेचेन हुई के थारे
ढुंडता र्‌या था।
४९ईसु ने उणकासे क्यो, "तम म्हारे
कायसरु ढुंडी र्‌या था? कंई तम नी
जाणता था के म्हारे म्हारा परमेसर पिता
का घर माय[i] होणो जरुरी हे?" [५०]पण
उने जो बात उणकासे कई वी उके समजी
नी सक्या।
५१जदे उ उणका गेले नासरत गांम
चल्यो आयो अने उणका बस माय र्‌यो
पण उकी मेतारी ने ई सगळी बातहुंण
अपणा मन माय राखी। [५२][†] ईसु बुध्दि
डील-डोल अने परमेसर अने मनखहुंण
की किरपा माय बड़तो ग्यो।

योहन बपतिसमा देवा वाळा को संदेसो

(मत्ती ३.१-१२; मरकुस १.१-८; योहन १.१९-२८)

३ रोम का तिबिरियुस केसर राजा का
राजकाल का पन्दरवां बरस माय,

---

[g] **२.३६–३७** वा चोरासी बरस की उमर तक रांडी री; या वा ८४ से रांडी हुई चुकी थी।
[h] **२.४१** फसह का परब; सबद् भण्डार माय देखो। [i] **२.४९** घर माय; या बातहुंण माय।
[†] **२.३९:** मत्ती २.२३ [†] **२.४१:** निरगमन १२.१–२७; नेम-बिधान १६.१–८
[†] **२.५२:** १ सेमुएल २.२६; नीतिबचन ३.४

जदे पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया इलाका
को राजपाल थो। अने देस का चार
हिस्सा का सासकहुंण माय से हेरोदेस
गलील को सासक थो, अने उको भई
फिलिप्पुस इतूरेया अने त्रखोनीतिस को
सासक थो, अने लिसानियास अबिलेने
देस को सासक थो। २अने जदे यरुसलेम
माय हन्ना अने काइफा म्हापुरोहित का
पद पे था, तो परमेसर को बचन मांळ
माय जकरियाह पुरोहित का बेटा योहन
कने पोंच्यो। ३योहन यरदन नद्दी का ऐरे-
मेरे का सगळा इलाकाहुंण माय जई के
पापहुंण की मांफी सरु मन बदळवा का
बपतिसमा को परचार करवा लाग्यो।

४† वसोज परचार कर्‌यो जसा की
यसायाह नबी का बचनहुंण की
पोथी माय पेलांसेज लिख्यो हे:
"मांळ माय एक हेला पाड़वा वाळा
की बाणी के हे,
'परभु को मारग तय्यार करो,
अने उकी सड़कहुंण सुदी करो।
५ हरेक घाटी पाटी जायगी,
अने हर बळडा अने बळडी बराबर
कर्‌या जायगा,
अने बांका-चुका रस्ता सुदा
अने उब्बट-खाबड़ बराबर कर्‌या
जायगा।
६† जदे सगळा जीव परमेसर का
उध्दार के देखेगा।' "

७† इकासरु उनी भीड़ से जो उका
कने बपतिसमो लेवा चली अइरी थी,
केवा लाग्यो, "हे सरप का कणाहुंण!
परमेसर आड़ी से आवा वाळा परकोप
से भागवा सरु, केने तमारे चेताड़्यो?
८† मन बदळवा सरीका फळ लाव। अने
अपणा मन माय यो मती बिचारो के,
'क्योंके इबराइम हमारो पिता हे!' पण हूं
तमार से कूं के परमेसर इना भाटाहुंण
से इबराइम सरु ओलाद पेदा करी सके
हे। ९† तम असा हो जसा के कुराड़ो
झाड़काहुंण की जड़ पे धर्‌यो होयो हे,
इकासरु हरेक झाड़ जो अच्छो फळ नी
लावे, काट्‌यो अने लाय माय झोंक्यो
जाय हे।

१०जदे भीड़ ने उकासे पुछ्‌यो, "तो हम
कंई करां?"

११योहन ने उणके जुवाब द्‌यो, "जेका
कने दो कमीज रे, उ उणका गेले बांटी
ले जिणका कने कइंज हयनी, अने जेका
कने जिमवा को रे उ बी असोज करे।"

१२† थोड़ाक रोमी राज का कर वसुळवा
वाळा बी बपतिसमो लेवा आया, अने
उणने उकासे पुछ्‌यो, "हे गरु, हम कंई
करां?"

१३अने उने उणकासे क्यो, "जितरो
लेवा को हुकम तमारे द्‌यो हे उकासे बत्ती
मती लीजो।"

१४अने थोड़ाक सिपईहुंण ने उकासे
सवाल कर्‌यो, "अने हमारो कंई, हम
कंई करां?"

उने उणकासे क्यो, "कइंका के डरई-
धमकई ने पइसा मती लो अने नीज
कइंका पे झुंटो दोष लगाव, पण अपणी
पगार मायज पूरो पाड़ो।"

---

† **३.४–६:** यसायाह ४०.३–५ † **३.६:** यसायाह ४०.३-५ † **३.७:** मत्ती १२.३४, २३.३३
† **३.८:** योहन ८.३३ † **३.९:** मत्ती ७.१९ † **३.१२:** लूका ७.२९

१५जदके लोग आस लगाड़्या होया था,
अने वी योहन का बारामें अपणा-अपणा
मन माय तरक-बितरक करी र्‌या था के
कंई यो तो मसीह हयनी, १६तो योहन ने
उना सगळा से क्यो, "हूं तो तमारे पाणी
से बपतिसमो दउं, पण उ जो म्हार से
घणो सामरती हे, अई र्‌यो हे। अने हूं तो
इका लायक बी नी के उकी पन्नी उठई
सकूं। उज तमारे पवित्तर आतमा अने
लाय से बपतिसमो करेगा। १७अने तम
असा हो जसा गंउ अने सुक्लो क्योंके
उको सुपड़ो उका हात माय हे के उ
अपणा खळा के सोरे अने गंउ के अपणा
कोठा माय भेळा करे, पण उ सुक्ला के
नी बुजवा वाळी लाय माय बाळेगा।"
१८अने नरी दूसरी बातहुंण के समजावा
का मिसे उ उणके सुब-समिचार सुणातो
र्‌यो। १९[†] पण जदे उने देस का चोथा
हिस्सा का सासक हेरोदेस के उका भई
फिलिप्पुस की बइरा हेरोदियास अने उना
सगळा कुकरम का बारामें जो उने कर्‌या
था फटकार्‌यो, २०तो उने उना सगळा
कुकरम का गेले यो कुकरम बी जोड़ी
ल्यो के योहन के जेळखाना माय लाखी
द्‌यो।

ईसु को बपतिसमो

(मत्ती ३.१३-१७; मरकुस १.९-११)

२१असो होयो के जदे सगळा मनखहुंण
ने बपतिसमो ल्यो तो ईसु ने बी
बपतिसमो ल्यो। जदे ईसु पराथना करी
र्‌यो थो तो असमान खुल्यो। २२[†] तो
पवित्तर आतमा कबुतर की कायारुप माय
उका पे उतर्‌यो अने या अकासबाणी हुई,
"तू म्हारो परमिलो बेटो हे, हूं थार से
घणो खुस हूं।"

ईसु की बंसाबली

(मत्ती १.१-१७)

२३जदे ईसु ने अपणी सेवा सुरु करी
तो उ करीब तीस बरस को थो अने असो
समज्यो जातो थो उ यूसफ को बेटो
थो, जो एली को, २४जो मत्तात को, जो
लेवी को, जो मलकी को, जो यन्ना को,
जो यूसफ को २५जो मत्तित्याह को, जो
आमोस को, जो नहूम को, जो असल्याह
को, जो नोगह को २६जो मात को, जो
मत्तित्याह को जो सिमी को, जो योसेख
को, जो योदाह को २७जो योअनन को,
जो रेसा को, जो जरुब्बाबिल को, जो
सालतिएल को जो नेरी को २८जो मलकी
को, जो अद्दी को, जो कोसाम को, जो
इलमोदाम को, जो एर को, २९जो येसु
को जो एलीयाजर को, जो योरीम को,
जो मत्तात को, जो लेवी को, ३०जो समोन
को, जो यहूदा को, जो यूसफ को, जो
योनान को, जो एलियाकीम को, ३१जो
मलेआह को, जो मिन्नाह को, जो मत्तात
को, जो नातान को, जो दाऊद को, ३२जो
यिसे को, जो ओबेद को, जो बोअज को,
जो सलमोन को जो नहसोन को, ३३जो
अम्मीनादाब को, जो अदमीन को, जो
अरनी को, हिस्रोन को, जो फिरिस को,
जो यहूदा को ३४जो याकूब जो इसाक

[†] **३.१९–२०:** मत्ती १४.३–४; मरकुस ६.१७–१८

[†] **३.२२:** उत्पत्ती २२.२; भजन संहिता २.७; यसायाह ४२.१; मत्ती ३.१७; मरकुस १.११; लूका ९.३५

को, जो इबराइम को, जो तिरह को, जो
नाहोर को, ३५जो सरूग को, जो रऊ को,
जो फिलिग को, जो एबिर को, जो सेलाह
को ३६जो केनान को, जो अरफक्षद को,
जो सेम को, जो नूह को, जो लिमिक को
३७जो मथूसिलह को, जो हनोक को, जो
यिरिद को, जो महललेल को, जो केनान
को, ३८जो एनोस को, जो सेत को, जो
आदम को अने जो परमेसर को बेटो थो।

ईसु की अजमाइस

(मती ४.१-११; मरकुस १.१२-१३)

४ ईसु पवित्तर आतमा से भर्यो होयो
यरदन नद्दी से आयो अने आतमा
उके मांळ माय अंई-वंई लई जातो
र्यो। २वां चाळीस दन तक सेतान उके
अजमातो र्यो, उना दनहुंण माय उने
कइंज नी खायो जदे ई दन बित्या तो
उके भूक लागी।
३तो सेतान ने उकासे क्यो, "अगर तू
परमेसर को बेटो हे तो इना भाटा से
कइदे के रोटो बणी जाय।"
४† ईसु ने उके जुवाब द्यो, "परमेसर
का नेम-बिधान माय यो लिख्यो हे,
'मनख सिरप रोटा सेज नी जिन्दो रेगा।'
"
५तो सेतान ने उके अदरे लइ-जई
के पलक झपके इतराक मेंज जग को
सगळो राज अने उकी म्हानता दिखाड़ी।
६अने ईसु से क्यो, "यो सगळो हक अने
इको वेभव हूं थारे दई दूंवां, क्योंके यो
म्हारे द्यो हे, अने हूं जेके चउं उके दउं।"
७इकासरु अगर तू म्हारे सास्टांग परणाम
करे तो यो सगळो थारो हुई जायगा।"
८† ईसु ने उके जुवाब द्यो, "परमेसर
का बचन माय लिख्यो हे, 'तू परभु
अपणा परमेसर के सास्टांग परणाम कर
अने सिरप उकीज उपासणा करजे।' "
९जदे उने ईसु के यरुसलेम नगर लइ-
जई के उके मन्दर की सगळा से उंची
जगा पे उबो कर्यो अने उकासे क्यो,
"अगर तू परमेसर को बेटो हे तो खुदज
यां से कुदी जा, १०† क्योंके परमेसर
का बचन माय लिख्यो हे, 'परमेसर
सरगदूतहुंण के थारा बारामें यो हुकम
देगा के वी थारी रक्सा करे,' ११† अने,
'वी थारे झट अपणा हातहुंण माय झेली
लेगा, असो नी होय के थारा पग माय
भाटा से ठेस लागे।' "
१२† ईसु ने उकासे क्यो, "परमेसर
का बचन माय क्यो हे 'तू परभु अपणा
परमेसर के अजमाजे मती।' "
१३जदे सेतान उकी सगळी अजमाइस
करी चुक्यो तो थोड़ाक बखत सरु उका
कने से चल्यो ग्यो।

ईसु ने गलील से काम सुरु कर्यो

(मती ४.१२-१७; मरकुस १.१४-१५)

१४तो ईसु आतमा की सामरत से भर्यो
होयो गलील इलाका माय पाछो आयो तो
आस-पड़ोस का इलाका माय उकी चरचा
फेली गी। १५उ उणका पराथनाघर माय
जई के परबचन देवा लाग्यो, अने सगळा
मनख उकी बड़ई करता था।

---

† **४.४:** नेम-बिधान ८.३ † **४.८:** नेम-बिधान ६.१३ † **४.१०:** भजन संहिता ९१.११
† **४.११:** भजन संहिता ९१.१२ † **४.१२:** नेम-बिधान ६.१६

ईसु के नासरत का लोगहुंण ने नकार्‍यो

(मती १३.५३-५८; मरकुस ६-१-६)

१६फेर उ नासरत आयो जां उके
पाळयो पोंस्यो थो अने अपणी रीति
मुजब सबत् का दन[j] पराथनाघर
माय जई के पोथी बांचवा सरु उबो
होयो। १७अने उके जूना नबी यसायाह
भविसबाणी करवा वाळा की पोथी दई
गी। उने पोथी खोली के वा जगा हेड़ी
जां लिख्यो थो,

१८ † "परभु को आतमो म्हार पे हे,
क्योंके उने गरीबहुंण के सुब-
समिचार सुणावा सरु म्हारे
छांट्यो हे।
उने म्हारे मोकल्यो के हूं बन्दिहुंण
के छुड़ावा की
अने आंदाहुंण के आंख पावा को
समिचार दउं
अने दब्या होया के उठउं,
१९ † अने परभु की किरपा का बखत
की डुण्डी पिटूं,
जदे के परभु अपणा लोगहुंण के
बचाड़ेगा।"

२०जदे उने पोथी बन्द करी ने सेवक
का हात माय दई दी अने बेठी ग्यो।[k]
पराथनाघर का सगळा मनखहुंण की नगे
उका पे टिकी थी २१तो उ उणकासे केवा
लाग्यो, "आज यो लिख्यो तमारा सुणता
होया पूरण होयो।"

२२सगळा मनखहुंण ने उकी बड़ई करी
अने उका मुन्डा से किरपा का जो बचन
हिटी र्‍या था उणका पे अचरज कर्‍यो
अने केवा लाग्या, "कंई यो यूसफ को
बेटो हयनी?"

२३उने उणकासे क्यो, "बेसक तम
म्हारा बारामें यो केवाड़ो कोगा: 'हे बेद,
खुद केज नज कर! जो कंई हमने सुण्यो
के कफरनहूम नगर माय कर्‍यो, उ यां
अपणा नगर मायज कर।' " २४ † उने
क्यो, "हूं तमारे सांची कूं के कइंकोज
भविसबाणी करवा वाळो अपणा नगर
माय मान नी पाय।

२५ † "पण हूं तमार से खास बात कूं
के जूना नबी एलियाह का दनहुंण माय
जदे साड़ा तीन बरस सुको पड़्यो अने
आखा देस माय घोर बिखो पड़्यो तो
इसराइल देस माय नरी रांडिहुंण थी। २६ †
पण सेदा देस का सारपत नगर की रांडी
बइरा का अलावा एलियाह के कइंका हजु
कने परमेसर ने नी मोकल्यो। २७ † अने
एलीसा नबी का दनहुंण माय इसराइल
माय नरा कोड़्या था पण सीरिया
देसवासी नामान का अलावा कई को हजु
सुद्द नी कर्‍यो थो।"

२८जदे पराथनाघर का मनखहुंण ने
ई बातहुंण सुणी तो वी रीस माय अई
ग्या, २९अने उणने उठी के उके नगर
का बायरे हेड़ी लाख्यो। जेनी बळडी पे
उणको नगर बस्यो थो, उकी चोंटी पे

---

[j] **४.१६** सबत् का दन; यहूदिहुंण को पवित्तर छुट्टी को दन सुक्करवार से थावर की सांज तक। इना दन माय कइंज नी करे सिरप पराथना घर माय जई के अराधना-उपासणा करे। [k] **४.२०** बेठी ग्यो; लोग उबा हुई के धरम सासत्तर माय से बांचे हे पण लोगहुंण के सीखाड़वा सरु ईसु बेठी ग्यो।

† **४.१८–१९:** यसायाह ६१.१–२ † **४.१९:** यसायाह ६१.१-२ † **४.२४:** योहन ४.४४

† **४.२५:** १ राजा १७.१ † **४.२६:** १ राजा १७.८-१६ † **४.२७:** २ राजा ५.१-१४

लई ग्या के वां से उके निच्चे धक्को
दई दे। ३०पण उ उणका माय से निकळी
के चल्यो ग्यो।

बायरबादा के हेड़णो

(मरकुस १.२१-२८)

३१अने उ गलील का निच्चे का एक
कफरनहूम सेर-गांम माय आयो अने
सबत् का दनहुंण माय लोगहुंण के
परबचन देतो थो। ३२[†] लोग उकी सीख
से अचरज करता था क्योंके उ हक से
परबचन देतो थो। ३३पराथनाघर माय
एक मनख थो जेका माय बायरबादा[l]
समई थी। उ घणी जोर से चिल्लाड़्यो,
३४"हे नासरत का ईसु! हमारे थार
से कंई काम? कंई तू हमारे नास
करवा आयो? हूं जाणूं के तू कुंण
हे - परमेसर आड़ी से आवा वाळो
पवित्तर जणो!"
३५ईसु ने या कई के उके डांट्यो,
"छानो रे! उका माय से हिटी जा!" तो
बायरबादा से भर्या मनख के अदाड़ माय
पटकी ने बिना नुकस्यान के बायरबादा
उका माय से हिटी गी।
३६इका पे सगळा मनख चकित होया
अने माय-माय बातहुंण करी ने केवा
लाग्या, "यो कसो बचन हे? क्योंके उ
हक अने सामरत से बायरबादाहुंण के
हुकम दे हे, अने वी हिटी जाय हे।"
३७अने आस-पड़ोस का इलाका माय हर
जगा पे उकी चरचा फेलती गी।

ईसु ने नरा लोगहुंण के नज कर्या

(मत्ती ८.१४-१७; मरकुस १.२९-३४)

३८फेर उ उठ्यो अने पराथनाघर से
हिटी के सिमोन का घरे ग्यो, वां सिमोन
की सासु घणा बुखार माय पड़ी थी अने
चेलाहुंण ने सासु सरु ईसु से बिणती
करी। ३९ईसु ने उका कने उबो हुई ने
बुखार के डांट्यो अने बुखार उतरी ग्यो
अने वा उनीज घड़ी उठी के सेवा-चाकरी
माय लागी गी।
४०जदे दन अथणवा लाग्यो[m] तो वी
सगळा जिणका यां नरी-तरा का रोग
से रोगिहुंण बेमार था, उणके उका
कने लाया अने उने हरेक पे हात धरी
के नज करी लाख्या। ४१बायरबादाहुंण
बी नरा मनखहुंण माय से चिल्लाड़ी
अने या केती हिटी गी, "तू परमेसर
को बेटो हे!"
पण उ उणके डांटतो अने बोलवा नी
देतो थो, क्योंके वी जाणती थी के उ
मसीह हे।

ईसु पराथनाघरहुंण माय

(मरकुस १.३५-३९)

४२जदे दन हिट्यो तो उ निकळी
के सुणी जगा माय चल्यो ग्यो। पण
मनख को झुंड उके ढुंडतो होयो उका
कने पोंच्यो उणने यो चायो के उ
उणका कने से नी जाय। ४३पण उने
उणकासे क्यो, "म्हारे दूसरा नगरहुंण

---

[l] **४.३३** बायरबादा; बुरी आतमा। [m] **४.४०** जदे दन अथणवा लाग्यो; सबत् का दन को आखरी बखत।

[†] **४.३२:** मत्ती ७.२८–२९

माय बी परमेसर का राज[n] को सुब-
समिचार सुणाणो जरुरी हे, क्योंके हूं
इनाज काम सरु परमेसर आड़ी से
मोकल्यो हूं।"
४४अने उ यहूदिहुंण का इलाका का
पराथनाघरहुंण माय परचार करतो र्‌यो।

पेलांपेल चेलाहुंण के तेड़्यो जाणो

(मत्ती ४.१८-२२; मरकुस १.१६-२०)

५ [†] एक बखत, जदके भीड़ ईसु के
चारी-मेर से घेरी के परमेसर को
बचन सुणी री थी, उ गन्नेसरत का
सरवर कराड़ा पे उब्यो होयो थो। २उके
सरवर कराड़े लागी हुई दो नावहुंण नगे
अई, पण भोईहुंण उणका माय से उतरी
के अपणा-अपणा जाळ धोई र्‌या था। ३उ
उणका माय की एक नाव पे चड़ी ग्यो
जो सिमोन की थी अने उने उकासे क्यो,
"नाव के कराड़ा से रजिक दूरो सरकई
ले।" अने उ नाव पे बेठिके भीड़ के
परबचन देवा लाग्यो।
४ईसु ने परबचन खतम करवा का बाद
सिमोन से क्यो, "नाव के उन्डा पाणी
माय लई चल अने मच्छी पकड़वा सरु
अपणो जाळ लाखो।"
५[†] सिमोन ने उके जुवाब द्‌यो, "हे
मालेख हमने आखी रात घणी म्हेनत
करी, पण कइंज हात नी लाग्यो। फेर
बी थारा केणा पे हूं जाळ लाखुंवां।"
६[†] जदे उने असो कर्‌यो तो नरी
मच्छीहुंण घेरी लाया अने उणका जाळ
फाटवा लाग्या। ७इका पे उणने अपणा
सातिहुंण के जो दूसरी नाव पे था
इसारो कर्‌यो के अई के हमारी मदद
करो। अने उणने अई के दोइज नावहुंण
के यां तक भरी लाखी के वी डुबवा
लागी। ८पण जदे सिमोन पतरस ने
यो देख्यो तो ईसु का पगहुंण पे यो
केतो होयो पड़ी ग्यो, "हे परभु, म्हारा
कने से चल्यो जा क्योंके म्हने थारी
बात पे बिसास नी कर्‌यो इकासरु हूं
पापी मनख हूं।"
९क्योंके इतरी मच्छीहुंण घेरी लाणे
से उके अने उका सातिहुंण के अचरज

मच्छीहुंण से भरी जाळ (LUK ५.७)

[n] **४.४३** परमेसर का राज; ईसु की सीख की खास बात या थी के परमेसर एक राजा को जसो आखा जगत पे राज करे हे। जो उका नेम-बिधान के माने वी आसीस पाय। ईसु ने खुद अपणा जीवन से एक अच्छी मिसाल दई परमेसर का राज का नेम-बिधान को हुकम मानी के, जेने परमेसर से म्हेमा बी पई।

[†] **५.१–३:** मत्ती १३.१–२; मरकुस ३.९–१०, ४.१ [†] **५.५:** योहन २१.३ [†] **५.६:** योहन २१.६

होयो। [१०]असोज जब्दी का बेटा याकूब
अने योहन बी जो सिमोन का बांटेदार
था अचरज होयो।
पण ईसु ने सिमोन से क्यो, "मती
डर! अबे से तू मनखहुंण के परमेसर
कने लायगा।" [११]जदे वी अपणी नावहुंण
के कराड़ा पे लाया तो सगळो कंई वांज
छोड़ी के उका पाछे चली पड़्या।

कोड़्या के सुद्द कर्यो जाणो

(मती ८.१-४; मरकुस १.४०-४५)

१२असो होयो के जदे उ कइंका नगर
माय थो तो देखो, वां एक कोड़्यो मनख
थो। जदे उने ईसु के देख्यो तो सास्टांग
परणाम करिके बिणती करवा लाग्यो, "हे
परभु, अगर तू चावे तो म्हारे सुद्द करी
सके[o]।"
१३ईसु ने अपणो हात अगड़े कर्यो
अने उकासे चोंटई के क्यो, "हूं चउं;
जा, तू सुद्द हुई जा।" अने झट उ
कोड़्यो सुद्द हुई ग्यो। [१४][†] उने उके
हुकम द्यो, "कइंका से मती किजे,
पण जई के अपणे खुद के पुरोहित
के दिखाड़। अने अपणा सुद्द होवा
का बारामें जसो मूसा ने हुकम द्यो
हे, चड़ावो चड़ा इका से पुरोहित अने
लोगहुंण पे गवई रेगा।"
१५पण उकी चरचा दूर-दूर तक
फेलती जई री थी, अने बड़ीमेक भीड़
उकी सुणवा अने अपणी बेमारिहुंण से
नज होवा सरु भेळी हुइरी थी। [१६]पण
उ खुद अकसर सुनी जगा माय छाने-
छाने जई के पराथना कर्या करतो थो।

'मनख का बेटा के' पाप मांफ अने नज करवा को हक

(मती ९.१-८; मरकुस २.१-१२)

१७एक दन की बात हे के उ परबचन
दई र्यो थो, अने थोड़ाक फरीसी अने
नेम-बिधान का गरु[p] वां बेठ्या था जो
गलील अने यहूदिया का हरेक गांम अने
यरुसलेम नगर से आया था। अने नज
करवा सरु परभु परमेसर की सामरत
उका गेले थी। [१८]अने देखो, लकवा का
मार्या एक मनख के खाट पे थोड़ाक
मनख उठई के लई र्या था। वी उके
भित्तरे लई के ईसु का सामे राखवा को
जतन करी र्या था। [१९]भीड़ की वजासे
उके भित्तरे लावा को जदे कईं को उपाव
नी सुज्यो तो उणने घर अदरे चड़िने
खापराहुंण हेड़ी के खाट सुदा उके बीच
माय ईसु का नठू सामे उतारी द्यो।
[२०]उणको बिसास देखी ने उने क्यो,
"दोस,[q] म्हने थारा पाप मांफ कर्या।"
२१जदे सासतरी अने फरीसी तरक-
बितरक करिके केवा लाग्या, "यो मनख
कुंण हे जो परमेसर की बुरई करे?
परमेसर के छोड़ी के हजु कुंण पापहुंण
के मांफ करी सके?"
२२पण ईसु ने उणका तरक-बितरक
भांपी के जुवाब द्यो, "तम अपणा
हिरदाहुंण माय कंई तरक-बितरक करी

---

[o] **५.१२** म्हारे सुद्द करी सके; इनी (कोड़) व्यादी से जो मनख हे उके सासत्तर का मुताबिक असुद्द मान्यो जातो थो। [p] **५.१७** नेम-बिधान का गरु; या सास्त्रीहुंण। [q] **५.२०** दोस; यूनानी माय, मनख।

[†] **५.१४:** नेम-बिधान १४.१-३२

र्‍या हो? २३कंई सबगो हे? यो केणो के
'थारा पाप मांफ होया' या यो के 'उठ्या
अने चल्यो-फर'? २४पण इकासरु के तम
जाणी जाव के हूं मनख का बेटा[r] के
धरती पे पाप मांफ करवा को हक हे।"
उने लकवा का मार्‍या से क्यो, "हूं थार
से कूं, उठ्या, अने अपणी खाट उठई ने
घरे चल्यो जा।"
२५उ उनीज बखत उणका सामे उबो
होयो, अने जेनी खाट पे उ पड़्यो होयो
थो उके उठई के परमेसर की बड़ई करतो
होयो घरे चल्यो ग्यो। २६वी सगळा का
सगळा अचरज माय पड़ी के परमेसर
की बड़ई करवा अने घणा डरी के केवा
लाग्या, "आज हमने अनोखी बातहुंण
देखी हे!"

लेवी के तेड़्यो जाणो

(मत्ती ९.९–१३; मरकुस २.१३–१७)

२७इका बाद उ बायरे ग्यो अने लेवी
नामको एक नाको वसुळवा वाळा के उने
नाका पे बेठ्यो देख्यो अने उने उकासे
क्यो, "म्हारा पाछे हुई जा।" २८इका पे उ
सगळो कंई छोड़ी के उठ्यो अने ईसु का
पाछे चली पड़्यो।
२९तो लेवी ने अपणा घरे उणका सरु
एक बड़ो भोज कर्‍यो अने वां नाका
वसुळवा वाळा अने दूसरा लोगहुंण के जो
उका गेले जिमवा बेठ्या था, एक बड़ीमेक
भीड़ थी। ३०[†] इका पे फरीसी अने उणका
सासतरी ईसु का चेलाहुंण से यो कई के
कुड़वा लाग्या, "तम कर वसुळवा वाळा
अने पापिहुंण का गेले कायसरु खाव-प्यो
हो?"
३१ईसु ने जुवाब द्‍यो, "अच्छा-
माठाहुंण के बेद की जरुवत हयनी पण
बेमारहुंण के हे।" ३२हूं धरमिहुंण के नी
पण पापिहुंण के मन बदळवा सरु तेड़वा
आयो हूं।"

ईसु की बरत का बारामें सीख

(मत्ती ९.१४-१७; मरकुस २.१८-२२)

३३लोगहुंण ने उकासे क्यो, "योहन का
चेला अकसर बरत राखे अने पराथना
कर्‍या करे, अने फरीसिहुंण का चेला बी
असोज करे, पण थारा चेलाहुंण तो सदा
खावे-पीवे हे।"
३४ईसु ने उणकासे क्यो, "जदत्तक लाड़ो
उणका गेले हे, कंई तम उका बरात्याहुंण
से बरत करवई सको हो? ३५पण वी
दन आयगा जदे लाड़ो उणकासे इकाड़ी
कर्‍यो जायगा। तो उना दनहुंण वी बरत
राखेगा।"
३६उने उणका से मिसाल माय क्यो:
"कइंको मनख नवा लतरा माय से बटको
फाड़ी ने जूना लतरा माय थेगळो नी
लगावे, नी तो नवो तो फाटेगाज पण जूना
लतरा पे नवो बटको जंचेगाज नी। ३७अने
कईं को नवो दाखरस जूनी मसख माय
नी भरे, नी तो नवो दाखरस मसखहुंण
फाड़ी के बइ जायगा अने मसखहुंण
खतम हुई जायगा। ३८पण नवो दाखरख

[r] **५.२४** हूं मनख का बेटा; इना कथन के ईसु ने खुद अपणा सरु काम माय ल्यो। इका तीन अरथ हिटे हे - १. ईसु अपणा खुद का बारामें कई र्‍यो हे। २. उ सांचा मनख का बारामें कई र्‍यो हे। ३. उ पिता परमेसर से सामरत अने हक के पई के हमेस्या-हमेस्या को सासन करेगा (दानियल ७.१४)।

[†] **५.३०:** लूका १५.१–२

नवी मसकहुंण मेंज भरणो चावे। ३९जूनो
दाखरस पीके कईं को नवा की चायना नी
करे, क्योंके उके जूनोज अच्छो लागे हे।"

ईसु सबत् को बी परभु हे

(मत्ती १२.१-८; मरकुस २.२३-२८)

६ [†] कइंका सबत् का दन असो होयो के
ईसु खेत माय से हिटी र्‌यो थो अने
उका चेलाहुंण गंउ की उम्बी तोड़ी-तोड़ी
के अने हतेळी से मसळी ने फूंकी के
फांकी र्‌या था। २तो थोड़ाक फरीसिहुंण
ने क्यो, "तम असो काम कायसरु करो
हो जो सबत् का दन करनों यहूदी नेम
का मुजब ठीक हयनी?"
३ [†] ईसु ने जुवाब द्‌यो, "कंई तमने
यो बी ने बांच्यो के जदे दाऊद अने
उका सातिहुंण के भूक लागी तो उने
कंई कर्‌यो? ४ [†] उ परमेसर का मन्दर
माय ग्यो अने चड़ावा का रोटा लई के
खुद खाया जिणके नेम-बिधान का मुजब
सिरप पुरोहितज खई सकता था कइंका
दूसरा नी। पण उने अपणा सातिहुंण के
बी खवाड़्या।"
५अने उने यो बी क्यो, "क्योंके हूं
मनख को बेटो सबत् को बी परभु हूं।"

सबत् का दन सुक्या हात वाळा के नज करनों

(मत्ती १२.९-१४; मरकुस ३.१-६)

६कइंका दूसरा सबत् का दन असो
होयो के उ पराथनाघर माय जई ने
परबचन देवा लाग्यो। अने वां एक मनख
थो, जेको जीवणो हात सुक्यो होयो थो।
७सासतरी अने फरीसी इनी फिराक माय
था के देखां उ सबत् का दन नज करे के
नी, जेकासे के उणके उका पे दोष लगावा
सरु मोको मिळी सके। ८पण उ उणका
बिचारहुंण के जाणतो थो उने सुक्या हात
वाळा से क्यो, "उठी के सामे अई जा।"
उ उठ्‌यो। ९फेर ईसु ने उणकासे क्यो,
"हूं तमार से पुछुं! कंई सबत् का दन
भलो करनों ठीक हे के बुरो करनों, जीव
बचाणो के मारनो?" १०फेर उने सगळा
आड़ी देखी ने उकासे क्यो,[s] "अपणो हात
अगड़े कर!" उने जसोज कर्‌यो, उको हात
पूरण रुप से नज हुई ग्यो।
११इका पे फरीसी अने सासतरी आपा
से बायरे हुई ग्या, माय-माय तरक-
बितरक करिके केवा लाग्या के हम ईसु
का गेले कंई करां?

बारा परेरितहुंण

(मत्ती १०.१-४; मरकुस ३.१३-१९)

१२उणाज दनहुंण माय उ परबत पे
पराथना करवा हिट्‌यो अने आखी रात
परमेसर से पराथना करवा माय बिताड़ी
दी। १३जदे दन उग्यो तो उने अपणा
चेलाहुंण के अपणा कने तेड़्या अने
उणका माय से बारा चेला छांटी के उणका
'परेरित'[t] नाम राख्या, याने १४सिमोन
जेको नाम उने पतरस बी राख्यो अने
उको भई अन्द्रियास, याकूब अने योहन,

---

[s] **६.१०** क्यो; थोड़ाक मूळ माय करोध से क्यो। [t] **६.१३** परेरित; खास काम सरु मोकल्यो जाणो, ईसु की सीख सरु मोकल्यो जाणो। ईसु की सीख को परचार करवा वाळा अने ईसु का हक से बायरबादा हेड़वा वाळा (मरकुस ३.१४-१५)।

[†] **६.१:** नेम-बिधान २३.२५ [†] **६.३–४:** १ सेमुएल २१.१–६ [†] **६.४:** लेव्यव्यवस्था २४.९

फिलिप्पुस, बरतुलमे, [१५]मत्ती, थोमा,
हलफई को बेटो याकूब अने सिमोन
जो जेलोतेस[u] केवाय, [१६]अने याकूब को
बेटो यहूदा, अने यहूदा इस्करियोती जो
दगाबाज हिट्यो जेने ईसु के पकड़ायो।

ईसु ने भीड़ माय से नरा के नज कर्‍या

(मत्ती ४.२३-२५)

१७उका बाद उ चेलाहुंण का गेले
निच्चे उतरी के बराबर जगा पे उबो
होयो, अने उका चेलाहुंण की बड़ी भीड़
का गेले आखा यहूदिया, यरुसलेम अने
सूर अने सेदा का समन्दर कराड़ा से
घणा मनखहुंण वां हाजिर था। [१८]वी उको
परबचन सुणवा अने बेमारी से नज होणे
सरु आया था। अने वी जो बायरबादाहुंण
का सताड़्या होया था नज कर्‍या जई
र्‍या था। [१९]सगळा मनख उकासे चोंटवा
की कोसिस करी र्‍या था, क्योंके उका
माय से सामरत हिटती अने उण सगळा
के नज करी री थी।

आसीस अने सराप

(मत्ती ५.१-१२)

२०तो उ अपणा चेलाहुंण आड़ी देखी के
केवा लाग्यो,

"धन्य हो तम जो दीन हो,
क्योंके परमेसर को राज तमारो हे।
[२१] "धन्य हो तम जो अबी भूका हो
क्योंके तिरप कर्‍या जावगा।
"धन्य हो तम जो अबी रोव हो,
क्योंके तम हंसोगा।

२२[†] "धन्य हो तम जदे हूं मनख का
बेटा की वजासे लोग तमार से घिरणा
करे, तमारे छोड़ी लाखे, तमारी घणी बुरई
करे अने बुरो समजी के तमारो नाम
काटी लाखे। [२३][†] उना दन तम खुस हुई
ने उच्छळजो, कूद जो, क्योंके सरग माय
तमारा सरु बड़ो फळ हे। हूं तमार से कूं
क्योंके उणका पूरखाहुंण बी भविसबाणी
करवा वाळाहुंण का साते असोज कर्‍या
करता था।

[२४] "पण तमार पे हाय जो अबे धणी हो,
क्योंके तम अपणा सुक को पूरो
फळ पई र्‍या हो।
[२५] "हाय तमार पे जो अबे तिरप हो,
क्योंके तम भूका रोगा।
"हाय तमार पे जो अबे हंसी र्‍या हो,
क्योंके तम दुःख मनावगा अने
रोवगा।

२६"हाय तमार पे जदे सगळा मनख
तमारी बड़ई करे, क्योंके उणका पूरखाहुंण
ने बी झुंटा नबिहुंण[v] का गेले असोज
बरताव कर्‍यो थो।

बेरिहुंण से परेम

(मत्ती ५.३८-४८; ७.१२अ)

२७"पण हूं तम सुणवा वाळाहुंण से
कूं, अपणा बेरिहुंण से परेम राखो; जो
तमार से घिरणा करे, उणका गेले भलो

---

[u] **६.१५** जेलोतेस; यहूदी राष्टवादी पालटी को सदस्य। [v] **६.२६** झुंटा नबिहुंण; लोगहुंण ने झुंटा भविसबाणी करवा वाळाहुंण की बड़ई करी थी क्योंके जो बात लोगहुंण के भाती थी वीज केता था पण परमेसर ने उणके सजा दई। असोज लोगहुंण ने सांचा भविसबाणी करवा वाळाहुंण के सताड़्यो थो, क्योंके उणकी सीख नी भाती थी पण परमेसर ने इणके इनाम द्‍यो थो।

[†] **६.२२:** १ पतरस ४.१४ [†] **६.२३:** २ इतयास ३६.१६; परेरितहुंण ७.५२

करो। २८जो तमारे कोसे उणके आसीस
दो, जो तमारा गेले बुरो बरताव करे
उणका सरु पराथना करो। २९जो कईं
को तमारा एक गाल पे झापट मारे उका
आड़ी दूसरो बी करी लाखो। जो तमारो
कोट तमार से छुड़ई ले उके कुड़तो
लेवा से बी मती रोको। ३०जो कईं को
तमार से मांगे उके दो, अने जो कईं
को तमारी चीज छुड़ई ले उकासे पाछो
मती मांगो। ३१† जसा के तम चाव के
मनख तमारा गेले करे, तम बी उणका
गेले वसोज करो।

३२"अगर तम अपणा परेम करवा
वाळाहुंण सेज परेम राखो तो इका
माय तमारी कंई बड़ई? क्योंके पापी
बी तो अपणा परेम करवा वाळाहुंण से
परेम करे हे। ३३अगर तम अपणा गेले
भलई करवा वाळा का गेलेज भलई
करो तो इका माय तमारी कंई बड़ई?
क्योंके पापी बी असोज करे हे। ३४अगर
तम उणकेज उदार दो जिणकासे लेवा
की आस हे तो इका माय तमारी कंई
बड़ई? क्योंके पापी, पापिहुंण के उदार
दे हे के उतरोज पाछो लई ले। ३५पण
अपणा बेरिहुंण से परेम राखो अने
भलई करो, उदार दई के लेवा की आस
मती राखो। तो तमारा सरु बड़ो फळ
रेगा अने तम परमपरधान की ओलाद
केवावगा, क्योंके उ खुदज नासुकरा,
अने बुराहुंण पे किरपालु हे। ३६जसो
तमारो पिता दयालु हे वसाज तम बी
दयालु बणो।

कइंका पे बी दोष नी लगाड़नो

(मत्ती ७.१-५)

३७"कइंका को न्याव मती करो तो
तमारो बी न्याव नी कर्‌यो जायगा।
कइंका के दोषी मती ठेराव तो तम
बी दोषी नी ठेराड़या जावगा। मांफ
करो तो तम बी मांफ कर्‌या जावगा।
३८दूसरा लोगहुंण के दो, तो तमारे बी
द्‌यो जायगा। वी तमारा खोळा माय
पूरो-पूरो मांपी के दबई-दबई के हलई-
हलई ने उबरातो होयो लाखेगा। क्योंके
जेना मांप से तम दूसरा सरु मांपो हो,
उणाज मांप से तमारा सरु बी मांप्यो
जायगा।

३९† उने उणके मिसाल माय क्यो:
"कंई एक आंदो दूसरा आंदा के बाट
दिखाड़ी सके? कंई वी दोइज खाड़ा माय
नी पड़ेगा? ४०† चेलो, गरु से मोटो नी
रे पण पूरण ज्ञान होवा पे हर चेलो गरु
सरीको हुई जाय हे।

४१"तू अपणा भई की आंख का
तरकला के कायसरु देखे, कंई थारे
थारी आंख मायको भारो नी सुजे?
४२जदे तू थारी आंख मायका भारा के
नी देखी सके, तो अपणा भई से कसे
कई सके, 'हे भई, म्हारे थारी आंख
को तरकलो हेड़ लेवा दे'? हे ढोंगी,
पेलां तू अपणी आंख मायको भारो तो
हेड़ी ले! फेर तू अपणा भई की आंख
का तरकला के हेड़वा सरु सई-सई
देखी सकेगा।

---

† **६.३१:** मत्ती ७.१२ † **६.३९:** मत्ती १५.१४ † **६.४०:** मत्ती १०.२४–२५; योहन १३.१६, १५.२०

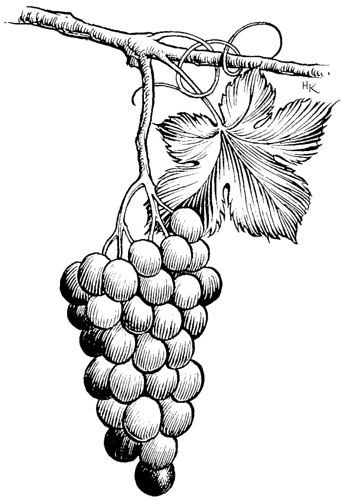

अंगुर (LUK ६.४४)

जसो झाड़ वसो फळ

(मत्ती ७.१६-२०; १२.३३-३५)

४३ "कइंकोज अच्छो झाड़ हयनी जेका पे खराब फळ लागता हो। अने नी कईं को बुरो झाड़ हे जेका पे अच्छो फळ लागे। ४४† हर झाड़ अपणा फळहुंण सेज पेचाण्या जाय हे। लोग कांटाळी झांडिहुंण से अंजीर भेळा नी करे अने नी बोरजाळी से अंगूर। ४५† वसोज भलो मनख अपणा हिरदा का भला खजाना से भली बातहुंणज हेड़े पण खोटो मनख अपणा हिरदा का बुरा खजाना से खोटी बातहुंण हेड़े हे, क्योंके जेनी बातहुंण से उको हिरदो भर्‌यो होय, उनीज बातहुंण के उ मुन्डा पे लाय हे।

दो घर की नीम

(मत्ती ७.२४-२७)

४६ "जो हूं कूं जदे तम उके नी मानो तो म्हारे, 'हे परभु, हे परभु' कायसरु को हो? ४७जो कईं को म्हारा कने आवे अने म्हारी बातहुंण के सुणी के उणके माने, हूं बतंउं के उ किका सरीको हे: ४८उ उना मनख सरीको हे जेने घर बणावा सरु उन्डो खोदी के सिल्ला पे नीम राखी, अने जदे पूर अई पाणी की धारहुंण उना घर से टकरई तो उके हलई नी सकी क्योंके उ घर पक्को बण्यो थो। ४९पण उ जेने सुण्यो तो जरुर पण उका सरीको नी चल्यो, उना मनख सरीको जेने बिना नीम खोदी जमीन पेज घर बणायो! जदे पूर अई तो पाणी की घरहुंण उकासे टकरई तो उ घर जदेज पड़ी ग्यो अने पूरो खतम हुई ग्यो।"

रोमी हाकिम का सेवक के नज करनों

(मत्ती ८.५-१३)

७ जदे उ लोगहुंण के पूरो परबचन सुणई चुक्यो तो कफरनहूम माय आयो। २अने कइंका रोमी सुबेदार को खास सेवक थो जो बेमारी से मरवा पे थो। ३जदे उने ईसु का बारामें सुण्यो तो थोड़ाक बुड़ा-हाड़ा यहूदिहुंण के उका कने या बिणती करवा मोकल्या के अई के म्हारा सेवक के बचइले। ४जदे वी ईसु कने पोंच्या तो उणने उकासे यो केता होय बिणती करी के, "उ इतरो लायक हे के तू उका पे दया कर, ५क्योंके उ हमारी

---

† **६.४४:** मत्ती १२.३३ † **६.४५:** मत्ती १२.३४

जात से परेम राखे हे अने उनेज हमारा इना पराथनाघर के बणायो हे।"

६ईसु उणका गेले-गेल चल्यो अने जदे घर से जादा दूर नी थो तो सुबेदार ने अपणा दोस के यो केवा मोकल्यो, "हे परभु, तू जादा परेसान मती हो, क्योंके हूं इका लायक हयनी के तू म्हारा घरे आय। ७इनीज वजासे म्हने खुद के इका लायक नी समज्यो के थारा कने अउं। सिरप बचन बोली दे तो म्हारो सेवक नज हुई जायगा। ८हूं बी दरसल सासन का बस माय हूं, अने सिपईहुंण म्हारा बस माय रे। हूं एक से कूं 'जा' तो उ जावे हे, अने दूसरा से कूं 'आ' तो उ आवे हे, अने हूं अपणा सेवक से कूं 'यो कर' तो उ उके करे हे।"

९जदे ईसु ने यो सुण्यो तो उके अचरज होयो अने उने भीड़ आड़ी फरिके जो उका पछड़े चली अइरी थी क्योः "हूं तमार से कूं के इसराइल जात माय बी म्हारे असो बड़ो बिसास नी मिळ्यो।"

१०अने जो लोग सुबेदार ने मोकल्या था उणने घरे आवा पे उना सेवक के भलो-चंगो पायो।

रांडी बइरा का जुवान छोरा के मर्‍या माय से जिवाड़े

११इका झट बाद[w] उ नाईन नाम का नगर आड़ी ग्यो। उका चेलाहुंण बी उका गेले चली र्‌या था, अने उणका गेले घणी बड़ीमेक भीड़ बी चली री थी। १२जदे उ नगर का फाटक पे पोंच्यो तो, लोग एक मुरदा के बायरे लइ-जई र्‌या था। उ उकी मेतारी को जो रांडी बइरा थी एखलोज बेटो थो, अने नगर का नरा लोग उका गेले था। १३रांडी बइरा के देखी के परभु के उका पे घणी दया अई अने उने क्यो, "रोवे मती।" १४फेर उने कने अई के अरथी के हात लगाड़्यो अने कन्दो देवा वाळा थमी ग्या। तो उने क्यो, "हे जुवान, हूं थार से कूं, उठ्या।" १५मुरदो उठी बेठ्यो अने बोलवा लाग्यो, ईसु ने उके उकी मेतारी के दई द्‌यो।

१६सगळा लोग डरी ग्या अने वी यो केता होया परमेसर की बड़ई करवा लाग्याः "हमारा अदाड़ माय एक बड़ो नबी परगट्यो हे।" अने "परमेसर ने अपणा लोगहुंण पे किरपा करी हे।"

१७उका बारामें यो समिचार आखा यहूदिया देस माय अने ऐरे-मेरे का आखा इलाका माय फेली ग्यो।

योहन का चेलाहुंण के ईसु को ज्वाब

(मती ११.२-१९)

१८योहन का चेलाहुंण ने इनी सगळी बातहुंण को समिचार योहन के द्‌यो। १९तो योहन ने अपणा चेला माय से दो के बुलाड़ी के उणके परभु कने यो पुछवा मोकल्या, "कंई उ आवा वाळो तूज हे के, हम फेर कइंका दूसरा की बाट जोंवा?"

२०जदे वी लोग उका कने आया तो उणने क्यो, "योहन बपतिसमा देवा वाळा ने हमारे थारा कने यो पुछवा मोकल्या हे, 'कंई आवा वाळो तूज हे के, फेर हम कइंका दूसरा की बाट जोंवा?' "

---

[w] **७.११** इका झट बाद; थोड़ाक माय असो हे दूसरा दन।

२१उनीज घड़ी ईसु ने नरा लोगहुंण के
बेमारिहुंण, दुःखहुंण अने बायरबादाहुंण से
छुड़ई के नज कर्या अने नरा लोगहुंण
जो आंदा था, देखवा लाग्या। २२[†] तो उने
उणकासे क्यो, "जो कंई तमने देख्यो
अने सुण्यो, जई के योहन के बताड़ो!
आंदा देखे हे, पांगळा चले हे, कोड़्या
सुद्द कर्या[x] जई र्या हे, बेर्याहुंण सुणे
हे, मुरदा जिवाड़्या जाय हे, अने गरीब-
गुरबाहुंण के सुब-समिचार सुणायो जाय
हे। २३अने धन्य वी हे जो म्हारा बारामें
सक नी करे।

२४जदे योहन का चेलाहुंण चल्या ग्या
तो ईसु भीड़ से योहन का बारामें बात
करवा लाग्यो, "तम मांळ माय कंई देखवा
ग्या था? बायरा से हलता होया बरु के?
नी! २५तो फेर कंई देखवा ग्या था? असा
मनख के जो नरम लतरा पेर्यो होयो थो?
नी! देखो, वी जो चळकण्यां लतरा पेरे
अने भोग-बिलास माय रे हे, राजम्हेल
मेंज मिळे हे! २६पण तम कंई देखवा ग्या
था? कंई नबी के? हां, हूं तमार से कूं के
नबी से बी मोटा के। २७[†] यो उज हे, जेका
बारामें लिख्यो हे, 'देख हूं अपणा दूत के
थारा अगड़े मोकलुं। उ थारा अगड़े थारो
मारग तय्यार करेगा।' २८हूं तमार से कूं
के नारीहुंण से जो जन्म्या हे उणका माय
से कइंकोज योहन से मोटो हयनी। फेर
बी उ जो परमेसर का राज माय नानो से
नानो हे उ उकासे बड़ो के हे।

२९[†] पण आम-जनता अने कर वसुळवा
वाळाहुंण ने बी योहन की सगळी बात
सुणी तो योहन से बपतिसमो लई के
परमेसर की योजणा के मानी ली। ३०पण
फरीसी अने परमेसर का नेम-बिधान
का जाणकारहुंण ने योहन से बपतिसमो
नी लई के अपणा बारामें परमेसर की
योजणा के नी मानी।

३१"तो हूं इनी पीड़ी का लोगहुंण को
मिलाण किकासे करूं? ई किका सरीका
हे? ३२ई उना बाळकहुंण सरीका, जो हाट
माय बेठ्या रे अने एक दूसरा से हेला
पाड़ी के के, 'हमने तमारा सरु बंसी बजई
पण तम नाच्या हयनी; हमने रुदन
कर्यो पण तम नी रोया।' ३३क्योंके
योहन बपतिसमा देवा वाळो नी तो रोटो
खातो आयो अने नी दाखरस पीतो आयो,
पण तम को हो 'उका माय बायरबादा
हे!' ३४हूं मनख को बेटो खातो-पितो
आयो, अने तम को हो, 'देखो, पेटु अने
दारुकुट्टो मनख, कर वसुळवा वाळा अने
पापिहुंण को दोस!' ३५परमेसर की बुध्दि
से भरी हुई बातहुंण के जो कईं को
बी मानेगा, अने लोग उणका काम अने
चरित्तर के देखेगा तो केगा, परमेसर की
बुध्दि सांची हे।

ईसु पापण बइरा का पाप मांफ करे

३६फेर कइंका एक फरीसी ने उकासे
बिणती करी के उ उका गेले जिमें तो उ
उना फरीसी का घरे जई के जिमवा सरु
सायरे से बेठी ग्यो। ३७[†]अने देखो, उना
नगर माय एक बइरा, जो पापण थी, अने
जदे उके मालम पड़्यो के ईसु फरीसी का

[x] **७.२२** सुद्द कर्या; देखो ५.१२।
[†] **७.२२:** यसायाह ३५.५–६, ६१.१ [†] **७.२७:** मलाकी ३.३ [†] **७.२९–३०:** मत्ती २१.३२; लूका ३.१२
[†] **७.३७–३८:** मत्ती २६.७; मरकुस १४.३; योहन १२.३

घरे जिमवा बेठ्यो हे तो संगमरमर का
बरतन माय अतर लइ-यई। ३८अने उका
पगाड़ी कने पछड़े उबी हुई के रोई-रोई
के आंसुहुंण से उका पगहुंण भिंजाळवा
लागी। अने अपणा माथा का बालहुंण से
उका पगहुंण पोंछवा अने चुमी के उणका
पे अतर मळवा लागी। ३९तो उना फरीसी
ने जेने ईसु के नोत्यो थो यो सगळो
देखी के अपणा मन माय क्यो, "अगर
यो मनख नबी होतो तो ताड़ी जातो के
वा बइरा जो उके हात लगाड़ी री, कुंण हे,
अने कसी हे। याने के वा तो पापण हे।"
४०ईसु ने उकासे क्यो, "हे सिमोन,
म्हारे थार से कंई केणो हे।"
उने जुवाब द्यो, "हे गरु, के।"
४१"कइंका बाण्या का दो करजदार था।
एक पे पांच सो चांदी का सिक्का[y] को
करजो थो अने दूसरा पे पचास। ४२जदे
वी करजो चुकावा का लायक नी र्‍या तो
उने दोई पे किरपा करिके उणके मांफ
करी लाख्या। तो उना दोई माय से कुंण
उके जादा परेम करेगा?"
४३सिमोन ने जुवाब द्यो, "म्हारी
समज माय उ जेको जादा मांफ कर्‍यो।"
उने उकासे क्यो, "तने ठीकज सोंची
के फेसलो कर्‍यो।" ४४फेर उनी बइरा
आड़ी फरिके उने सिमोन से क्यो,
"कंई तू इनी नारी के देखी र्‍यो? हूं
थारा घरे आयो पण तने म्हारा पगहुंण
पखाळवा सरु पाणी तक नी द्यो,
पण इने अपणा आंसुहुंण से म्हारा
पगहुंण भिंजाळ्या अने अपणा बालहुंण
से पोंछ्या हे। ४५तने म्हारे चुम्यो
हयनी, पण जदसे हूं आयो, इने म्हारा
पगहुंण के चुमणो नी छोड़्यो। ४६तने
म्हारा माथा माय तेल नी मिळ्यो, पण
इने म्हारा पगहुंण पे अतर मिळ्यो
हे। ४७इकासरु हूं थार से कूं इने घणो
जादा परेम कर्‍यो क्योंके इका पाप,
जो नरा था, मांफ कर्‍या ग्या। पण
उ जेका जरासा पाप मांफ कर्‍या उके
थोड़ोक परेम रे हे।"
४८अने उने नारी से क्यो, "थारा पाप
मांफ कर्‍या ग्या हे।"
४९तो वी मनख जो उका गेले जिमवा
बेठ्या था अपणा अपणा मन माय केवा
लाग्या, "यो मनख कुंण हे जो पापहुंण
के बी मांफ करे हे?"
५०पण ईसु ने उनी नारी से क्यो,
"थारा बिसास ने थारो उध्दार कर्‍यो।
कुसल से जा।"

ईसु की सेवा करवा वाळी नारीहुंण

८ इका झट बाद असो होयो के उ
परमेसर का राज का बारामें सुब-
समिचार सुणातो होयो नगर-नगर अने
गांम-गांम जावा लाग्यो अने वी बारा
चेला बी उका गेले र्‍या। २[†] अने
थोड़िक नारीहुंण बी जो बायरबादाहुंण
अने बेमारी से नज हुई गी ईसु का
गेले थी, जिणका माय मरियम जो
मगदलीनी केवाती थी अने जेका माय
से सात बायरबादाहुंण हेड़ी थी। ३अने
हेरोदेस सासक का मुनीम खुजा की

[y] **७.४१** एक चांदी का सिक्का - एक दन की मजुरी।

[†] **८.२–३:** मत्ती २७.५५–५६; मरकुस १५.४०–४१; लूका २३.४९

घराळी योअन्ना, अने सूसन्नाह अने नरी दूसरी नारीहुंण थी। ई अपणा खुद का धन से ईसु की सेवा कर्या करती थी।

बीज की मिसाल

(मत्ती १३.१-९; मरकुस ४.१-९)

४जदे बड़ीमेक भीड़ भेळी हुई री थी, अने नरा नगरहुंण से लोग उका कने चल्या अई र्या था तो ईसु ने उणकासे मिसाल दई क्यो:

५"एक बोणे वाळो बीज बोवा हिट्यो। बोता बखत थोड़ाक बाट का मेरे पड़्या अने पगहुंण से रोंदई ग्या अने असमान का पखेरुहुंण ने अई के चुगिल्या।
[६]थोड़ाक सिल्ला पे पड़्या जेका पे थोड़ोक गारो थो, वी उगताज सुकी ग्या क्योंके उका माय सीत नी थी। [७]थोड़ा कांटाळी झांडी माय पड़्या अने झांडिहुंण ने गेले-गेल बड़ी के उणके दबाड़ी लाख्या।
[८]दूसरा बीज अच्छी जमीन पे पड़्या अने उगी के सो गुणा फळ्या।"

यो कई उने ऊंची अवाज माय क्यो, "जेका सुणवा का कान होय उ सुणी ले।"

मिसाल को मकसद

(मत्ती १३.१०-१७; मरकुस ४.१०-१२)

९उका चेलाहुंण उकासे सवाल करवा लाग्या के इनी मिसाल को अरथ कंई हुई सके? [१०]† उने क्यो: "परमेसर ने तमारे या समज दई के तम उका राज का भेद के जाणो, पण दूसरा के मिसाल मायज बताड़्यो जावे के वी देखता होया नी देखे अने सुणता होया नी सुणे।

मिसाल को अरथ

(मत्ती १३.१८-२३; मरकुस ४.१३-२०)

११"मिसाल को अरथ यो, बीज परमेसर को बचन। [१२]बाट का मेरे वाळा वी जिणने बचन तो सुण्यो पण सेतान अई के उणका हिरदाहुंण माय से बचन उठई लई जावे, के वी बिसास नी करे अने उणको उध्दार नी होय। [१३]सिल्ला पे का वी जो बचन सुणवा पे उके बड़ा आनन्द से माने तो हे पण जड़ उन्डी नी होवा से घड़ी भर तो बिसास करे, पण जदे अजमाया जावा को बखत आय तो भेकी जावे हे। [१४]जो बीज कांटाळी झांडिहुंण माय पड़्या वी हे, जिणने बचन सुण्यो अने जसे वी अगड़े बड़्या वी चिन्ताहुंण, धन, अने जीवन का सुख-बिलास माय फंसी जाय, अने उणको फळ कदी नी पाके। [१५]अच्छी जमीन का बीज वी जो बचन सुणी के अपणा साफ अने अच्छा हिरदा माय उके अटोपी राखे अने वी बड़ा जिरना से फळ लाय।

बचन ध्यान दई सुणणो

(मर ४.२१-२५)

१६† "दीयो बाळी के कइंकोज उके ठामड़ा से नी ढांके नीज खाट का निच्चे धरे, पण उके अदरे पेवला पे धरे जेकासे भित्तरे आवा-जावा वाळाहुंण के उजाळो मिळे।

---

† **८.१०:** यसायाह ६.९-१० † **८.१६:** मत्ती ५.१५; लूका ११.३३

१७[†] "क्योंके जो कंई छिप्यो हे उ
परगट होयगा। अने जो कइंकी गुपत
बात हे वा जाणी जायगा अने परगट
होयगा।

१८[†] "इकासरु होसियार रो के तम
कसतरा सुणो हो, क्योंके जेका कने हे
उके हजु बी द्‌यो जायगा, अने जेका कने
नी हे उकासे उ बी जेके उ अपणो जाणे
लई ल्यो जायगा।"

ईसु की मेतारी अने भई-बेनहुंण

(मत्ती १२.४६-५०; मरकुस ३.३१-३५)

१९ईसु की मेतारी अने उका भई बी
उका कने आया, पण भीड़ की वजासे
उकासे मिळी नी सक्या। २०अने कइंका
ने उके बताड़्यो, "थारी मेतारी अने भई-
बेनहुंण बायरे उब्या हे। वी थार से मरनो
चावे।"

२१पण उने जुवाब द्‌यो, "म्हारी मेतारी
अने म्हारा भई तो ई हे जो परमेसर को
बचन सुणी के उको पाळण करे।"

अन्दी-दंदवाळ के थामणो

(मत्ती ८.२३-२७; मरकुस ४.३५-४१)

२२तो एक दन असो होयो के उ अने
उका चेलाहुंण एक नाव पे चड़ी ग्या अने
उने उणकासे क्यो, "आव, सरवर का पेलां
पार[z] चलां।" अने चेलाहुंण एक नाव पे
चड़ी ग्या अने उणने नाव छोड़ी लाखी।
२३जदे वी खेता होया अगड़े बड़ता जई
र्‌या था तो उ सोई ग्यो। अने सरवर
माय घणो भयंकर अन्दी-दंदवाळ चल्यो,
नाव माय पाणी भरावा लाग्यो अने
उणकी जान खतरा माय पड़ी गी। २४तो
चेलाहुंण ने कने अई के उके जगाड़्यो
अने क्यो, "मालेख, हे मालेख! हम डुबी
र्‌या हे!"

उने उठी के अन्दी-दंदवाळ अने उठी
हुई पाणी की लेरहुंण के डांट्‌यो अने
वी थमी गी अने सांती हुई गी। २५उने
उणकासे क्यो, "तमारो बिसास कंय्यांड़ी
हे?"

वी डरी ग्या अने अचरज माय हुई
ने एक दूसरा से केवा लाग्या, "तो
फेर यो कुंण हे जो अन्दी-दंदवाळ अने
पाणी के बी हुकम दे अने वी उकी
मानी ले?"

ईसु बायरबादा के बस माय करवा वाळो

(मत्ती ८.२८-३४; मरकुस ५.१-२०)

२६तो वी गिरासेनियो[a] का इलाका
माय पोंच्या जो गलील का सामेंज हे।
२७जदे उ गलील का कराड़ा पे उतर्‌यो
तो उके उना नगर को एक मनख
मिळ्यो जेका माय बायरबादाहुंण थी।
उ नरा दन से नी तो लतरा पेरतो
थो ने नी घर माय रेतो थो। पण
कबरहुंण मायज रेतो थो। २८-२९ईसु
तो बायरबादाहुंण के हुकम दई र्‌यो
थो के उना मनख माय से हिटी जाये,
क्योंके नरी कावा उणने उना मनख
के पकड़्यो थो, लोग उके सांकळ
अने बेड़िहुंण से बान्दी के नेपा माय
राखता था, फेर बी उ इना बन्दणहुंण

[z] **८.२२** सरवर का पेलां पार; जो यहूदिहुंण को इलाको नी थो।
[a] **८.२६** गरासेनियो; थोड़ाक मूळ माय असो हे गदारा (देखो मत्ती ८.२८); दूसरा माय गरसिया।
[†] **८.१७:** मत्ती १०.२६; लूका १२.२
[†] **८.१८:** मत्ती २५.२९; लूका १९.२६

के तोड़ी लाखतो थो अने बायरबादाहुंण
उके मांळ माय भगाड़ती-फरती थी।
तो ईसु के देखी के उ चिल्लाड़ी उठ्यो
अने उका सामे पड़ी के उंची अवाज
माय उने क्यो, "हे सगळा से म्हान
परमेसर का बेटा ईसु, म्हारे थार से
कंई काम? हूं थार से बिणती करूं के
म्हारे सजा मती देजे।"

३०ईसु ने उकासे पुछ्यो "थारो कंई
नाम हे?"

उने क्यो, "पळटन" क्योंके उका माय
नरी बायरबादाहुंण भरई हुई थी। ३१वी
उकासे बिणती करिके कई री थी, "हमारे
उन्डा कुण्ड[b] माय जावा को हुकम मती
दे।"

३२वां सुंवल्डाहुंण को घणो बड़ो
टोळो बळडा पे चरी र्यो थो। तो
बायरबादाहुंण ने उकासे घणी बिणती
करी के उणके उना सुंवल्डाहुंण माय
जावा दे। ईसु ने उणके जावा द्या।
३३बायरबादाहुंण उना मनख माय से
हिटी ने सुंवल्डाहुंण माय भरई गी अने
आखो टोळो उंचा कराड़ा पे से निच्चे
लपकी के सरवर माय कुद्यो अने डुबी
के मरी ग्यो।

३४जदे चरावा वाळाहुंण ने जो
कंई होयो देख्यो, तो भागी के नगर
माय अने गांमहुंण माय जई के बतई
द्यो। ३५तो लोग, जो कंई होयो उके
देखवा हिट्या अने ईसु कने आया।
वां उणने उना मनख के जेका माय
से बायरबादाहुंण हेड़ी थी, ईसु का
पगहुंण कने बेठ्यो होयो देख्यो, उ
लतरा पेर्यो होयो सांत सुभाव माय
थो, इका पे वी डरी ग्या। ३६देखवा
वाळाहुंण ने उणके बताड़्यो के उ मनख
जेका माय बायरबादा भराणी थी कसे
नज होयो। ३७तो गिरासेनियो अने ऐरे-
मेरे का इलाका का सगळा लोगहुंण
ने ईसु से बिणती करी के उ उणका
कने से चल्यो जाय, क्योंके वी घणा
डरी ग्या था। अने उ नाव पे चड़िने
पाछो चल्यो ग्यो। ३८उ मनख जेका
माय से बायरबादाहुंण हेड़ी थी उकासे
बिणती करवा लाग्यो, "म्हारे बी थारा
गेले चलवा दे।"

पण ईसु ने उके यो कई के फेरी द्यो:
३९"अपणा घरे पाछो चल्यो जा अने
लोगहुंण के बताड़ के परमेसर ने थारा
सरु कसा काम कर्या हे।"

उ पाछो नगर माय अई के आखा नगर
माय यो परचार करतो फर्यो, के ईसु ने
म्हारा सरु कसा बड़ा म्हान काम कर्या
हे।

एक मरी हुई नानी अने एक बेमार बइरा

(मती ९.१८-२६; मरकुस ५.२१-४३)

४०ज्योंज ईसु पाछो जां से ग्यो थो
आयो, तो भीड़ ने उको सुवागत कर्यो
क्योंके वी सगळा उकी बाट जोई र्या
था। ४१अने देखो, याईर नामको एक
मनख आयो जो पराथनाघर को हाकिम
थो। उ ईसु का पगहुंण पे अई के ने

[b] **८.३१** उन्डा कुण्ड; या गेरो कुन्ड: असो बिचार थो के बायरबादाहुंण के बन्दी बणई के उन्डा कुण्ड माय लाखी दी हे के जदत्तक उणके आखरी सजा नी मिळी जाय वी वांज रेगा।

पड़ी ग्यो उने उके अपणा घरे चलवा सरु मनाड़्वा लाग्यो। [४२]क्योंके उकी एखली बेटी, जो बारा बरस का ऐरे-मेरे की थी अने जो मरवा पे थी।

जदे उ जावा सरु होयो तो भीड़ ईसु पे लदालद पड़ी री थी। [४३]जदे एक बइरा जेके बारा बरस से लोई बिवा की बेमारी थी अने बेदहुंण कने जई के अपणो आखो धन खतम करी लाख्यो थो[c], जेके कइंकाज बेद नज नी करी सक्या था। [४४]पछड़े से अई के ईसु का चोळा का किनोर से चोंटी गी, तो झट उको लोई बिणो बन्द हुई ग्यो। [४५]ईसु ने क्यो, "कुंण म्हार से चोंट्यो?"

जदे वी सगळा नटी र्‌या था तो पतरस ने क्यो, "हे मालेख, भीड़ भेळी हुई ने थार पे लदई री हे।"

४६पण ईसु ने क्यो, "कइंको म्हार से चोंट्यो। म्हारे मालम हुई ग्यो के म्हारा माय से सामरत हिटी हे।" [४७]जदे उनी बइरा ने देख्यो के हूं छिपी नी सकती, तो डर का मारे धुजती हुई अई के ने उका पगे पड़ी गी। उने सगळा मनखहुंण का सामे क्यो के वा कायसरु उकासे चोंटी अने कसे वा झट नज हुई गी। [४८]उने उकासे क्यो, "बेटी, थारा बिसास ने थारे नज कर्‌यो। जा, चेन से चली जा।"

४९जदे उ यो कइज र्‌यो थो तो कइंका ने पराथनाघर का हाकिम का घर से अई के क्यो, "थारी नानी मरी गी। अबे गरु के परेसान मती कर।"

५०पण जदे ईसु ने सुण्यो तो उकासे क्यो, "नठ्र मती डर! सिरप बिसास राख तो वा बची जायगा।"

५१जदे उ उना घर माय पोंच्यो तो उने पतरस, योहन, याकूब अने उनी नानी का मां-बाप का अलावा दूसरा कइंका के अपणा गेले भित्तरे नी आवा द्‌या। [५२]वी सगळा मनख उका सरु रुदन करिके रोई र्‌या था, पण उने क्यो "रोणो-धोणो, बन्द करो, क्योंके वा मरी हयनी, पण सोइर्‌यो री हे।"

५३इका पे लोग हंसवा लाग्या क्योंके वी जाणता था के वा मरी गी हे। [५४]पण उने उको हात पकड़ी के यो कई के हेला पाड़्यो, "हे नानी, उठ्‌या।" [५५]तो उकी आतमा उका माय अइगी अने वा झट उबी हुई गी, अने ईसु ने हुकम द्‌यो इके थोड़ोक-कंई खावा सरु द्‌यो जाय। [५६]उका मां-बाप के घणो अचरज होयो, पण उने उणके हुकम द्‌यो के जो कंई होयो उके कइंका से किजो मती।

ईसु ने जाईर की बेटी के जिवाड़ी (LUK ८.५४)

[c] **८.४३** बेदहुंण कने जई के अपणो आखो धन खतम करी लाख्यो थो; थोड़ाक मूळ माय असो नी हे।

ईसु बारा परेरितहुंण के मोकले

(मत्ती १०.५–१५; मरकुस ६.७–१३)

९ तो ईसु ने बारा परेरितहुंण के एक
साते बुलाड़्या अने उणके सगळी
बुरी आतमाहुंण पे अने बेमारिहुंण के
नज करवा सरु सामरत अने हक द्यो।
२उने उणके मोकल्या के वी परमेसर का
राज को परचार करे अने बेमारहुंण के
नज करे। ३† उने उणकासे क्यो, "अपणी
जातरा सरु कंई मती लो, नी तो लाकड़ी,
नी झोळो, नी रोटा अने नी रुप्या-पइसा,
यां तक के दो दो कुड़ता बी मती लई
जाव। ४जेना कइंका घर माय जाव,
वइंज रो अने वइंसेज बिदा होव। ५अने
जो तमारी आव-भगत नी करे, तो जदे
तम उना नगर माय से हिटो तो अपणा
पगहुंण को धूळो झटकारी दो जेकासे
उणका सरु गवई रे के उणको न्याव
होय।"

६तो वी निकळी के गांम गांम सुब-
समिचार सुणाता होया अने हर जगा
लोगहुंण के नज करता फर्‍या।

सासक हेरोदेस जो ईसु के नी जाणतो थो

(मत्ती १४.१–१२; मरकुस ६.१४–२९)

७† देस का चोथा हिस्सा का सासक
हेरोदेस ने जदे इनी घटणाहुंण का बारामें
सुण्यो तो उ समजी नी सक्यो, क्योंके
नरा लोगहुंण कई र्‍या था के योहन
मर्‍या माय से जिन्दो हुई ग्यो हे,
८कइंका कई र्‍या था के नबी एलियाह
पाछो परगट्यो हे। दूसरा लोगहुंण का
मुजब जूना नबिहुंण माय से कईं को
एक जीवतो हुई ग्यो हे। ९हेरोदेस ने
क्यो, "म्हने खुदज तो योहन को माथो
कटवाड़्यो थो, पण यो मनख कुंण हे
जेका बारामें हूं असी बातहुंण सुणी र्‍यो
हूं?" अने उ उके देखवा की कोसिस
करतो र्‍यो।

ईसु पांच रोटा अने दो मच्छी से पांच हज्जार के खवाड़े

(मत्ती १४.१३–२१; मरकुस ६.३०–४४; योहन ६.१–१४)

१०जदके परेरित जिणके मोकल्या था
पाछा अई ग्या। तो जो कंई उणने कर्‍यो
थो सगळो उके बताड़्यो। तो उ उणके
गुप-चुप अपणा गेले लई के बेतसेदा
नाम नगर आड़ी ग्यो। ११पण भीड़ का
लोगहुंण के पतो चली ग्यो तो वी उका
पाछे चली पड़्या। उणकी आव-भगत
करिके उ उणकासे परमेसर का राज
की बातहुंण करवा लाग्यो, अने जिणके
नज होवा की जरुवत थी उने उणके
नज कर्‍या।

१२जदे दन अथणवा लाग्यो तो बारा
चेलाहुंण ने उका कने अई के ने क्यो,
"भीड़ के बिदा कर के वी ऐरे-मेरे का
गांम अने बस्तिहुंण माय जई के अपणा
सरु रेवा की जगा अने खावा सरु कंई
ढुंडी सके, क्योंके हम तो यां बिराण जगा
माय हे।"

१३पण उने उणकासे क्यो, "तमीज
इणके कंई खावा सरु दो।"

† **९.३–५:** लूका १०.४–११; परेरितहुंण १३.५१

† **९.७–८:** मत्ती १६.१४; मरकुस ८.२८; लूका ९.१९

उणने क्यो, "हमारा कने पांच रोटा अने दो मच्छी का अलावा कंई हयनी। तू यो तो नी चाय के हम जावां अने इना सगळा सरु भोजन मोल लई आंवां।"
१४क्योंके वां करीब-करीब पांच हज्जार मनख था।

ईसु ने अपणा चेलाहुंण से क्यो, "पचास पचास की पंगतहुंण माय इणके बेठई दो।"
१५उणने वसेज उना सगळा के बेठई द्या। १६फेर उने पांच रोटा अने दो मच्छीहुंण लई अने सरग आड़ी देखी के उणका सरु धन्यबाद कर्‍यो। अने उणके तोड़ी-तोड़ी के चेलाहुंण के देतो ग्यो के वी लोगहुंण के परोसता जाय।
१७जदे सगळा मनख खई के धापी ग्या तो उणने बाकी बच्या कोळ्या से भर्‍या होया बारा टोपलाहुंण उठाड़्या।

पतरस ने जदे ईसु के मसीह मान्यो

(मत्ती १६.१३–१९; मरकुस ८.२७–२९)

१८फेर जदे उ एखलो पराथना करी र्‍यो थो अने चेलाहुंण उका गेले था तो उने उणकासे पुछ्यो, "हूं कुंण हूं, इना बारामें लोग कंई के हे?"
१९† उणने जुवाब द्यो, "योहन बपतिसमा देवा वाळो, पण कइंका के हे एलियाह, अने दूसरा लोगहुंण का मुजब, जूना नबिहुंण माय से कईं को एक जी उठ्यो हे।"
२०† उने उणकासे क्यो, "पण तम म्हारे कंई को हो?"

पतरस ने जुवाब द्यो, "परमेसर को मसीह।"

ईसु ने क्यो, उ दुःख भोगेगा अने मार्‍यो जायगा

(मत्ती १६.२०–२८; मरकुस ८.३०–९.१)

२१पण उने उणके चेतई ने हुकम द्यो के या बात कइंका से मती किजो। २२फेर क्यो, "यो जरुरी हे के हूं मनख को बेटो घणो दुःख झेलुं, अने ठाम्या मनख, मुख-पुरोहितहुंण अने सासतरिहुंण से हूं नकार्‍यो जई के मारी लाख्यो जउं अने तीसरा दन जी उठ्यउं।"
२३† तो उने सगळा मनखहुंण से क्यो, "अगर कईं को म्हारा पाछे आणो चावे तो उ खुदी के नकारे, अने हर दन अपणो कुरुस उठाय[d] अने म्हारा सरीको करे। २४†
क्योंके जो कईं को अपणी काया को जीव बचाड़णो चावे उ अपणा सरग का जीव के खोयगा, पण जो कईं को अपणी काया को जीव म्हारा सरु खोय उ अपणा सरग का जीव के बचाड़ेगा। २५अगर कईं को मनख आखा जग के पई ले अने अपणो सरग को जीव खोई लाखे या उकासे अलग हुई जाय तो उके कंई फायदो रेगा? २६जो म्हार से अने म्हारा बचन से लजायगा उकासे हूं मनख को बेटो बी उना बखत लजउंवां जदे हूं अपणी, अने अपणा पिता की, अने पवित्तर सरगदूतहुंण की म्हेमा माय अउंवां। २७पण हूं तमार से खास बात कूं के यां थोड़ा असा उब्या

---

[d] **९.२३** अपणो कुरुस उठाय; लक्कड़ का पाट्या के एक-दूसरा का अदरे आड़ो धरी के बणाणो जेका पे मुलजिमहुंण के सजा दे हे।

† **९.१९:** मत्ती १४.१–२; मरकुस ६.१४–१५; लूका ९.७–८ † **९.२०:** योहन ६.६८–६९

† **९.२३:** मत्ती १०.३८; लूका १४.२७ † **९.२४:** मत्ती १०.३९; लूका १७.३३; योहन १२.२५

हे जो जदत्तक परमेसर को राज नी देखी
ले तदत्तक मोत को सुवाद नी चाखेगा।"

ईसु म्हेमा माय

(मत्ती १७.१–८; मरकुस ९.२–८)

२८† इनी बातहुंण का करीब-करीब
आठ दन पाछे असो होयो के ईसु,
पतरस, योहन अने याकूब के गेले लई
के पराथना करवा सरु बळडा पे चड़ी
ग्यो। २९जदे उ पराथना करी र्‌यो थो तो
उका मुन्डा को रुप बदळी ग्यो अने उका
लतरा धोळा हुई के चळकवा लाग्या।
३०देखो, दो मनख उकासे बातहुंण करी
र्‌या था। वी मूसा अने एलियाह था। ३१ई
म्हेमा माय परगट हुई के उका मरवा
का बारामें बातहुंण करी र्‌या था, जेके
उ यरुसलेम माय पूरो करवा पे थो।
३२पतरस अने उका सातिहुंण नीन्द माय
उजगर्‌या था। पण जदे वी पूरण रुप से
जागी ग्या तो उणने उकी म्हेमा के, अने
उका गेले उण दोई मनखहुंण के उब्या
देख्या। ३३जदे वी दो उकासे बिदा होवा
लाग्या तो पतरस ने ईसु से क्यो, "हे
मालेख, यां रेणो हमारा सरु अच्छो हे,
तो हम तीन डेरा बणावां, एक थारा सरु,
एक मूसा सरु अने एक एलियाह सरु।"
उ नी जाणतो थो के कंई कई र्‌यो हे!
३४उ यो कइज र्‌यो थो के एक बदळो
उठ्‌यो जो उणका पे छावा लाग्यो, अने
जदे वी बादळा से घेरावा लाग्या तो
डरी ग्या। ३५† तो बादळा माय से यो
सबद् सुणई द्‌यो, "यो म्हारो बेटो, म्हारो
छांट्‌यो होयो। इकी सुणो।"
३६जदे बाणी हुई चुकी तो ईसु एखलो
रई ग्यो। चेलाहुंण छाना र्‌या अने जो कंई
देख्यो थो उका बारामें उणने उना दनहुंण
माय कइंका केज कंई नी बताड़्यो।

ईसु को रुप बदळनो (LUK ९.३२)

बायरबादा से भर्‌या मनख के नज करनों

(मत्ती १७.१४–१८; मरकुस ९.१४–२७)

३७दूसरा दन असो होयो के जदे
वी उना परबत से निच्चे उतर्‌या तो
एक घणी बड़ीमेक भीड़ उकासे मिळी।
३८अने देखो, भीड़ माय से एक मनख
ने चिल्लाड़ी ने क्यो, "हे गरु, हूं थार से
बिणती करूं के तू म्हारा बेटा पे किरपा-
भरी नगे-राख, क्योंके उ म्हारो एखलोज
बेटो हे। ३९अने देख, एक बायरबादा उका
माय समई गी हे अने उ एकदम से
चिल्लाड़ी उठ्‌यो। वा उके असो मरोड़े के
उका मुन्डा से झाग हिटवा लागे। वा उके

† **९.२८–३५:** २ पतरस १.१७–१८

† **९.३५:** यसायाह ४२.१; मत्ती ३.१७, १२.१८; मरकुस १.११; लूका ३.२२

झकझोड़ी के बड़ी मुसकिल से छोड़े हे।
४०म्हने थारा चेलाहुंण से बिणती करी के
उके हेड़े पण वी नी हेड़ी सक्या।"
४१ईसु ने जुवाब द्यो, "हे अबिसासी
अने भटक्या होया लोगहुंण! हूं तमारा
गेले कदत्तक रुंवा अने तमारी सेतो
रुंवा?" ईसु ने नाना का पिता से क्यो,
"अपणा बेटा के यां ल्या।"
४२उ अइज र्‌यो थो के बायरबादा ने
उके जमीन पे पटकी के बुरी तरा से
मरोड़्यो। पण ईसु ने उनी बायरबादा के
डांट्यो अने नाना के नज करिके उका
पिताजी के दई द्यो। ४३तो परमेसर की
म्हानता से सगळा मनख दंग रई ग्या।

ईसु अपणी मोत का बारामें पाछो बोल्यो

(मत्ती १७.२२–२३; मरकुस ९.३०–३२)

उ जो कंई करी र्‌यो थो उके देखी के
सगळा मनख अचरज करी र्‌या था, तो
उने अपणा चेलाहुंण से क्यो, ४४"इनी
बातहुंण पे कान धरो, क्योंके कइंका
एक मनख से हूं मनख को बेटो बिरोदी
लोगहुंण का हाते पकड़वायो जावा वाळो
हूं।" ४५पण वी इनी बात के नी समज्या,
अने या बात उणकासे गुपत री के वी
उके नी जाणे, अने वी इका बारामें ईसु
से पुछवा से डरता था।

मोटो कुंण?

(मत्ती १८.१–५; मरकुस ९.३३–३७)

४६† तो चेलाहुंण का माय इनी बात
पे बिवाद होवा लाग्यो के हमारा माय
कुंण सगळा से मोटो हे। ४७तो ईसु ने
या जाणी के के वी अपणा मन माय
कंई सोंची र्‌या हे, एक बाळक के लई के
अपणा कने उबाड़्यो। ४८† अने उणकासे
क्यो, "जो कइंका इना बाळक के म्हारा
नाम से माने उ म्हारे माने। अने जो
म्हारे माने उ परमेसर के माने जेने म्हारे
मोकल्यो, क्योंके जो तमारा माय सगळा
से छोटो उज सगळा से मोटो हे।"

जो हमारा बिरोद माय हयनी उ हमारा आड़ी हे

(मरकुस ९.३८–४०)

४९तो योहन ने क्यो, "हे मालेख, हमने
एक मनख के थारा नाम से बायरबादाहुंण
के हेड़ता देख्यो अने उके रोकवा की
कोसिस करी, क्योंके उ हमारा गेले रई
के थारा पाछे नी चले।"
५०पण ईसु ने उणकासे क्यो, "उके
रोको मती, क्योंके जो तमारा बिरोद माय
हयनी उ तमारा आड़ी हे।"

सामरिहुंण ने ईसु के नकार्‌यो

५१फेर असो होयो के जदे ईसु का
सरग जावा का दन कने आवा लाग्या
तो उने यरुसलेम जावा को पक्को-इरादो
कर्‌यो। ५२अने उने अपणा दूत मोकल्या।
के वी सामरिहुंण का एक गांम भित्तरे
जई के उका सरु तय्यारी करे। ५३पण
सामरिहुंण ने उकी मान-मनावर नी करी
क्योंके उ यरुसलेम आड़ीज चल्यो जई
र्‌यो थो। ५४† जदे उका चेला माय से

† **९.४६:** लूका २२.२४ † **९.४८:** मत्ती १०.४०; लूका १०.१६; योहन १३.२०
† **९.५४:** २ राजा १.९-१६

याकूब अने योहन ने यो देख्यो तो क्यो,
"हे परभु, कंई तू चावे के हम यो हुकम
दां के असमान से भस्ते पड़े अने उणके
भसम करी लाखे?"[e]
५५पण ईसु ने मुड़ी के उणके डांट्यो।
[अने क्यो, "कंई तम नी जाणो के तम
कसी आतमा का हो?" ५६हूं मनख को
बेटो मनखहुंण की आतमाहुंण के नास
करवा नी बल्के उणको उध्दार करवा
आयो हूं।"] अने वी दूसरा नगर आड़ी
चल्या ग्या।

ईसु का पाछे चलवा को मोल

(मत्ती ८.१९-२२)

५७जदे वी बाट माय चल्या जई र्‌या
था तो कइंका ने उकासे क्यो, "तू जां जां
जाय हूं थारा पछड़े चलुंवां।"
५८ईसु ने उकासे क्यो, "व्यागसळी
की मांद अने असमान का पखेरुहुंण का
घोंसळा रे हे, पण हूं मनख का बेटा सरु
माथो धरवा सरु बी कइंकी जगा हयनी।"
५९उने कइंका दूसरा से क्यो, "म्हारा
पाछे चल।"
पण उने क्यो, "म्हारे पेलां जावा दे के
हूं म्हारा पिताजी का गेले जदत्तक उ मरे
हयनी रूं।"
६०पण उने उकासे क्यो, "मुरदाहुंण के
मुरदा गाड़वा दे![f] अने तू अई के परमेसर
का राज को सगळी जगा परचार कर।"
६१[†] फेर कइंका दूसरा ने बी क्यो,
"हे परभु, हूं थारा पाछे चलुंवां, पण
पेलां जावा दे के घर आळा से बिदई
लइ-यउं।"
६२पण ईसु ने उकासे क्यो, "कइंको बी
मनख जो अपणो हात हळ पे धरवा का
बाद पाछे फरिके देखे, परमेसर का राज
का लायक हयनी।"

ईसु ने सत्तर चेलाहुंण के मोकल्या

१० इका बाद परभु ने दूसरा बहत्तर[g]
मनख के तेड़्या अने उने अपणा
अगड़े-अगड़े दो-दो करिके हर नगर
अने जगा आड़ी मोकल्या जां उ खुदी
जावा वाळो थो। २[†] उने उणकासे क्यो,
"फसल तो नरी उबी, पण मजुर्‌याहुंण
की कमकोती हे। तो खेत का मालेख
से बिणती करो के उ अपणा खेत माय
मजुर्‌याहुंण मोकले। ३[†] जाव! देखो
हूं तमारे मेमणाहुंण जसा बरगड़ाहुंण
का माय मोकली र्‌यो हूं। ४[†] अपणा
गेले नी तो बटवो, नी झोळो अने नी
पन्निहुंण राखो, अने रस्ता माय कइंका
के परणाम बी मती करो। ५जेना घर
भित्तरे जाव, पेलां कई दो, 'इना घर
माय सांती बणी रे।' ६अगर वां कई
को सांती का लायक होय तो तमारी
सांती उका पे बणी रेगा, नी तो तमारा
कने वा सांती पाछी अई जायगा। ७[†]

---

[e] **९.५४** थोड़ाक मूळ माय इके जोड़्यो हे असो एलियाह ने कर्‌यो थो। [f] **९.६०** मुरदाहुंण के मुरदा गाड़वा दे !; या "पिताजी का गेले रेवा से अच्छो हे के तू म्हारा गेले-गेल चल्यो-चल"।

[g] **१०.१** 72; बहत्तर; थोड़ाक मूळ माय असो हे ७०।

[†] **९.६१:** १ राजा १९.२० [†] **१०.२:** मत्ती ९.३७–३८ [†] **१०.३:** मत्ती १०.१६

[†] **१०.४–११:** मत्ती १०.७–१४; मरकुस ६.८–११; लूका ९.३–५

[†] **१०.७:** १ कुरिन्थिहुंण ९.१४; १ तीमुथियुस ५.१८

उणाज घरे रो, अने जो कंई वी तमारे
दे उकेज खाव अने प्यो, क्योंके मजुर्या
के मजुरी जरुर मिळनी चावे। घरे-घर
मती फर्या करो, ८जेना नगर माय बी
जाव, जदे वी तमारी आव-भगत करे
तो जो कंई तमारा सामे धर्यो-जाय
उज खाव। ९वां जो बेमार रे उणके नज
करो, अने उणकासे को, के परमेसर को
राज तमारा कने अई ग्यो। १०[†] पण
जेना नगर माय तम जाव अने लोग
तमारी आव-भगत नी करे तो उणकी
सेरी-गळिहुंण माय जई के को, ११'तमारा
बिरोद माय हम नगर का उना धूळा
के जो हमारा पग माय चोंटी ग्यो हे,
झटकारी र्‌या हे। फेर बी यो पक्को
जाणी लो के परमेसर को राज कने अई
ग्यो हे।' १२[†] हूं तमार से कूं के उना
दन जदे परमेसर न्याव करेगा सदोम
नगर की दसा उना नगर से कइंज बड़ी
के सेणे लायक रेगा।"

तीन नगर माय का लोगहुंण ने पसतावो नी कर्‌यो

(मत्ती ११.२०-२४)

१३[†] "हे खुराजीन नगर, हे बेतसेदा
नगर तमार पे हाय। जो अचरज भर्‌या
काम तमारा माय कर्‌या ग्या सूर अने
सेदा नगर माय कर्‌या जाता तो - टाट
ओड़ी के अने राखोड़ा पे बेठिके[h] कदका
मन बदळी लेता। १४पण न्याव का दन
सूर अने सेदा नगर की दसा तमार से
कइंज जादा सेणे लायक रेगा। १५[†] हे
कफरनहूम नगर, तू कंई सरग तक
अदरे उठाड़्यो जायगा? तू तो नरक
तक निच्चो कर्‌यो जायगा!

१६[†] तो उने चेलाहुंण से क्यो, "उ
जो तमारी सुणे, उ म्हारी सुणे। अने
जो तमारे ओछो जाणे उ म्हारे ओछो
जाणे। अने जो म्हारे ओछो जाणे उ
परमेसर के ओछो जाणे जेने म्हारे
मोकल्यो।"

बहत्तर चेलाहुंण आनन्द करता होया पाछा आया

१७वी बहत्तर[i] हंसी-खुसी माय पाछा
आया अने केवा लाग्या, "हे परभु यां
तक के बायरबादाहुंण बी थारा नाम से
हमारा बस माय हे।"

१८तो ईसु ने उणकासे क्यो, "हूं
सेतान के गाज सरीको असमान से
धरती पे पड़तो देखी र्‌यो थो। १९[†] देखो,
म्हने तमारे सरपहुंण अने बिच्छुहुंण के
डोंचवा अने सेतान जसा दुसमन की
सगळी सामरत पे हक द्‌यो हे। तो
कई को तमारे नुकस्यान नी पोंचायगा।
२०फेर बी इनी बात से खुस मती होव
के बायरबादाहुंण तमारा बस माय हे,
पण इनी बात से खुस रो के तमारा

---

[h] **१०.१३** टाट ओड़ी के अने राखोड़ा पे बेठिके; दुःख परगट करवा को एक तरीको। [i] **१०.१७** बहत्तर; मूळ माय ७० (१ आयत देखो)।

[†] **१०.१०–११:** परेरितहुंण १३.५१ [†] **१०.१२:** उत्पत्ती १८.१६-१९.१-२१

[†] **१०.१३:** यसायाह २३.१–१८; यहेजकेल २६.१—२८.२६; योएल ३.४–८; आमोस १.९–१०; जकरियाह ९.२–४

[†] **१०.१५:** यसायाह १४.१३–१५ [†] **१०.१६:** मत्ती १०.४०; मरकुस ९.३७; लूका ९.४८; योहन १३.२०

[†] **१०.१९:** भजन संहिता ९१.१३

नाम परमेसर ने सरग माय लिख्या
हे।"

ईसु को आनन्द

(मत्ती ११.२५-२७; १३.१६-१७)

२१उनीज घड़ी उ पवित्तर आतमा माय[j]
घणो खुस होयो, अने उने क्यो, "हे
पिता, सरग अने धरती का परभु, हूं थारी
इसतुती करूं के तने अकलमंदहुंण अने
ज्ञानवानहुंण से इनी बातहुंण के छिपाड़ी
राखी पण बाळकहुंण पे परगटी हे। हां, हे
पिता, योज थारे भायो।"

२२† तो ईसु लोगहुंण से केवा लाग्यो,
"म्हारा पिता ने म्हारे सगळो-कंई दई
द्यो हे। सिरप पिता का अलावा कईं
को नी जाणे के हूं बेटो कुंण हूं, अने
सिरप हूं बेटा का अलावा कईं को नी
जाणे के पिता कुंण हे। अने सिरप
उज जाणे जेका पे हूं खुद परगट
करनों चउं।"

२३तो चेलाहुंण आड़ी फरिके उने
उणकासे छाने से क्यो, "धन्य हे वी
आंखहुंण जो इनी बातहुंण के देखे,
जिणके तम देखो हो, २४क्योंके हूं तमार
से कूं के तम जेनी बातहुंण के देखो
हो उणके नरा नबिहुंण अने राजाहुंण ने
देखणो चायो पण नी देख्यो, अने उनी
बातहुंण के सुणनो चायो जिणके तम
सुणो हो पण नी सुण्यो।

म्हारो पड़ोसी कुंण?

२५† देखो, मूसा का नेम-बिधान को
एक जाणकार उठ्यो अने यो कई के ईसु
के परखवा लाग्यो, "हे गरु, हमेस्या का
जीवन को हक पावा सरु हूं कंई करूं?"

२६ईसु ने उकासे क्यो, "मूसा का नेम-
बिधान माय कंई लिख्यो हे? तू कसे
बांची के समजे?"

२७† उने जुवाब द्यो, "तू परभु अपणा
परमेसर से अपणा सगळा हिरदा, सगळा
पराण, सगळी सामरत, अने सगळी बुध्दि
से परेम राख अने अपणा पड़ोसी से
अपणा सरीको परेम राख।"

२८† तो उने उकासे क्यो, "तने अच्छो
जुवाब द्यो। योज कर तो तू जीवतो
रेगा।"

२९पण उने खुद के सई ठेरावा सरु ईसु
से पुछ्यो, "म्हारो पड़ोसी कुंण?"

३०ईसु ने जुवाब द्यो, "एक मनख
यरुसलेम से यरीहो नगर आड़ी जई र्यो
थो, के उ डकेतहुंण ने घेरिल्यो। उणने
उके नांगो-पुंगो करी लाख्यो, मार्यो
कुट्यो अने अधमर्यो करिके चल्या ग्या।
३१संजोक से एक पुरोहित उनी बाट जई
र्यो थो अने जदे उने उके देख्यो तो
कतरई के चल्यो ग्यो। ३२असीज तरा
एक लेवी[k] पंडित बी वय्यांड़ी से हिट्यो
अने मुन्डो फेरी के चल्यो ग्यो। ३३† पण

---

[j] **१०.२१** पवित्तर आतमा माय; मूळ माय असो आतमा माय; दूसरी जगा उकी आतमा माय।

[k] **१०.३२** लेवी; याकूब का बारा बेटाहुंण माय से एक, यो परवार मन्दर माय पुरोहित की मदद करवा वाळो।

† **१०.२२:** योहन ३.३५, १०.१५ † **१०.२५–२८:** मत्ती २२.३५–४०; मरकुस १२.२८–३४

† **१०.२७:** नेम-बिधान ६.५ लेव्यव्यवस्था १९.१८ † **१०.२८:** लेव्यव्यवस्था १८.५

† **१०.३३–३४:** २ इतयास २८.१५

एक सामरी[1] बी जो जातरा करी र्‌यो थो वां अई ग्यो। जदे उने उके देख्यो तो दया से भरी ग्यो। [३४]उने कने जई के उका घावहुंण पे तेल अने दाखरस रेड़ी के उणका पे पाटा बान्द्‌या। अने उके अपणी सवारी पे चड़ई के सराय माय लइ-यायो जां उने उकी सेवा-चाकरी करी। [३५]दूसरा दन उने दो चांदी का सिक्का हेड़ी के सराय वाळा के दई ने क्यो, 'इकी सेवा-चाकरी करजो। इका से बत्ती जो खरचो आय, हूं पाछो आवा पे चुकई दूंवां।' "

३६तो ईसु ने नेम-बिधान का जाणकार से क्यो, "थारा बिचार से इना तीनीज माय से उना मनख को पड़ोसी कुंण परमाणित होयो जो डकेतहुंण का हत्ते चड़ी ग्यो थो?"

३७उने क्यो, "उज जेने उका पे दया करी।"

ईसु ने उकासे क्यो, "जा, तू बी असोज कर।"

ईसु, मारथा अने मरियम का घरे

३८[†] जदे ईसु अने उका चेलाहुंण चल्या जई र्‌या था तो उ एक गांम माय दाखल होयो, अने मारथा नामकी एक बइरा ने उके अपणा घरे ठेराड़्यो। [३९]उकी एक बेन थी जेको नाम मरियम थो जो परभु का पग कने बेठिके उको बचन सुणी री थी। [४०]पण मारथा सेवा करी-करिके चिड़ी उठी अने उने उणका कने अई के क्यो, "हे परभु, कंई थारे फिकर हयनी

मरियम अने मारथा (LUK १०.३९)

के म्हारी बेन ने सेवा-चाकरी सरु म्हारे एखली छोड़ी राखी हे? उकासे कइदे के वा म्हारी मदद करे?"

४१पण परभु ने जुवाब द्‌यो, "मारथा, अरे मारथा! तू नरी बातहुंण सरु फिकर करे अने घबरई री हे। [४२]पण सांची माय एकज बात जरुरी हे, अने मरियम ने उना खास हिस्सा के छांटी ल्यो, जो उकासे छुड़ायो नी जायगा।"

परभु की पराथना

(मत्ती ६.९-१३; मरकुस ७.७-११)

११ फेर असो होयो के ईसु कइंकी जगा पे पराथना करी र्‌यो थो। जदे उ पराथना करी चुक्यो तो उका चेलाहुंण माय से कइंका एक ने उकासे क्यो, "हे परभु, जसे योहन ने अपणा चेलाहुंण के पराथना सीखाड़ी, तू बी हमारे सीखाड़।"

---

1 **१०.३३** सामरी; यहूदी इणकासे नफरत करता था क्योंके सामरी लोगहुंण निच्ची जात का था।

† **१०.३८–३९:** योहन ११.१

२उने उणकासे क्यो, "जदे तम पराथना
करो तो को:
'हे पिता,
थारो नाम पवित्तर माने जावे,
थारो राज आय।
³ हमारे दन-भर का रोटा[m] हर दन
द्या कर
⁴ हमारा पापहुंण के मांफ कर,
क्योंके हम बी अपणा हर
कसुरवार के मांफ करां हे।
अने हमारे अजमाइस माय मती
लाख।' "

५ईसु ने उणकासे क्यो, "मानी लो
तमारा माय से कइंका एक को दोस रे,
अने उ आदी रात माय अई के, 'हे दोस,
म्हारे तीन रोटाहुंण दई दे; ⁶क्योंके म्हारो
एक दोस जातरा करतो होयो म्हारा कने
आयो हे, अने उके खवाड़वा सरु म्हारा
कने कइंज हयनी।' ⁷पण दोस भीत्तर से
जुवाब दई के, के 'म्हारे मती सताड़;
कमांड़ लागी चुक्यो अने म्हारा बाळकहुंण
म्हारा गेले बिछावणा पे हे। हूं उठी के
थारे कइंज नी दई सकूं।' ⁸हूं थार से कूं,
हालाके दोस होवा की वजासे उ नी उठे
अने उके कइंज नी दे, फेर बी उकी घणी
याचना करवा पे उ उठी के जितरी उके
जरुवत हे दई देगा।

९"हूं तमार से कूं, मांगो तो तमारे
मिळेगा; ढुंडो तो तमारे लादेगा;
खटखटाड़ोगा तो तमारा सरु खोल्यो
जायगा। ¹⁰क्योंके जो कईं को मांगे,
उके मिळे; अने जो ढुंडे, उ पाय; अने
जो खटखटाड़े उका सरु खोल्यो जायगा।
¹¹तमारा माय से कुंण असो बाप रेगा के
जदे उको बेटो मच्छी मांगे तो मच्छी
का बदळा माय सरप दे? ¹²या इण्डो
मांगे तो उके बिच्छु दे? ¹³तो जदे तम
बुरा हुई के अपणा बाळकहुंण के भली
चीजहुंण देणो जाणो, तो तमारो सरग
पिता उणके जो उकासे मांगे हजु पवित्तर
आतमा कायसरु नी देगा?"

बायरबादा के हेड़वा वाळो ईसु

(मत्ती १२.२२-३०; मरकुस ३.२०-२७)

१४फेर ईसु एक बायरबादा के हेड़वा
लाग्यो जो गुंगी थी। अने असो होयो के
जदे बायरबादा हिटी गी तो गुंगो बोलवा
लाग्यो। अने भीड़ के घणो अचरज होयो।[n]
¹⁵† पण उणका माय से थोड़ाक ने क्यो,
"उ तो बायरबादाहुंण के बालजबूल याने
बायरबादाहुंण का परधान की मदद से
हेड़े हे।"

१६† दूसरा थोड़ाक लोगहुंण ने उके
अजमाणे सरु उकासे असमान की
एक निसाणी मांगी। ¹⁷पण उ उणका
बिचारहुंण के जाणतो थो! तो उणकासे
क्यो, "जेना राज माय एको नी रे उ
उजड़ी जाय, अने जेना घरे एको हयनी
उ नास हुई जाय। ¹⁸अगर सेतानीज
खुद अपणो बिरोदी हुई जाय तो उको

[m] **११.३** दन-भर का रोटा; या हमारी जरुवत का मुजब भोजन या दूसरा दन सरु भोजन।

[n] **११.१४** घणो अचरज होयो; क्योंके लोगहुंण मानता था के जो अचरज का काम करे उके बायरबादाहुंण को नाम जाणे हे। पण यो गुंगो थो तो ईसु बायरबादा को नाम नी पुछी सकतो थो। फेर बी ईसु ने उना मनख माय से बायरबादा हेड़ी लाखी।

† **११.१५:** मत्ती ९.३४, १०.२५ † **११.१६:** मत्ती १२.३८, १६.१; मरकुस ८.११

राज कसे ठेरी सके? क्योंके तम गलत
को हो के हूं बालजबूल की मदद से
बायरबादाहुंण के हेड़ुं हूं। [१९]तो अगर हूं
बालजबूल की मदद से बायरबादाहुंण के
हेड़ुं तो तमारा चेलाहुंण केकी मदद से
हेड़े हे? इकासरु वीज तमारा न्यावी रेगा
के तम सई हो के गलत। [२०]पण हूं
परमेसर की मदद से बायरबादाहुंण हेड़ुं,
तो परमेसर को राज तमारा कने अई
ग्यो हे।

२१"जदे एक ताकतवर मनख सगळा
हतियार बान्दी के अपणा घर को नेपो
करे तो उकी सम्पत्ती बची रे। [२२]पण जदे
उकासेज ताकत वाळो कईं को मनख
उका पे चड़ई करिके उके हरई के, अने
उका सगळा हतियार जिणका पे उके
भरोसो थो छुड़ई ले, अने धन-सम्पत्ती
लुटी के बांटी लाखे हे।

२३† "उ जो म्हारा गेले हयनी म्हारो
बिरोदी हे, अने उ जो म्हारा गेले परमेसर
सरु लोगहुंण के भेळा नी करे, उ परमेसर
से दूरो करे हे।

बायरबादा को पाछो आणो

(मत्ती १२.४३-४५)

२४"जदे बायरबादा मनख माय से हिटे
हे तो अराम की तलास सरु सुनसान
जगा से हुई ने निकळे। जदे उके कइंकी
जगा नी मिळे तो के हे, 'हूं जेना घर से
हेड़ी गी थी उका मायज पाछी जउंवां।'
[२५]जदे वा वां पोंची तो उके झाड़्यो-
बुखार्‌यो अने सज्यो पायो। [२६]तो वा
अपणा सेज बुरी सात हजु बायरबादाहुंण
के अपणा गेले लइ-याय हे अने उका
माय भरई के बसी जावे। अने उना मनख
की पाछली दसा पेलां से बी बुरी हुई
जावे!"

उ जो सांची माय खुस हे

२७असो होयो के जदे उ या बात
कइंज र्‌यो थो तो भीड़ माय से एक
बइरा ने जोर से हेलापाड़िने उकासे
क्यो, "धन्य हे थारी वा मेतारी जेका
गरभ माय तू र्‌यो अने जेको दूद तने
धायो।"

२८पण उने क्यो, "इका बदळे धन्य हे
वी जो परमेसर का बचन सुणे अने उके
पाळे हे।"

लोगहुंण के अचरज की सेलाणी की चायना

(मत्ती १२.३८-४२)

२९† जसी-जसी भीड़ बड़्या जई री थी
उ केवा लाग्यो, "या बुरी पीड़ी हे क्योंके
या अचरज की सेलाणी की हेर माय रे,
फेर बी इके योना नबी का अलावा कइंकी
दूसरी सेलाणी नी दई जायगा। [३०]† जसो
योना नीनवे म्हानगर का लोगहुंण सरु
सेलाणी बण्यो° असोज हूं मनख को बेटो
बी इनी पीड़ी का लोगहुंण सरु बणुंवां।

° **११.३०** योना नीनवे म्हानगर का लोगहुंण सरु सेलाणी बण्यो; योना तीन दन तक मच्छी का पेट माय र्‌यो, अने उके बाद योना ने नीनवे जो म्हानगर थो परचार कर्‌यो (योना ३.४,५)। उकाज सरीको तीन दन तक कबर माय रई के ईसु जीवतो हुई जायगा; यो साबित करवा सरु के परमेसर की सामरत ईसु का साते हे जेने परचार कर्‌यो।

† **११.२३:** मरकुस ९.४० † **११.२९:** मत्ती १६.४; मरकुस ८.१२ † **११.३०:** योना ३.४

३१† दक्खणव दिसा की राणी न्याव का
दन इनी पीड़ी का लोगहुंण का गेले
उबी हुई के उणका पे आरोप लगाड़ेगा,
क्योंके वा धरती का छोर से सुलेमान
को ज्ञान सुणवा अई, पण देखो, यां उ
हे जो सुलेमान से बी मोटो हे। ३२†
न्याव का दन नीनवे का लोग इनी पीड़ी
का लोगहुंण का गेले उबी के उणका पे
आरोप लगाड़ेगा, क्योंके उणने योना को
परचार सुणी के मन बदळ्यो, अने देखो,
यां उ हे जो योना से बी मोटो हे।

काया को उजाळो

(मत्ती ५.१५; ६.२२-२३)

३३† "कइंको दीयो बाळी के तळघर
माय नी धरे, नी टोपली का निच्चे राखे,
पण उके दीवट पे राखे के आवा वाळा के
उजाळो मिळे।[p] ३४थारी काया को दीयो
थारी आंख हे। जदे थारी आंख सुद्द हे तो
थारी काया बी पूरण तरा उजळी रे, पण
जदे वा बुरी हे तो थारी काया बी पूरण
तरा इन्दारी हुई जावे हे। ३५तो होसियार
रो के उजाळो इन्दारो नी बणी जाये।
३६इकासरु अगर थारी पूरण काया उजाळा
से उजळी रे अने कइंकाज हिस्सा माय
इन्दारो नी रे तो उ पूरो वसोज उजळो
रेगा, जसतरा दीयो, जसो दीयो अपणा
उजाळा से थारे उजाळो दे हे।[q]

ईसु ने छेः; कारण बताड़्या यहूदिहुंण का धारमिक नेताहुंण के सजा देवा का

(मत्ती २३.१-३६; मरकुस १२.३८-४०)

३७जदे ईसु ने बोलनो खतम कर्‌यो तो
एक फरीसी ने उके अपणा गेले जिमवा
सरु नोत्यो। उ भित्तरे जई के जिमवा
सरु बेठ्यो। ३८ईसु रीति मुजब जिमवा से
पेलां सांपड़्यो हयनी इकासरु फरीसी ने
यो देख्यो तो उके अचरज होयो। ३९पण
परभु ने उकासे क्यो, "हे फरीसिहुंण, तम
कटोरा अने परात के बायरे से तो मांजो
हो, पण तमारा भित्तरे डाकूपणो अने बुरई
भरी हे। ४०हे मूरखहुंण, जेने बायरे को
हिस्सो बणायो, तो कंई उने भित्तरे को
हिस्सो नी बणायो? ४१पण जो भित्तरे
को हे उके दान करी दो तो तमारा सरु
सगळो कंई सुद्द हुई जायगा।[r]
४२† "पण हे फरीसिहुंण, तमार पे हाय!
क्योंके तम पोदिनो अने सुदाब अने नरी-
तरा का साग-पातहुंण को दसवों हिस्सो
तो दो पण न्याव अने परमेसर का परेम
के टाळी लाखो हो। होणो तो यो थो के
इणके बी करता रेता अने उणके बी नी
टाळता।
४३ "हे फरीसिहुंण, धिक्कार हे तमार
पे! क्योंके तमारे पराथनाघरहुंण माय
सामे की जगा माय बेठणो अने हाट-

---

[p] **११.३३** उजाळो मिळे; यूनानी माय सच्चई मिळे। [q] **११.३४-३६** उजाळा; ईसु को इना उजाळा का मिसाल से यो अरथ हे के, अगर मनख को बिसास ईसु का परबचन पे हे तो उकी आखी जिनगी माय उजाळो अने सच्चई रे हे। [r] **११.४१** सगळो कंई सुद्द हुई जायगा; तमारा हिरदा माय गरीब-गुरबा सरु परेम से मदद करवा को भाव रे तो तमारी आखी काया साफ रेगा, अने परमेसर बी मानेगा।

† **११.३१:** १ राजा १०.१–१०; २ इतयास ९.१–१२ † **११.३२:** योना ३.५

† **११.३३:** मत्ती ५.१५; मरकुस ४.२१; लूका ८.१६ † **११.४२:** लेव्यव्यवस्था २७.३०

बजार माय मान भर्‌यो परणाम भलो
लागे हे। ४४धिक्कार तमार पे! क्योंके
तम उण नगे नी आवा वाळी कबर[s]
सरीका हो, जिणका पे मनख अण्जाण्या
माय चल्या-फिरे।"
४५तो नेम-बिधान का जाणकारहुंण
माय से एक ने जुवाब द्‌यो, "हे गरु,
असो कई के तू हमारोज मान पाड़े हे।"
४६पण उने क्यो, "धिक्कार हे तम
नेम-बिधान का जाणकारहुंण पे! क्योंके
तम मनखहुंण के असा बजन से दबाव,
जेके उठाड़णो अबगो हे हालाके तम खुद
उना बजणहुंण के अंगळी लगाणो नी
चावो। ४७धिक्कार तमार पे! क्योंके तम
उण नबिहुंण की कबर बणाव जिणके
तमाराज पूरखाहुंण ने मारी लाख्या था।[t]
४८इकासरु तमीज गवा हो अने अपणा
पूरखाहुंण का काम से तम राजी हो।
क्योंके उणने तो उणके मारी लाख्या
था अने तमने उणकी कबरहुंण बणई।
४९इनी वजासे परमेसर की बुध्दि ने क्यो,
'हूं उणका कने नबिहुंण अने परेरितहुंण
के मोकलुंवां, उणका माय से थोड़ाक के
मारी लाखेगा अने थोड़ाक के सताड़ेगा।'
५०जेकासे के जगत का सुरु सेज जितरा
नबिहुंण को लोई बिवाड़्यो उको लेखो
परमेसर इनी पीड़ी का मनखहुंण से
लेगा। ५१याने हाबिल का लोई[†] से लई
के तो जकरियाह का लोई तक को लेखो,
जेकी हत्या परमेसर का भवन अने बेदी
का बीच माय करी गी थी। हां, हूं कूं के,
इनी पीड़ी का मनखहुंण से लेखो ल्यो
जायगा।
५२"धिक्कार हे तम नेम-बिधान का
जाणकारहुंण पे! क्योंके तमने परमेसर
का ज्ञान की कुन्ची छुड़ई ली। तम खुद
तो भित्तरे नी ग्या अने जो जावा की करी
र्‌या था उणके बी रोक्या।"
५३जदे उ वां से चल्यो ग्यो तो फरीसी
अने सासतरी काठा बिरोद करता होया
नरी बातहुंण का बारामें उकासे बारीकी
से सवाल करवा लाग्या, ५४अने उका सरु
कुचक्कर रचवा लाग्या के उकाज मुन्डा
की बात से उके फांसे।

ढोंगी मती बणो

(मत्ती १०.२६-२७)

१२ [†] असा हाल माय जदे हज्जारों
लोगहुंण की बड़ीमेक भीड़ भेळी
हुई गी थी, यां तक के वी एक दूसरा का
अदरे पड़ी र्‌या था तो सगळा से पेलां
उने अपणा चेलाहुंण से केणो सुरु कर्‌यो,
"फरीसिहुंण का खमीर याने उणका कपट
से होसियार री जो। २[†] जो कइंज ढांक्यो
होयो हे उ खोल्यो जायगा। अने जो कंई
छिप्यो हे उ जाण्यो जायगा। ३इकासरु
जो कंई तमने इन्दारा माय क्यो, उ
उजाळा माय सुण्यो जायगा, अने जो कंई

---

[s] **११.४४** नगे नी आवा वाळी कबर; अदरे से बरोबर, याने मनख बायरे से तो भलो पण भित्तरे खराब जसे के कबर। [t] **११.४७** तमाराज पूरखाहुंण ने मारी लाख्या था; यहूदिहुंण नबिहुंण की कबर तो अच्छी बणाव अने उणको मान बी राखो, पण सांची माय उणका हुकम के जो परमेसर को हुकम हे, नी माने हे। तो यहूदिहुंण बी अपणा पूरखाहुंण का गेले नबिहुंण के घात करवा माय सेमत हे।

[†] **११.५१:** उत्पत्ती ४.८-२ इतयास २४.२०-२१ [†] **१२.१:** मत्ती १६.६; मरकुस ८.१५

[†] **१२.२:** मरकुस ४.२२; लूका ८.१७

तमने भित्तरे घर माय फुसफुसई के क्यो,
उ छत अदरे से परचार कर्‌यो जायगा!

सिरप परमेसर से डरो

(मत्ती १०.२८-३१)

४"म्हारा दोस सुणो, हूं तमार से कूं,
उणकासे मती डरो जो तमारी काया के
नास करे पण इका पाछे हजु कइंनी करी
सके। ५हूं तमारे चेतउं के किकासे डरणो
चायः उकासे डरो जेके यो हक हे के
मारवा का बाद नरक माय लाखे। हां हूं
तमार से कूं के उकासेज डरो!

६"कंई दो पइसा माय पांच चिरकलिहुंण
नी बिके? फेर बी परमेसर उणका माय
से कइंकी केज नी बिसारे। ७पण सांची
माय तमारा माथा का सगळा बाल बी
गिण्या होया हे। घबराव मती! तम नरी
चिरकलिहुंण से बड़ा मोलका हो।

ईसु की वजासे लजाओ मती

(मत्ती १०.१९-२०, ३२-३३; १२.३२)

८"हूं तमार से कूं जो मनखहुंण का
सामे म्हारे मानी लेगा, हूं मनख को बेटो
बी उके परमेसर का सरगदूतहुंण का सामे
मानी लुंवां। ९पण जो मनखहुंण का सामे
म्हारे नी माने, उके हूं बी परमेसर का
सरगदूतहुंण का सामे नी जाणूंवां।

१०[†] "हूं मनख का बेटा का बिरोद माय
जो एक बी सबद् बोले, उको कसूर मांफ
कर्‌यो जायगा। पण जो पवित्तर आतमा
की निंदा करे हे, उको कसूर मांफ नी
कर्‌यो जायगा।

११[†] "जदे वी तमारे पराथनाघर,
सासकहुंण अने हाकिमहुंण का सामे लई
जाय तो इनी बात की फिकर मती करजो
के अपणे बचने सरु तमारे कसो अने कंई
जुवाब देणो चइये, या कंई केणो चइये,
१२क्योंके पवित्तर आतमा तमारे उनीज
बखत सीखाड़ेगा के कंई केणो चाव हो।"

धणी मूरख

१३भीड़ माय से कइंका ने ईसु से क्यो,
"हे गरु, म्हारा भई से के, के म्हारा
पिताजी का धन के म्हारा गेले बांटी ले।"

१४पण उने उकासे क्यो, "हे भई, केने
म्हारे तमारो न्यावी अने बांटो करावा
वाळो बणायो?" १५तो फेर ईसु ने भीड़
से क्यो, "होसियार! हरतरा का लोभी से
होसियार रो। क्योंके धन की बड़ती होवा
पे बी कइंका को जीवन उका धन का
भरोसे आनन्द से नी चले।

१६तो उने उणके एक मिसाल दई के
क्यो, "धणी मनख की जमीन माय
अच्छी पादरी[u] अई। १७उ अपणा मन
माय यो बिचार करवा लाग्यो, 'हूं कंई
करूं? म्हारा कने गल्लो राखवा सरु तो
जगा हयनी।' १८उने क्यो, 'हूं असो करुंवां
के अपणा भण्डार्‌याहुंण तोड़ी के मोटा
भण्डार्‌याहुंण बणउंवां अने उका मायज
अपणो सगळो गल्लो अने धन धरुंवां।
१९जदे हूं अपणा जीव से कुंवां, 'हे म्हारा
जीव, थारा कने नरा बरसहुंण सरु गंज
धन भर्‌यो हे। चेन कर, खा पी अने
खुसी मना।' २०पण परमेसर ने उकासे

[u] **१२.१६** पादरी; फसल आणो।

[†] **१२.१०:** मत्ती १२.३२; मरकुस ३.२९ [†] **१२.११–१२:** मत्ती १०.१९–२०; मरकुस १३.११; लूका २१.१४–१५

क्यो, 'हे मूरख, आजज रात थारो जीव
थार से लई ल्यो जाय, तो जो कंई तने
भेळो कर्‌यो ऊ केको रेगा?' "
२१ईसु बोल्यो, "असोज ऊ मनख बी हे
जो अपणा बले धन तो भेळो करे पण
परमेसर की नगे माय धणी हयनी।"

परमेसर पे बिसास करो, सांसो मती करो

(मत्ती ६.२५-३४)

२२फेर ऊने अपणा चेलाहुंण से क्यो,
"इनी वजासे हूं तमार से कूं, अपणा जीव
सरु यो कई के सांसो मती करो के हम
कंई खावांगां; नी काया सरु करो के कंई
पेरांगां। [२३]क्योंके जीव भोजन से, अने
काया लतरा से बड़ी के हे। [२४]कागलाहुंण
पे ध्यान धरो, क्योंके वी नी तो बोय,
नी काटे, अने नी ऊणका कने भण्डारा
अने नी गुदाम हे। फेर बी परमेसर ऊणके
खवाड़े हे। तम तो पखेरुहुंण से नरा मोल
का हो! [२५]तमारा माय असो कुंण हे जो
चिंता करिके अपणा जीव के एक घड़ी बी
बड़ई सके[v] हे? [२६]तो अगर तम नानो से
नानो काम बी नी करी सको तो दूसरी
बातहुंण को सांसो कायसरु करो हो? [२७†]
सोसन का रोपाहुंण पे ध्यान धरो के वी
कसे बदे। वी नी तो म्हेनत करे, नी
काटे। पण हूं तमार से कूं के सुलेमान
राजो बी अपणा आखा वेभव माय इणका
माय से कइंका एक का जसा लतरा नी
पेर्‌यो थो। [२८]तो अगर परमेसर चोगान
का चारा के जो आज हे अने काल भाड़
माय झोंक्यो जायगा असो पेराय, तो हे
कमबिसासिहुंण, ऊ तमारे हजु कायसरु
नी पेरायगा।
२९"इनी बात की फिराक माय मती रो,
के हम कंई खावांगां अने कंई पियांगा,
इणका सांसा मेंज मती लाग्या रो।
[३०]क्योंके आखा जगत का अबिसासिहुंण
जो परमेसर के नी जाणे घणा जतन से
इनी सगळी चीजहुंण की तलास माय
लाग्या रे। पण तमारो पिता जाणे के
तमारे इनी चीजहुंण की जरुवत हे। [३१]तो
पेलां ऊका राज के ढुंडो, तो ई सगळी
चीजहुंण बी तमारे दई दी जायगा।

सरग माय धन

(मत्ती ६.१९-२१)

३२"ऐ नाना झुंड, डरे मती! क्योंके
तमारा पिता ने खुस हुई के तमारे राज
देणो चायो। [३३]अपणी धन-सम्पत्ती बेची
के दान करी लाखो। अपणा सरु असा
बटवा बणाव जो जूना नी होय, याने
खतम नी होवा वाळो धन सरग माय
भेळो करो, जां नी तो चोळ्डो कने आय
अने नी ऊके किड़ो लागे। [३४]क्योंके जां
तमारी धन-सम्पत्ती वांज तमारो हिरदो
बी लाग्यो रेगा।

जागता रो मालेख आवा वाळो हे

३५† "तमारी कमर कसी रे, अने तमारो
दीयो बळतो रे। [३६†] ऊना दासहुंण सरीका
बणो जो अपणा मालेख के, जदे ऊ ब्याव
माय जिमवा जई ने पाछो आवे तो

---

[v] **१२.२५** जीव के एक घड़ी बी बड़ई सके; या जीवन के लम्बो करी सके।
[†] **१२.२७:** १ राजा १०.४–७; २ इतयास ९.३–६ [†] **१२.३५:** मत्ती २५.१–१३
[†] **१२.३६:** मरकुस १३.३४–३६

बाट देखता रे के जदे अई के ने कमांड़
खटखटाड़े तो झट खोली दे। ३७धन्य हे
वी दास जिणके मालेख अई के सावधान
पाय; हूं तमार से खास बात कूं के उ
अपणी कमर कसी के उणकी सेवा करेगा
अने उणके जिमवा बेठाड़ेगा अने खुद अई
के परोसेगा। ३८चाय उ आदी राते आय
या परोड़े आवा पे उणके चोकन्ना पाय
तो वी दास धन्य हे। ३९[†] "यो पक्को
जाणो के अगर घर-मालेख जाणी जाय
के चोळडो कां का बखत आयगा तो उ
अपणा घरे खाद नी लगावा देतो। ४०तम
बी तय्यार रो, क्योंके हूं मनख को बेटो
उनी घड़ी अई र्‌यो हूं जेका बारामें तम
सोंचीज नी सको।"

बिसासी अने अबिसासी दास

(मत्ती २४.४५-५१)

४१तो पतरस ने क्यो, "हे परभु, कंई
तू या मिसाल सिरप हमार सेज कई र्‌यो
हे या सगळा मनखहुंण से?"
४२परभु बोल्यो, "असो बिसासी अने
समज वाळो भण्डारी कुंण? उ जेके उको
मालेख अपणा दासहुंण पे हाकिम ठेराय
के, उ उणके ठीक बखत पे सीदो दे।
४३धन्य हे उ मुनीम जेके उको मालेख
जदे उ आय तो असोज करतो पाय। ४४हूं
तमार से खास बात कूं के उ अपणी
सगळी धन-सम्पत्ती पे उके हाकिम
ठेरायगा। ४५पण अगर उ मुनीम अपणा
हिरदा माय यो के हे, 'म्हारो मालेख घणी
देर से आयगा,' अने दासहुंण के मारवा-
कुटवा लागे अने खई-पीके नसा माय चूर
पड़्‌यो रे, ४६तो उना मुनीम को मालेख
उना दन जदे उ बाट बी नी जोय, अने
उनी घड़ी जेके उ नी जाणे, अई जायगा।
अने काठी सजा दई के[w] उके हुकम नी
मानवा वाळा कमबिसासिहुंण का गेले
राखेगा[x]
४७"उ मुनीम, जो अपणा मालेख की
मरजी जाणतो थो, पण जेने तय्यार हुई
के उकी मरजी का मुजब काम नी कर्‌यो
घणी चाबुक खायगा। ४८पण जो सेवक
अपणा मालेख की मरजी नी जाणतो
थो, पण गलती तो करी, तो उके चनिक
मार पड़ेगा। जेके घणो द्‌यो उकासे घणो
मांग्यो जायगा। अने जेके नरो समळायो,
उकासे नरो ल्यो जायगा।

ईसु की वजासे लोगहुंण माय बिरोद

(मत्ती १०.३४-३६)

४९"हूं धरती पे बिरोद की भस्ती
लगावा आयो हूं अने म्हारी घणी मरजी
हे के वा अबी से लागी जाय। ५०[†] पण
म्हारे एक बपतिसमो लेणो हे याने दुःख
उठाड़णो हे। जदत्तक उ पूरण नी हुई जाय
हूं कसी भेम माय पड़्‌यो हूं! ५१तम कंई
सोंची र्‌या, के हूं धरती पे मेळ-मिळाप
करावा आयो हूं? पण हूं तमार से कूं
मेळ-मिळाप नी, पण मुण्डामुण्ड करवा
आयो हूं। ५२क्योंके अब से जेना घर
माय पांच जणा रेगा उणका माय आपसी
बिरोद रेगा, तीन, दो का अने दो तीन
को बिरोद करेगा। ५३[†] वी एक दूसरा का

[w] **१२.४६** काठी सजा दई के; या बायरे फेंकी लाखेगा। [x] **१२.४६** कमबिसासिहुंण का गेले राखेगा; या कमबिसासिहुंण का सजा मिळेगा।
[†] **१२.३९–४०:** मत्ती २४.४३–४४ [†] **१२.५०:** मरकुस १०.३८ [†] **१२.५३:** मीका ७.६

बिरोदी रेगा। बाप बेटा को अने बेटो बाप को, मेतारी बेटी की अने बेटी मेतारी की, सासु बउ की अने बउ सासु की बिरोदी रेगा।"

बखत के अनमोल जाणो

(मत्ती १६.२-३)

५४उने भीड़ से बी क्यो, "जदे तम आथणूं आड़ी बादळा उठता देखो हो तो झट को हो 'बरसात होयगा' अने असोज होय हे। ५५जदे तम दक्खणवी बायरो चलतो देखो तो को हो 'घणो तपेगा' अने असोज होय। ५६हे ढोंगीहुंण! तम धरती अने असमान का रुप माय भेद पाड़ी सको, पण जो काम म्हने कर्या उणका बारामें कायसरु भेद करनों नी जाणो?

बेरी से मिळाप

(मत्ती ५.२५-२६)

५७"अबे तम अच्छो फेसलो कायसरु नी करो हो? ५८जदे तू अपणा बेरी का गेले न्यावलय तक जाय, तो बाट मायज उका गेले समजोतो करवा की कोसिस कर। असो नी होय के उ थारे न्यावधीस का सामे घसीटी के लई जाय अने न्यावधीस थारे सिपई का हात माय दई दे अने सिपई थारे जेळ माय लाखी दे। ५९हूं थार से कूं के समजोतो करी ले नितो जदत्तक तू पई-पई नी चुकई देगा, वां से छुटी नी सकेगा।"

अपणा पाप से फरो नी तो मरोगा

१३ उनीज बखत वां थोड़ासा लोगहुंण अई ग्या था, जिणने उके उना गलीलिहुंण का बारामें बताड़्यो जिणको लोई पिलातुस ने उणकी बलिहुंण का गेलेज मिळई द्यो थो। २ईसु ने जुवाब देतो होयो क्यो, "कंई तम समज्या हो के ई गलीली दूसरा सगळा गलीलिहुंण से जादा पापी था के उणको यो हाल होयो? ३हूं तमार से कूं असो नी हे! पण जदत्तक तम हिरदो नी बदळो तम सगळाज असाज खतम हुई जावगा। ४या, तम समजो हो के वी अठ्ठारा जणा जिणका पे सीलोह को गुमंच रड़क्यो अने कुचई के मरी ग्या, कंई वी यरुसलेम माय रेवा वाळाहुंण से जादा कसुरवार था? ५हूं कूं असो नी, पण जदत्तक तम हिरदो नी बदळो तम सगळाज असाज खतम हुई जावगा।"

अंजीर का झाड़ की मिसाल।

६ईसु या मिसाल देवा लाग्यो: "कइंका मनख ने अंगूर का बगीचा माय एक अंजीर को झाड़ बी लगाड़ी राख्यो थो। उ उका माय फळ ढुंडवा आयो पण उके कइंनी मिळ्यो। ७तो उने मांळी से क्यो, 'देख तो, हूं तीन बरस से इना अंजीर का झाड़ माय फळ ढुंडवा अउं हूं, पण कइंनी लाद्यो। इके काटी लाख! यो यूंज जमीन के घेरी र्‍यो हे।' ८पण मांळी ने उके जुवाब द्यो, 'मालेख, इना बरस बी इके रेवा दे। हूं इका चारी-मेर खोदी के खाद लाखुंवां। ९अगल्या बरस अगर यो फळ दे तो ठीक, नितो इके काटी लाखजे।' "

कुबड़ी बइरा के सुदी करनों

१०ईसु सबत् का दन एक पराथनाघर माय परबचन दई र्‍यो थो। ११देखो, वां एक बइरा जेके अठ्ठारा बरस से एक

बायरबादा ने बेमार करी राखी थी; उकी
कमर नमी गी थी। अने वा कसी तरा
बी सुदी नी हुई सकती थी। [१२]जदे ईसु
ने उके देख्यो तो अपणा कने बुलाड़ी के
उकासे क्यो, "हे नारी, तू अपणी बेमारी
से नज हुई गी।" [१३]जदे उने उका पे
हात धर्‌यो; वा जदेज सुदी हुई गी अने
परमेसर की बड़ई करवा लागी।

१४† तो अराधनालय को हाकिम इनी
बात से रीस माय अई के, के ईसु ने
सबत् का दन बेमार के नज कर्‌यो, भीड़
से केवा लाग्यो, "छेः दन हे जिणका माय
काम करनों चइये, तो उणाज दनहुंण
माय नज होणे आव, पण सबत् का दन
मती आव।"

१५पण परभु ने जुवाब द्‌यो, "हे
ढोंगीहुंण, कंई तमारा माय से हर मनख
सबत् का दन अपणा बेल अने गदड़ा
के खुंटा से छोड़ी के पाणी पिवाड़वा नी
लई जाय? [१६]या नारी तो इबराइम की
बेटी, जेके सेतान ने अठ्ठारा बरस का
लम्बा बखत से बान्दी राखी थी। इके
इना बन्दण से छुड़ाणो कंई सबत् का
दन जरुरी हयनी?" [१७]जदे उने यो क्यो
तो उका सगळा बिरोदी सरमिन्दा होया,
अने आखी भीड़ अचरज का म्हान काम
जो उकासे होता जई र्‌या था, खुस होया।

रंई का दाणा की मिसाल

(मती १३.३१-३२; मरकुस ४.३०-३२)

१८तो उने क्यो, "परेमसर को राज
केका सरीको हे? अने हूं उको मिलाण
किकासे करूं? [१९]उ बळडा का बीज
सरीको, जेके एक मनख ने अपणा
बगीचा माय बोयो। उ बड़ी के झाड़ बणी
ग्यो। अने असमान का पखेरुहुंण ने उकी
डगाळ पे बसेरो कर्‌यो।"

खमीर की मिसाल

(मती १३.३३)

२०फेर उने क्यो, "हूं परमेसर का राज
को मिलाण किकासे करूं? [२१]उ उना
खमीर सरीको हे जेके एक बइरा ने लई
के तीन पसेरी आंटा माय मिळई लाख्यो,
अने आखो आंटोज खमीर हुई ग्यो।

सांकड़ा रस्ता से परमेसर का राज माय जाणो

(मती ७.१३-१४,२१-२३)

२२उ नगर-नगर अने गांम-गांम हुई
के परबचन देतो होयो यरुसलेम जई र्‌यो
थो। [२३]तो कइंका ने उकासे क्यो, "हे
परभु, कंई उध्दार पावा वाळा थोड़ाज
हे?"

ईसु ने उणकासे क्यो, [२४]"सांकड़ा
कमाड़ से भित्तरे जावा की कोसिस करो,
क्योंके हूं तमार से कूं के नरा हे जो
जावा की कोसिस तो करेगा पण सफल
नी रेगा। [२५]एक कावा जदे घर मालेख
उठी के बारनों बन्द करी लाखे। अने
तम बायरे उबा हुई बारनों खटखटाड़ी के
को, 'हे मालेख, हमारा सरु खोली दे।'
तो उ तमार से केगा, 'हूं नी जाणूं के
तम कां से आया हो।' [२६]जदे तम केवा
लागोगा 'हमने थारा सामे खायो-प्यो
अने तने हमारी सेरीहुंण माय परबचन

---

† **१३.१४:** निरगमन २०.९–१०; नेम-बिधान ५.१३–१४

द्यो।' २७† तो उ केगा, 'हूं कूं के हूं नी जाणूं के तम कंय्यांड़ी से अई र्या हो। हे सगळा बुरा करम करवा वाळाहुंण, म्हार से परे हुई जाव।' २८†† जदे तम इबराइम, इसाक, याकूब अने सगळा नबिहुंण के तो परमेसर का राज माय बेठ्या होया, पण अपणे खुद के बायरे निकाळ्या होया देखोगा, जां रोणो अने दांत पिसणो रेगा। २९उगणूं अने आथणूं, धरउ, दक्खणव से परमेसर का राज का भोज माय बिसासी लोग भेळा होयगा। ३०† अने देखो, अबे जितरा पछात्या हे वी अगात्या रेगा, अने अबे जितरा अगात्या हे वी पछात्या रेगा।"

ईसु अने सासक हेरोदेस

(मत्ती २३.३७-३९)

३१ठीक उणाज बखत थोड़ाक फरीसिहुंण अई के उकासे केवा लाग्या, "यां से हिटी जा, क्योंके हेरोदेस थारे मारी लाखणो चावे।"

३२ईसु ने उणकासे क्यो, "उना व्यागसळी सरीका चालाक अने निरदयी मनख से जई के को के हूं आज अने काल बायरबादाहुंण के हेडुं अने बेमारहुंण के नज करूं, अने तीसरा दन म्हारो काम पूरण हुई जायगा। ३३फेर बी म्हारे आज, काल अने परसु जातरा करनों जरुरी हे। क्योंके यो हुई नी सके के कईं को नबी यरुसलेम का बायरे मार्यो जाय!

३४"हे यरुसलेम, हे यरुसलेम, वा नगरी जो नबिहुंण के मारी लाखे, अने जिणके

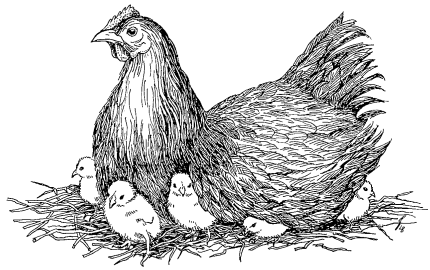

मुरगी का पांख माय चुजाहुंण (LUK १३.३४)

परमेसर ने थारा कने मोकल्या था उणके भाटा मार्या करे! कितरी कावा म्हने चायो के जसे मुरगी अपणा बच्चाहुंण के अपणा पांखड़ा तळे भेळा करे, असाज थारा बाळकहुंण के भेळा करूं, पण तने यो चायो हयनी! ३५† देखो, तमारा मन्दर अने तमारा नगर उजाड़्या जाय! अने हूं तमार से कूं जदत्तक तम कोगा हयनी के 'धन्य हे उ जो परभु परमेसर का नाम से आय हे!' तदत्तक तम म्हारे फेर कदी नी देखोगा!"

ईसु एक मनख के सबत् का दन माय नज करे

१४ फेर असो होयो के सबत् का दन, जदे ईसु फरीसिहुंण का कइंका हाकिम का घरे जिमवा ग्यो, तो वी उकी फिराक माय था। २वइंज उका सामे एक मनख थो जो जळोदर का रोग से परेसान थो। ३ईसु ने नेम-बिधान का जाणकारहुंण अने फरीसिहुंण से क्यो, "सबत् को दन बेमारी से नज करनों ठीक हे के नी?"

---

† **१३.२७:** भजन संहिता ६.८ † **१३.२८:** मत्ती २२.१३, २५.३० † **१३.२८–२९:** मत्ती ८.११–१२
† **१३.३०:** मत्ती १९.३०, २०.१६; मरकुस १०.३१ † **१३.३५:** भजन संहिता ११८.२६; यरमियाह २२.५

४पण वी छाना र्‌या। तो ईसु ने उको
हात पकड़ी के नज कर्‌यो अने जावा
द्‌यो। ५† उने क्यो, "तमारो बेटो या बले
कुंवां माय पड़ी जाय तो तमारा माय
असो कुंण हे के उके सबत् का दन झट
बायरे नी हेड़ी ले?"

६वी इना सवाल को कंई जुवाब नी
दई सक्या।

जो नरम हे परमेसर उको मान करे

७जदे उने देख्यो के पांमणाहुंण कसतरा
अपणा सरु खास खास जगा छांटी र्‌या
हे, तो उ उणके मिसाल दई केवा लाग्यो:
८† "जदे कईं को थारे ब्याव का भोज
माय जिमवा सरु तेड़े तो खास जगा पे
मती बेठजे, कदी असो नी होय के उने
थार से जादा मान-सम्मान वाळा पांमणा
के नोत्यो होय, ९अने उ जेने तमारे दोई
के नोत्यो, अई के थार से के, 'उके
बेठवा दीजे।' तो थारो मान घटी जायगा,
अने थारे सगळा का पछड़े बेठणो पड़ेगा।
१०पण जदे थारे नोत्यो जाय तो जई के
निच्ची जगा पे बेठजे जेकासे जेने थारे
नोत्यो हे, अई के थार से के, 'दोस,
अगड़े अई के बेठ।' तो सगळा की नगे
माय जो थारा गेले बेठ्या थारो मान
बड़ेगा। ११† क्योंके हरेक जो अपणे खुद
के उंचो करे हे, उ निच्चो कर्‌यो जायगा,
अने उ जो अपणे खुद के नरम करे उको
मान राख्यो जायगा।"

१२तो जेने ईसु के नोत्यो थो, उकासे
क्यो, "जदे तू कइंका के दन या रात
माय भोज माय जिमवा सरु बुलाड़े तो
अपणा दोस या भई-बन्द, नातेदार या
धणी पड़ोसिहुंण के मती बुलाड़जे। कंई
असो नी होय के वी बी थारे सारी-सारी
से बुलाड़े, अने थारो बदळो चुकी जाय।
१३पण जदे तू भोज करे तो गरीब-गुरबा,
टुन्डाहुंण, पांगळाहुंण अने आंदा के नोत्या
कर। १४तो थारे आसीस मिळेगा, उणका
कने कईं को असो साधन हयनी के थारी
सारी फेरी दे, पण धरमिहुंण का जी
उठवा पे थारे इको फळ मिळेगा।"

महा-भोज की मिसाल

(मत्ती २२.१-१०)

१५तो उका गेले जिमवा वाळा माय से
एक ने यो सुणी के उकासे क्यो, "धन्य
हे उ जो परमेसर का राज माय रोटा
खायगा।"

१६पण उने उकासे क्यो, "कइंका मनख
ने एक बड़ो भोज कर्‌यो अने उने नरा
लोगहुंण के नोत्या। १७भोज तय्यार होवा
पे उने अपणा सेवक के उना लोगहुंण
कने तेड़वा मोकल्या, जिणके नोत्या
था, 'आव, सगळो कंई तय्यार हुई ग्यो
हे।' १८पण वी सगळा का सगळा मांफी
मांगवा लाग्या। पेलां ने उकासे क्यो,
'म्हने एक खेत मोल ल्यो, तो जई के
उके देखणो जरुरी हे। तो किरपा करिके
म्हारे तो मांफ करी दे।' १९दूसरा ने क्यो,
'म्हने पांच जोड़ी बेल मोल ल्या हे। म्हारे
उणके परखवा जाणो हे। किरपा करिके
म्हारे मांफ करी दे।' २०फेर एक हजु ने
क्यो, 'म्हने ब्याव कर्‌यो तो हूं नी जई
सकतो।'

† **१४.५:** मत्ती १२.११ † **१४.८–१०:** नीतिबचन २५.६–७ † **१४.११:** मत्ती २३.१२; लूका १८.१४

२१"सेवक ने अई के अपणा मालेख के ई बातहुंण बतई। तो घर मालेख ने रीस माय अई के ने दास से क्यो, 'नगर की सेरी-गळिहुंण माय जई के झट गरीब-गुरबा, टुन्डाहुंण आंदा अने पांगळाहुंण के यां ल्याव।' २२तो सेवक ने फेर-पाछो क्यो, 'मालेख, थारा हुकम मुजब कर्‌यो, पण जगा अबी बी बाकी हे।' २३तो मालेख ने क्यो, 'राज मारगहुंण अने बाड़ा आड़ी जई के लोगहुंण के आवा सरु बेबस करी लाखो के म्हारो घर भरई जाय। २४क्योंके हूं तमार से कूं के जो नोत्या ग्या था उणका माय से कइंका म्हारा भोज के नी चाखेगा!' "

चेला बणवा को मोल

(मत्ती १०.३७-३८)

२५जदके बड़ीमेक भीड़ उका गेले जई री थी उने पाछे फरिके लोगहुंण से क्यो, २६[†] "अगर कई्ं को म्हारा कने आय अने अपणा मां-बाप, घराळी, बाळकहुंण अने भई-बेनहुंण के यां तक के अपणा पराण से बी बत्ती म्हार से परेम करे। तोज उ म्हारो चेलो हुई सकतो। २७[†] जो म्हारो चेलो हुई जावे, उ अपणो कुरुस उठई के म्हारा पाछे चले[y] हे।

२८"तमारा माय से कुंण असो जो गढ़ बणाणो चावे पण पेलां बेठिके हिसाब नी लगाड़ी ले के म्हारा कने पूरण करवा सरु पूरो पड़ेगा के नी?' २९नी तो जदे उ नीम लाखी ले अने उके पूरण नी करी सके तो वी जो उके देखी र्‌या हे उकी मजाक उड़ायगा। ३०अने केगा, 'उना मनख ने बणणो तो सुरु कर्‌यो पण पूरो नी करी सक्यो!'

३१"या कुंण असो राजो होयगा जो दूसरा राजा से लड़वा जाय, पण पेलां बेठिके सला नी ले, के 'बीस हज्जार सेनिकहुंण के लई के जो राजो म्हार पे चड़ई करवा अई र्‌यो हे, उको सामो हूं दस हज्जार सेनिकहुंण से करी सकूं के नी?' ३२नितो उकासे दूर रीकेज उ दूतहुंण के मोकली के समजोता की सरतहुंण का बारामें पुछेगा। ३३असतरा तमारा माय से कई्ं को म्हारो चेलो नी हुई सकतो, जदत्तक के उ अपणी सगळी धन-सम्पत्ती के त्यागे हयनी।

चेला अने लूंण

(मत्ती ५.१३; मरकुस ९.५०)

३४"लूंण तो ठीक हे, पण अगर लूंण को सुवाद अळुणो हुई जाय तो उ कां की चीज से सुवाद्‌यो कर्‌यो जायगा? ३५नी तो उ जमीन अने नी खाद का काम आवे, पण लोग उके बायरे फेंकी लाखे। जिणका सुणवा का कान होय वी सुणी ले।"

खोई गाडर की मिसाल

(मत्ती १८.१२-१४)

१५ [†] सगळा कर-वसुळवा वाळा अने पापी ईसु कने अई र्‌या था के

---

[y] **१४.२७** अपणो कुरुस उठई के म्हारा पाछे चले; ईसु को चेलो बणवा सरु मनख अपणो हिरदो बदळे अने अपणी काया के परमेसर का काम सरु मरवा तक तय्यार राखे।

[†] **१४.२६:** मत्ती १०.३७ [†] **१४.२७:** मत्ती १०.३८, १६.२४; मरकुस ८.३४; लूका ९.२३

[†] **१५.१–२:** लूका ५.२९–३०

खोई हुई गाडर (LUK १५.४)

उकी सुणे। २तो फरीसी अने सासतरी
बड़बडई के केवा लाग्या, "यो मनख
पापिहुंण का गेले मिळे-जुळे अने उणका
गेलेज खावे बी हे।" ३तो ईसु ने उणकासे
या मिसाल दई क्यो:
४"तमारा माय से असो कुंण मनख
जेका कने सो गाडर होय अने उणका
माय से एक खोवई जाय, तो निन्याणु
के खुली चरणोई माय छोड़ी के, उनी
खोवई हुई के तदत्तक ढुंडतो नी रे जदत्तक
वा मिळी नी जाय? ५जदे वा उके पई
जाय तो घणी खुसी से कांधा पे उठाड़ी
ले। ६घरे पोंचवा पे उ अपणा दोसहुंण
अने पड़ोसिहुंण के भेळा करिके, के हे
'म्हारा गेले मिळी के खुसी मनाव, क्योंके
म्हारे म्हारी खोवई हुई गाडर मिळी गी।'
७हूं तमार से कूं के असतरा निन्याणु
धरमिहुंण, जिणके मन बदळवा की
जरुवत हयनी उणका बजाय सरग माय
जादा खुसी एक पापी का बारामें रेगा जो
मन बदळे हे।

खोयो सिक्को

८"या कुंण असी बइरा रेगा जेका कने
चांदी का दस सिक्का रे अने एक खोवई
जाय, तो वा दीयो बाळी के अने घर
के संजवारो-बारो काड़ी के तदत्तक ध्यान
से ढुंडती नी रे जदत्तक के उ मिळी नी
जाय? ९जदे उ लादी जाय तो अपणी
सखिहुंण अने पड़ोसिहुंण के भेळा करी ने
के, 'म्हारा गेले खुसी मनाव, क्योंके म्हने
उना खोया होया सिक्का के पई ल्यो हे!'
१०"हूं तमार से कूं के असोज एक मन
बदळवा वाळा पापी सरु बी परमेसर का
सरगदूत का गेले खुसी मनई जाय हे।"

खोयो बेटो अने पिताजी को तरस

११फेर उने क्यो, "कइंका मनख का दो
बेटा था। १२उणका माय जो नानो थो, उने
पिताजी से क्यो, 'पिताजी, धन-सम्पत्ती
को उ हिस्सो जो म्हारा बांटा माय आवे
म्हारे अबे दई दो। अने पिता ने अपणी
धन-सम्पत्ती उणका माय बांटी लाखी।
१३नरा दन नी बित्या था के नानो सगळो
कंई भेळो करिके दूर देस चली पड़्यो, जां
उने अपणो धन बुरा करम माय उजाड़ी
लाख्यो। १४जदे उ सगळो धन उजाड़ी
चुक्यो तो उना देस माय बिखो पड़्यो
अने उ कंगाळ हुई ग्यो। १५अने उ जई
के उना देस का एक जणा का यां काम
पे लागी ग्यो। उने उके खेत माय सुंवर
चरावा मोकल्यो। १६अने उ चातो थो के
उण फळीहुंण से जेके सुंवर खाय उकासे
अपणो पेट भरे; अने उके कई को कइंनी
देतो थो। १७जदे उको होंस ठिकाणे लाग्यो
तो उने क्यो, 'म्हारा पिताजी का कितराज
मजुर्‌याहुंण के पेट भरिके रोटा-पाणी मिळे
पण हूं यां भूके मारी र्‌यो हूं! १८हूं उठी के
अपणा पिताजी कने जउंवां अने उकासे
कुंवां, पिताजी, म्हने सरग का बिरोद अने

उजाड़्यो बेटो (LUK १५.१७)

थारी नगे माय पाप कर्‌यो। [१९]हूं अबे थारो बेटो केवाणे लायक नी र्‌यो; म्हारे अपणो एक मजुर्‌यो समजी के राखी ले।' [२०]तो उ उठी के अपणा पिता आड़ी चली पड़्यो।

"पण जदे अबी उ दूरोज थो उका पिताजी ने उके देख्यो अने उका पे तरस खायो। उने दोड़ी के उके बाद माय भरी ल्यो अने चुम्यो। [२१]बेटा ने उकासे क्यो, 'पिताजी, म्हने सरग का बिरोद अने थारी नगे माय पाप कर्‌यो हे। हूं थारो बेटो केवाणे लायक नी र्‌यो।' [२२]पण बाप ने अपणा दासहुंण से क्यो, 'बड़्या से बड़्या लतरा झट हेड़ी ल्याव अने उके पेराव! अने उकी अंगळी माय बिंटी अने पग माय पन्नी पेराव! [२३]अने एक जाड़्यो बचड़ो लई के काटो के हम खावां, अने खुसी मानावां। [२४]क्योंके म्हारो यो बेटो मरी ग्यो थो, अबे जिन्दो हुई ग्यो हे; यो खोवई ग्यो थो अबे लादी ग्यो!' अने वी खुसी मनाड़वा लाग्या।

२५"उको मोटो बेटो जो खेत पे थो, जदे घर का कने आयो तो उने गाणे-बजाणे की अने नाचवा की अवाज सुणी। [२६]उने एक दास के हेला पाड़ी के पुछ्यो के यो सगळो कंई हुई र्‌यो हे? [२७]उने उकासे क्यो, 'थारो भई आयो हे, अने इकासरु के थारा पिताजी ने उके भलो-चंगो पायो हे तय्यार-जाड़्यो बचड़ो काट्यो।'

२८"पण उके रीस अई अने भित्तरे नी जाणो चातो थो। इका पे उको पिताजी बायरे आयो अने उके मनाड़वा लाग्यो। [२९]पण उने अपणा पिताजी के जुवाब द्यो, 'देख, हूं तमारी इतरा बरसहुंण से सेवा करी र्‌यो अने म्हने कदीज तमारो एक हुकम नी टाळ्यो, पण तमने म्हारे कदीज एक बोकड़ी को बचड़ो तक नी द्यो, के हूं अपणा दोसहुंण का गेले खुसी मनऊं। [३०]पण जदे तमारो यो बेटो आयो जेने तमारो आखो धन बेस्याहुंण माय उड़ई लाख्यो, तमने उका सरु तय्यार-जाड़्यो बचड़ो कटवाड़्यो!' [३१]अने पिताजी ने उकासे क्यो, 'म्हारा बेटा, तू सदा म्हारा गेले रे, अने जो कंई म्हारो हे, उ सगळो थारोज हे। [३२]पण अबे हमारे खुस अने मगन होणो चइये, क्योंके थारो यो भई मरी ग्यो थो, अबे जीवी ग्यो; अने खोवई ग्यो थो, अबे लादी ग्यो हे।

बइमान मुनीम

१६ फेर ईसु चेलाहुंण से बी कई र्‌यो थो, "कइंका धणी मनख को एक मुनीम थो। उना मुनीम का बारामें धणी मनख के बताड़्यो थो के उ थारी सगळी धन-सम्पत्ती उजाड़ी र्‌यो हे। [२]उने मुनीम के बुलाड़ी के क्यो, 'या कसी बात हे, जो हूं थारा बारामें सुणी र्‌यो हूं? अपणा

मुनीम पणा को हिसाब दे, क्योंके अबे तू
मुनीम नी री सकतो।' ३तो उना मुनीम
ने मन माय बिचार्‌यो, 'म्हारो मालेख तो
अबे म्हार से मुनीम पणो छुड़ई र्‌यो हे,
तो अबे हूं कंई करूं? अने म्हारा माय
इतरी ताकत हयनी के खाड़ा खोदी सकूं
अने भीक मांगवा माय बी सरम आवे।'
४तो 'हूं समजी ग्यो के हूं कंई करुंवां
जेकासे के जदे मुनीम पणा से हेड़्‌यो जउं
तो बाद माय लोगहुंण अपणा घरहुंण
माय म्हारो आदर-मान राखे।'
५"तो उने अपणा मालेख का हर
देणदार के तेड़ी के अने पेलां से पुछ्‌यो,
'थार पे म्हारा मालेख को कितरो करजो
हे?' ६उने क्यो, 'सो माणी तेल।'[z] मुनीम
ने उकासे क्यो, 'यो ले अपणो बंई-खातो
अने बेठिके झट पचास मण लिखी दे।'
७फेर उने दूसरा से क्यो, 'तू कितरा को
करजदार हे?' उने क्यो, 'सो माणी गंउ
को।' मुनीम ने उकासे क्यो, 'अपणो बंई-
खातो ले, अने झट अस्सी लिखी दे।'
८"तो उका मालेख ने उना अधरमी
मुनीम की तारीफ करी क्योंके उने
चालाकी से काम कर्‌यो। इना जग का
मनख अपणा सरीका मनखहुंण से बेवार
करवा माय अध्यात्मिक मनखहुंण से
घणा चातर्‌या हे।
९हूं तमार से कूं के जगत का धन से
लोगहुंण की मदद करिके अपणा सरु
दोस बणई लो के जदे जगत को धन
खतम हुई जाय तो परमेसर अने उका
लोगहुंण, तमारो हमेस्या का निवास माय
आव-भगत करेगा। १०जो घणी रजिक
बात माय बिसासी हे, उ नरा माय बी
बिसासी हे, अने जो रजिक बात माय
अधरमी होय उ नरी बात माय अधरमी
रे! ११तो अगर तम जगत का धन माय
बिसासी नी र्‌या तो सरग को सांचो धन
तमारे कुंण समळायगा? १२अगर तम
परायो धन काम माय लावा सरु बिसासी
नी र्‌या तो जो तमारो अपणो हे उके
तमारे कुंण देगा?
१३[†] "कइंकोज दास दो मालेखहुंण की
सेवा-चाकरी नी करी सकतो। उ एक से
घिरणा अने दूसरा से परेम राखेगा नितो
फेर एक से मिळ्‌यो रेगा अने दूसरा को
काम नी करेगा। तम परमेसर अने धन
दोई की सेवा-चाकरी नी करी सकता।"

परमेसर को नेम-बिधान माननो धन से जादा जरुरी

(मत्ती ११.१२-१३; ५.३१-३२; मरकुस १०.११-१२)

१४फरीसिहुंण जो धन का लोभी था,
उकी ई सगळी बातहुंण सुणी र्‌या था
अने वी ईसु के ताणा मारी र्‌या था।
१५उने उणकासे क्यो, "तम असा मनख
हो जो लोगहुंण का सामे अपणे खुद के
धरमी जताड़ो हो, पण परमेसर तमारा
हिरदा के जाणे हे। उ जो मनखहुंण माय
घणो आदर-मान को हे, परमेसर की नगे
माय मानको हयनी।
१६[†] "योहन बपतिसमा देवा वाळा का
बखत तक मूसा का नेम-बिधान, अने
जूना नबिहुंण को परचार होतो र्‌यो। इका

---

[z] **१६.६** सो माणी तेल; ३९५ लीटर।

[†] **१६.१३:** मत्ती ६.२४ [†] **१६.१६:** मत्ती ११.१२–१३

बाद परमेसर का राज को सुब-समिचार
परचार कर्‍यो अने हर कईं को घणी
तेजी से इका आड़ी खिंच्यो चल्यो अई
र्‍यो हे। १७[†] पण मूसा का नेम-बिधान
की एक टिपकी मिटवा का बजाय सरग
अने धरती को टळणो सबगो हे!
१८[†] तो ईसु ने मूसा का नेम-बिधान
माय से क्यो, "हर उ मनख जो अपणी
घराळी के फारकती दई के दूसरी से
ब्याव रचाय, ब्योबिचार करे। अने जो
घराळा से छोड़ी हुई से ब्याव रचाय, तो
उ बी ब्योबिचार करे हे।

धणी मनख अने लाजर

१९तो ईसु ने एक बारता कई, "एक
धणी मनख थो जो हमेस्या बेंगणी लतरा
अने मलमल पेर्‍या करतो थो अने हर
दन बड़ा धूमधाम अने सुक-बिलास से
रेतो थो २०वइंज लाजर नामको एक
गरीब मनख जेकी काया घावहुंण से भरी
हुई थी। लोग उके धणी मनख का बारना
पे छोड़ी जाता था, २१उना धणी मनख की
थाळी से जो चूरो बेरातो थो, उणकासे बी
पेट भरवा सरु तरसतो थो। इका अलावा
कुतरा बी अई ने उका घावहुंण चाट्या
करता था।
२२"असो होयो के उ गरीब मनख मरी
ग्यो अने सरगदूतहुंण ने अई के उके
इबराइम का खोळा माय पोंचई द्‍यो। उ
धणी मनख बी मर्‍यो अने उके लइ-जई
के गाड़ी लाख्यो। २३जदे नरक[a] माय घणी
पीड़ा माय तड़फतो होयो उने नगे उठई
अने दूरा से इबराइम के देख्यो जेका
खोळा माय लाजर थो! २४तो उने हेला
पाड़ी के क्यो, 'हे पिता इबराइम, म्हार
पे द्‍या करिके लाजर के मोकली दे के
उ अपणी अंगळी को नुक्को पाणी माय
भिंजाळी के म्हारी जिबान के ठंडो करी
दे, क्योंके हूं इनी लाय माय पड़्यो तड़फी
र्‍यो हूं।'
२५पण इबराइम ने क्यो, 'हे बेटा,
रियाद कर के तू अपणा जीवन माय
सगळी अच्छी चीजहुंण पई चुक्यो, अने
असोज लाजर खराब चीजहुंण; पण अबे
उ यां सांती पई र्‍यो हे अने तू पीड़ा माय
तड़फी र्‍यो हे। २६इका अलावा हमारा
अने थारा अदाड़ माय एक उन्डी खंची
पड़ी हे के यां से अगर कईं को उना
पार जाणो बी चावे तो जई नी सके,
अने वां से कईं को इना पार हमारा कने
आणो चावे तो अई नी सके।' २७तो उने
क्यो, 'हे पिता, जदे तो हूं थार से कूं के
तू उके म्हारा पिताजी का घरे मोकली
दे, २८क्योंके म्हारा पांच भई हे के, उ
उणके चेतावणी दई दे। कंई असो नी
होय के वी बी इनी पीड़ा लायक जगा
माय आय।'
२९"पण इबराइम बोल्यो, 'उणका
कने मूसा अने नबिहुंण की पोथी हे;
वी उणकीज सुणे।' ३०पण उने क्यो,
'हे पिता इबराइम, असो नी! अगर
मर्‍या माय से कईं को उणका कने
चल्यो जाय तो वी हिरदो बदळेगा।'
३१पण इबराइम ने उकासे क्यो, 'अगर

[a] १६.२३ नरक; या अधोलोक; मर्‍याहुंण की जगा या मर्‍या लोगहुंण को लोक।
[†] १६.१७: मत्ती ५.१८ [†] १६.१८: मत्ती ५.३२; १ कुरिन्थिहुंण ७.१०–११

वी मूसा अने नबिहुंण की नी सुणे
तो वी उकी बी जो मर्‍या माय से
जिन्दो हुई के उणका कने जाय, नी
सुणेगा!' "

पाप की मांफी

(मत्ती १८.६-७,२१-२२; मरकुस ९.४२)

१७ फेर ईसु ने अपणा चेलाहुंण से
क्यो, "जिणकासे लोग भटक्या
करे वी बातहुंण तो होयगाज। पण
धिक्कार उना मनख के, जेकी वजासे वी
होय हे! २उका सरु यो भलो होतो के उका
गळा माय घट्टी को पाटो लटकाड़्यो
जातो अने उ समन्दर माय लाख्यो जातो,

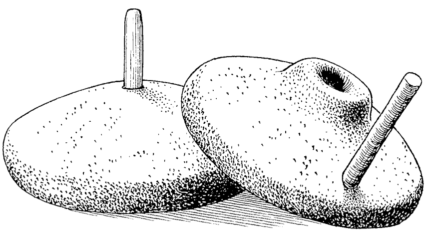

घट्टी (LUK १७.२)

बजाय इका के उ उना नाना माय से
कइंका एक के पाप करवा सरु उकसाड़े।
३† होसियार!
"अगर थारो भई पाप करे तो उके डांट,
अने अगर उ मन बदळे तो उके मांफ
कर। ४अगर उ हर दन सात कावा थारा
बिरोद माय पाप करे अने साती कावा
अई के थार से के, 'हूं पसतावो करूं हूं,'
तो उके मांफ करजे।"

बिसास

५तो परेरितहुंण ने परभु से क्यो,
"हमारो बिसास बड़ई दे।"
६परभु ने क्यो, "अगर तमारा माय
रंई का दाणा बरोबर बिसास रे तो तम
इना सेतूत का झाड़ से केता, 'उखड़ी के
समन्दर माय लागी जा,' तो उ तमारी
बात मानी लेतो।

दास को काम

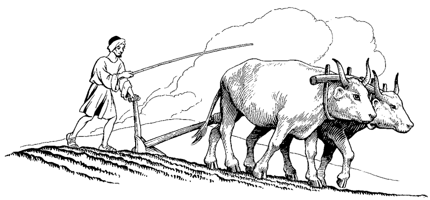

खेत में हल चलाणो (LUK १७.७)

७"तमारा माय से कुंण असो जेको
हळी हळ घेरे अने गाडरहुंण के चरातो
रे, के जदे हळी खेत से आवे तो उ हळी
से केवा लागे, 'भित्तरे अई के जिमवा
बेठिजा'? ८कंई उ उकासे यो नी केगा,
'म्हारा खावा सरु कंई बणा अने उजळा
लतरा पेर अने जदत्तक हूं खई-पी नी
लूं म्हारी सेवा करजे; बाद माय तू
बी खई-पी लीजे'? ९हुकम मानवा सरु
कंई उ अपणा हळी के धन्यबाद देगा?
१०असीज तरा तम बी जदे उण सगळा
हुकम के पाळो जो तमारे द्‍या ग्या हे,
तो को, 'हम निकम्मा दास हे; हमने

---

† **१७.३:** मत्ती १८.१५

तो सिरप उज कर्‌यो जो हमारे करनों
चइये थो'।"

परमेसर के धन्यबाद देणो

११असो होयो के जदे ईसु यरुसलेम
आड़ी जई र्‌यो थो तो सामरिया इलाका
अने गलील का अदाड़ माय से हुई के
हिट्‌यो। [१२]ज्योंज उ कइंका गांम माय
ग्यो तो दूर उब्या दस कोड़्‌या उकासे
मिळ्या। [१३]उणने उंची अवाज से हेला
पाड़ी के क्यो, "हे ईसु स्वामी परभु,
हमार पे दया करजे!"

१४[†] जदे उने उणके देख्या तो क्यो,
"जई के अपणे खुद के पुरोहितहुंण के
दिखाड़ो।"[b]

अने असो होयो के जाताज जाता वी
सुद्द हुई ग्या। [१५]तो उणका माय से
एक ने जदे देख्यो के नज हुई ग्यो हूं,
तो उंची अवाज से परमेसर की बड़ई
करतो होयो पाछो आयो, [१६]अने ईसु के
धन्यबाद देतो होयो सास्टांग परणाम
कर्‌यो अने पग पे पड़ी ग्यो। उ सामरी
जात को थो। [१७]जदे ईसु ने क्यो, "कंई
दस का दसज सुद्द नी होया था, तो
फेर वी नो कंय्यांड़ी हे? [१८]कंई इना
परदेसी का सिवाय उणका माय से हजु
कइंकोज नी र्‌यो जो पलटी के परमेसर
की इसतुती करतो?" [१९]तो ईसु ने उकासे
क्यो, "उठी के चल्यो जा; क्योंके तने
म्हार पे बिसास कर्‌यो तो थारा बिसास
ने थारे नज कर्‌यो हे।"

ईसु को आवा वाळो राज

(मत्ती २४.२३-२८,३७-४१)

२०जदे फरीसिहुंण ने ईसु से पुछ्‌यो,
"परमेसर को राज कदे आयगा?" तो
उने उणके जुवाब द्‌यो, "परमेसर को
राज परगट रुप माय नी आवे। [२१]अने
लोग या नी केगा, 'देखो, उ यां हे!' या
'वां हे!' क्योंके देखो, हूं तमारा गेले हूं तो
परमेसर को राज तमारा अदाड़ मायज
हे।"[c]

२२उने चेलाहुंण से क्यो, "वी दन
आयगा जदे हूं मनख का बेटा का दन
माय से एक दन के देखवा की मन्सा
करोगा, पण तम म्हारे देखी नी सकोगा।
[२३]वी तमार से केगा, 'वां देखो!' 'यां
देखो!' तम चल्या मती जाजो अने नी
उणका पाछे भागजो। [२४]क्योंके बिजळी
जसे चळकी के असमान का इकाड़ी से
दूसरा आड़ी तक चळके, असोज हूं मनख
को बेटो बी अपणा दन माय परगटुंवां
के, आखो जग म्हारे देखेगा। [२५]पण पेलां
यो जरुरी हे के हूं घणो दुःख झेलुं अने
इनी पीड़ी का लोगहुंण से नकार्‌यो जउं।
[२६][†] "जसा के जूना नबी नूह[d] का दनहुंण
माय होयो थो, असोज हूं मनख का बेटा
का दनहुंण मायज होयगा। [२७][†] जदत्तक

---

[b] **१७.१४** पुरोहितहुंण के दिखाड़ो; लेव्य १३.९-४६; पुरोहित जांचतो थो अने घोसणा करतो थो के अबे इना मनख माय कोड़ को रोग हयनी। समाज माय री सकतो थो। [c] **१७.२१** तमारा अदाड़ मायज; या तमारा माय; या तमारा माय परगटेगा। [d] **१७.२६** नबी नूह; जेका बखत माय आखी धरती के मनख का पाप की वजासे परमेसर ने पाणी से नास करी लाखी थी; सिरप नूह अने उका बेटा-बउ अने जो झाज माय पखेरु अने जनावर बची ग्या था (उत्पत्ती ६.९-८.२२)।

[†] **१७.१४:** लेव्यव्यवस्था १४.१–३२ [†] **१७.२६:** उत्पत्ती ६.५–८ [†] **१७.२७:** उत्पत्ती ६.९-७.२४

नूह झाज माय नी चल्यो ग्यो लोगहुंण खाता-पीता अने ब्याव-सादी करता र्‌या। तो जळ परळय होयो अने सगळा खतम हुई ग्या। २८† "लूत का दनहुंण माय बी असो होयो थो। वी खाणो-पीणो, लेणो-देणो करता, झाड़-पोदा लगाड़ता अने घर बणाता था, २९† पण जदे लूत सदोम से हिट्‌यो, उना दन असमान से भस्ते अने तेजाब बरस्यो अने वी सगळा खतम हुई ग्या। ३०जेना दन हूं मनख को बेटो परगटुंवां, उ दन बी नठू असोज रेगा।

३१† "उना दन जो घर का अदरे रे अने समान निच्चे घर माय रे उ उके लेवा सरु नी उतरे; अने असोज उ जो खेत माय रे, पाछो नी पल्टे। ३२† लूत की घराळी[e] के रियाद करो! ३३† जो अपणो पराण बचाड़वा की कोसिस करेगा, उ हमेस्या का जीवन के खोयगा; अने जो म्हारो चेलो हुई के अपणो पराण खोयगा, उ उके सरग माय पाछो पायगा! ३४हूं तमार से कूं के उनी राते दो मनख खाट पे सोता रेगा; एक लई ल्यो जायगा अने दूसरो छेकी लाख्यो जायगा। ३५दो बड़रा एकज जगा पे घट्‌टी पीसती रेगा, एक लई ली जायगा अने दूसरी छेकी लाखी जायगा।" ३६दो मनख खेत माय रेगा; एक लई ल्यो जायगा अने दूसरो छेक्यो जायगा।"[f]

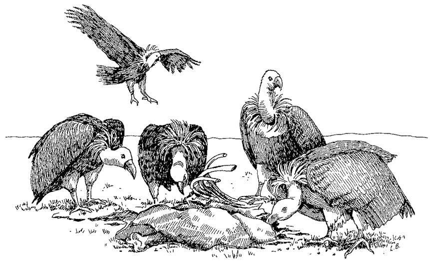

चील-गरदन (LUK १७.३७)

३७तो उणने उकासे पुछ्‌यो, "हे परभु, यो कां होयगा?"

उने उणकासे केवाड़ा माय क्यो, "जां लास पड़ी रेगा वां चील-गरदन बी भेळी होयगा।"

पराथना करो परमेसर जुवाब देगा

१८ ईसु ने उणके यो बताड़णे सरु के निरास होया बिना उणके सदा पराथना करनों चइये या मिसाल दई: २"कइंका नगर माय एक न्यावधीस रेतो थो जो नितो परमेसर से डरतो थो अने नी कइंका मनख की परवा करतो थो। ३इनाज नगर माय एक रांडी बड़रा रेती थी, जो उका कने घड़ी-घड़ी अई के केती थी के, 'म्हारो न्याव करिके म्हारे बेरी से बचाड़।' ४घणा बखत तक तो उने उकी नी सुणी। पण आखर माय उने बिचार्‌यो,

[e] **१७.३२** लूत की घराळी; सदोम माय रेवा वाळा का अदरे जदे तेजाब अने भस्ते बरसी तो या देखवा सरु जसेज लूत की बड़रा ने मुन्डो फेर्‌यो। परमेसर ने उके लूंण को खम्बो बणई लाख्यो, जदके परमेसर ने हुकम द्‌यो थो के पाछे पलटी के मती देखजो (उत्पत्ती १९.२६)। [f] **१७.३६** थोड़िक यूनानी परतिहुंण माय यो पद (३६) जोड़्यो हे। (देखो मत्ती २४.४०)।

† **१७.२८–२९:** उत्पत्ती १८.२०—१९.२५ † **१७.२९:** उत्पत्ती १८.२०-१९.२५

† **१७.३१:** मत्ती २४.१७–१८; मरकुस १३.१५–१६ † **१७.३२:** उत्पत्ती १९.२६

† **१७.३३:** मत्ती १०.३९, १६.२५; मरकुस ८.३५; लूका ९.२४; योहन १२.२५

'जदके हूं परमेसर से नी डरुं अने नी कसाज मनख की परवा करूं, ५फेर बी इकासरु के या म्हारे तंग करी री हे, हूं इको न्याव करुंवां। कंई असो नी होय के वा घड़ी-घड़ी अई के म्हारी नाक मेंज दम करी लाखे।' "

६अने परभु ने क्यो, "सुणो इना अधरमी न्यावधीस ने कंई बोल्यो। ७तो कंई परमेसर अपणा छांट्या होया को न्याव नी करेगा जो दन-रात उके हेला पाड़े हे? कंई उ उणकी मदद करवा माय देर करेगा? ८हूं तमार से कूं उणको न्याव झट करेगा! फेर बी हूं मनख को बेटो जदे राजो हुई के अउंवां तो कंई हूं धरती पे पराथना अने बिसास के पउंवां?"

सई तरा की पराथना करनौं

९ईसु ने उना लोगहुंण से जो इनी बात सरु अपणा अदरे भरोसो राखता था के हम धरमी हे, अने जो दूसरा के ओछा समजता था, या मिसाल दई क्यो, १०"दो जणा मन्दर माय पराथना करवा ग्या। उणका माय से एक फरीसी जो धरम का नेम-बिधान के सकती से पाळण करवा वाळो थो अने दूसरो कर वसुळवा वाळो।[g]

११फरीसी उबो हुई के खुद असी पराथना करवा लाग्यो,[h] 'हे परमेसर, हूं थारे धन्यबाद दउं के हूं दूसरा लोगहुंण सरीको ठग, अन्यावी अने ब्योबिचारी हयनी अने हूं इना कर वसुळवा वाळा सरीको बी हयनी। १२हूं हफ्ता माय दो कावा बरत राखुं अने जो कंई म्हारे मिळे उको दसवों हिस्सो थारे दउं।'

१३"पण कर वसुळवा वाळो थोड़ी दूर पे उबो थो, उ परमेसर आड़ी अपणी नगे उठावा की हिम्मत बी नी करी सक्यो, पण छाती कूटतो होयो बोल्यो, 'हे परमेसर, हूं पापी मनख हूं, म्हार पे दया करजे!' १४[†] अने ईसु ने क्यो, "हूं थार से कूं के यो मनख धरमी ठेराड़्यो जई के अपणा घरे ग्यो, नी के उ फरीसी। क्योंके हरेक उ जो खुद के मोटो बणावे, नानो कर्‌यो जावेगा; अने जो खुद के नानो बणावे, मोटो कर्‌यो जायगा।"

ईसु नाना बाळकहुंण के आसीस दे

(मत्ती १९.१३-१५; मरकुस १०.१३-१६)

१५लोग अपणा बाळकहुंण के बी उका कने लई र्‌या था के उ उणका पे आसीस सरु हात धरे, पण जदे चेलाहुंण ने देख्यो तो डाटंवा लाग्या! १६पण ईसु ने बाळकहुंण के कने बुलाड़ी के क्यो, "बाळकहुंण के म्हारा कने आवा दो! उणके मना मती करो, क्योंके परमेसर को राज असाज को हे[i]। १७हूं तमार से सांची कूं के जो कईं को परमेसर का राज

[g] **१८.१०** कर वसुळवा वाळो; या नाकेदार उना बखत, रोमी सरकार यहूदिहुंण पे राज करी र्‌या था, अने नाकेदारहुंण रोमी सरकार का सेवक था। यहूदिहुंण नाकेदारहुंण से घिरणा करता था क्योंके वी मानता था के कर वसुळणो बुरई को काम हे जेके छोटा अने नीच लोग करे हे।

[h] **१८.११** उबो हुई के खुद असी पराथना करवा लाग्यो; थोड़ाक मूळ माय असो हे उबो हुई के खुद सरु पराथना करवा लाग्यो।

[i] **१८.१६** परमेसर को राज असाज को हे; नरम लोगहुंण जो परमेसर पे बिसास राखे वी बाळकहुंण सरीका जो अपणा मां-बाप पे बिसास राखे हे, परमेसर राजो हे जो उणके समाळे हे।

[†] **१८.१४:** मत्ती २३.१२; लूका १४.११

के बाळक सरीको नी माने, उ कदीज
उका माय जई नी सकेगा।"

जो धन पे भरोसो करे वी परमेसर का राज माय जई नी सके

(मत्ती १९.१६-३०; मरकुस १०.१७-३१)

१८फेर कइंका एक यहूदी हाकिम ने
उकासे सवाल कर्‌यो, "हे भला गरु,
हमेस्या को अजर-अमर जीवन पावा सरु
हूं कंई करूं?"
१९ईसु ने उकासे क्यो, "तू म्हारे
भलो कायसरु के? परमेसर के छोड़ी के
हजु कईं को भलो हयनी? [२०]† पण तू
परमेसर का हुकमहुंण के तो जाणेज हे,
"ब्योबिचार नी करनों, हत्या नी करनों,
चोरी नी करनों, झुंटी गवई नी देणो,
अपणा मां-बाप को मान राखणो।"
२१उने क्यो, "इणके हूं नानपणा से
मानी र्‌यो हूं।"
२२जदे ईसु ने यो सुण्यो तो क्यो,
"थारा माय अबी एक बात की कमकोती
हे; अपणो सगळो धन-सम्पत्ती बेची के
गरीब-गुरबाहुंण के बांटी लाख तो थारे
सरग माय धन मिळेगा। अने अई के
म्हारा पाछे चल्यो-चल।" [२३]पण यो
सगळो सुणी के हाकिम घणो उदास
होयो, क्योंके उ घणो धणी थो।
२४ईसु ने उका आड़ी देखी के क्यो,
"धणिहुंण सरु परमेसर का राज माय
जाणो कितरो अबगो हे! [२५]क्योंके ऊंट
के सुंई का बेज माय से हिटणो, कइंका
धणी मनख के परमेसर का राज माय
जावा से सबगो हे!।"
२६इका पे सुणवा वाळाहुंण के अचरज
होयो उणने क्यो, "तो किको उध्दार हुई
सके?"
२७पण उने क्यो, "जो बातहुंण मनख
सरु अबगी, वी परमेसर सरु सबगी हे।"
२८इका पे पतरस ने क्यो, "देख हम
तो अपणो घर-बार छोड़ी के थारा पाछे
चली पड़्या।"
२९उने उणकासे क्यो, "हूं तमार से
सांची कूं, असो कईं को हयनी जेने
अपणो घर, घराळी, भई-बेनहुंण, मां-बाप
या बाळकहुंण के परमेसर का राज सरु
छोड़्या हे, [३०]उ इना बखत नरा गुणा
जादा अने आवा वाळा जुग माय अजर-
अमर जीवन पायगा।"

ईसु तीसरी बखत अपणी मोत का बारा माय केवा लाग्यो

(मत्ती २०.१७-१९; मरकुस १०.३२-३४)

३१तो ईसु ने बारा चेलाहुंण के इकाड़ी
लइ-जई के उणकासे क्यो, "देखो, हम
यरुसलेम आड़ी जई र्‌या, अने हूं मनख
का बेटा का बारामें नबिहुंण का मिसे जो
कंई लिख्यो, उ सगळो पूरण होयगा।
[३२]क्योंके हूं दूसरा गेर यहूदिहुंण का हात
माय द्‌यो जऊंवां। अने म्हारी मसकरी
करेगा, म्हारा गेले बुरो बरताव कर्‌यो
जायगा, म्हार पे थुंक्यो जायगा। [३३]अने
कोड़ा लगावा का बाद वी म्हारे मारी
लाखेगा, अने हूं तीसरा दन पाछो जीवतो
हुई जऊंवां।"
३४पण इणका माय से कइंकीज बात
चेलाहुंण की समज माय नी अई। तो

---

† **१८.२०:** निरगमन २०.१२–१६; नेम-बिधान ५.१६–२०

वा बात उणकासे गुपत री, अने जो
बात ईसु ने करी थी वी उके समजी
नी सक्या।

आंदो मंगतो देखवा लाग्यो

(मत्ती २०.२९-३४; मरकुस १०.४६-५२)

३५असो होयो के जदे ईसु यरीहो
पोंचवा पे थो तो एक आंदो मंगतो बाट
का मेरे बेठ्यो, भीक मांगी र्‌यो थो।
३६भीड़ का पगहुंण की चाप सुणी के,
उ पुछवा लाग्यो के "यो सगळो कंई हुई
र्‌यो हे?"
३७उणने उके बताड़्यो के "ईसु नासरी
जई र्‌यो हे।"
३८उने हेला पाड़ी के क्यो, "हे ईसु,
दाऊद की सन्तान! म्हार पे दया करजे।"
३९लोगहुंण जो बाट माय ईसु का
अगड़े-अगड़े चली र्‌या था उके डांटी के
"चुप रेवा" की कई र्‌या था। पण उ हजु
जोर से हेला पाड़तो र्‌यो, "दाऊद की
सन्तान, म्हार पे दया करजे।"
४०तो ईसु ने रुकी के दूसरा मनखहुंण
के क्यो "उके म्हारा कने ल्याव।" जदे
ल्याया तो पुछ्‌यो, ४१"हूं थारा सरु कंई
करूं?"
उने क्यो, 'हे परभु, यो के हूं देखवा
लागुं।"
४२ईसु ने उकासे क्यो, "देखवा लाग।
जा थारा बिसास ने जो म्हार पे हे थारे
नज कर्‌यो हे।"
४३उ उनीज घड़ी देखवा लाग्यो अने
परमेसर की बड़ई करतो होयो ईसु का
पाछे चली पड़्यो। जदे सगळा मनखहुंण
ने यो देख्यो तो उणने परमेसर की
बड़ई करी।

ईसु अने जक्कई

१९ ईसु यरीहो नगर माय से हुई
के जई र्‌यो थो। २तो देखो वां
एक मनख थो जेको नाम जक्कई थो।
उ कर लेवा वाळाहुंण को मुख्यो अने
धणी मनख थो। ३उ ईसु के देखवा की
कोसिस करी र्‌यो थो, पण भीड़ की
वजासे देखी नी सकतो थो, क्योंके उ
बावन्यो थो। ४तो ईसु के देखवा सरु
उ अगड़े दोड़ी के गुल्लर का झाड़का
पे चड़ी ग्यो, क्योंके ईसु उनीज बाट
से हुई के जावा वाळो थो। ५जदे ईसु
उनी जगा पे पोंच्यो तो उने अदरे देखी
के उकासे क्यो, "जक्कई, झट निच्चे
उतर्‌या, क्योंके आज म्हारे थारा घरे
रेणो हे।"
६जक्कई उनीज बखत निच्चे उतर्‌यो
अने खुस हुई के ईसु को सुवागत कर्‌यो।
७जदे लोगहुंण ने यो देख्यो तो वी
सगळा यो कई के बड़बड़ावा लाग्या:
"उ तो एक पापी मनख को पांमणो
बणवा ग्यो हे।"
८तो जक्कई ने घर माय उबो हुई ने
परभु से क्यो, "परभु देखतो, हूं अपणी
आदी धन-सम्पत्ती गरीब-गुरबाहुंण के दई
दूंवां, अने अगर म्हने कइंका से अन्याव
करिके जो कइंज ल्यो हे तो उके चोगणों
फेरी लाखुंवां।"
९† ईसु ने उका बारामें क्यो, "आज
इना घरे उध्दार आयो हे, क्योंके

† **१९.९:** उत्पत्ती १५.६

इबराइम सरीको यो बी बिसासी हे।
१०[†] हूं मनख को बेटो खोयाहुंण के
ढुंडवा अने उणको उध्दार करवा आयो
हे।"

दस मीना की मिसाल

(मत्ती २५.१४-३०)

११जदे लोग इनी बातहुंण के सुणी
र्‍या था, तो उ मिसाल दई केवा लाग्यो,
क्योंके उ यरुसलेम कने थो अने वी
सोंची र्‍या था के परमेसर को राज झट
परगटवा पे हे। १२इकासरु उने क्यो,
"एक धणी मनख उंचा घराणा को,
दूर देस ग्यो के अपणा सरु राज-पाट
पई के पाछो आय। १३इकासरु उने
अपणा दसी दासहुंण के तेड़्या अने
उणके दस मीना[j] द्या अने उणकासे
क्यो, 'म्हारा आवा तक इणकासे धन्दो
करजो।' १४पण उका नगर वासी उकासे
बेर राखता था, तो उका पाछे-पाछे
अपणा खास लोगहुंण के यो केवा सरु
मोकल्या: 'हम नी चावां के यो मनख
हमार पे राज करे।'
१५"असो होयो के जदे उ राज पई ने
पाछो आयो तो उने हुकम द्यो के 'वी
दास जिणके म्हने धन द्यो थो तेड़्या
जावे, जेकासे म्हारे मालम हुई जाय के
उणने कसो धन्दो कर्‍यो।' १६पेलां ने
अई के क्यो, 'हे मालेख, थारा मीना
ने दस मीना हजु कमाया।' १७उने
उकासे क्यो, 'हे भला अने बिसासी
दास, सबास! तू घणी नानी बात माय
बिसासी हिट्यो, तू दस नगरहुंण को
हाकिम बणिजा।' १८"फेर दूसरा ने
अई के क्यो, 'हे मालेख, थारा मीना
ने पांच मीना हजु कमाया।' १९उने
उकासे क्यो, 'तू पांच नगरहुंण को
हाकिम बणिजा।'
२०"फेर एक हजु अई के केवा
लाग्यो, 'हे मालेख, देख थारो मीनो!
इके म्हने दस्ती माय बान्दी के राख्यो।
२१क्योंके हूं थार से डरतो थो, इकासरु
के तू घणो कड़क मनख हे, जेके तू
नी राखे उके तू लई ले, अने जेके तू
नी बोय उके तू काटे हे।' २२तो राजा
ने उकासे क्यो, 'हे मतकमेरा दास!
थाराज सबदहुंण से हूं थारे कसुरवार
साबित करुंवां। जदे तू जाणतो थो के
हूं कड़क मनख हूं। जेके म्हने नी धर्‍यो
उके उठई लूं अने जेके नी बोयो उके
काटूं। २३तो तने म्हारो धन ब्याजणो
कायसरु नी दई द्यो, के जदे हूं आतो
तो उके ब्याज समेत लई लेतो?'
२४"तो उने उणकासे जो कने उब्या
था क्यो, 'मीनो इका से लई लो अने
जेका कने दस हे उके दई दो' २५"पण
उणने उकासे क्यो, 'मालेख, उका कने
तो पेलांसेज दस हे।' २६[†] "तो राजा ने
क्यो, 'हूं तमार से कूं हरेक जेका कने
जादा जुम्मेदारी हे, उके जादा दई द्यो
जायगा, पण जेका कने कंई जुम्मेदारी
हयनी, उकासे वा जुम्मेदारी बी जो उका
कने हे लई ली जायगा। २७पण म्हारा
उना बेरिहुंण के जो नी चावे के हूं उणका

[j] **१९.१३** मीना; १ मीना बराबर सो दन की मजुरी हे।

[†] **१९.१०:** मत्ती १८.११ [†] **१९.२६:** मत्ती १३.१२; मरकुस ४.२५; लूका ८.१८

पे राज करूं यां ल्याव अने म्हारा सामे
मारी लाखो!' "

एक राजा जसो ईसु यरुसलेम माय आयो

(मती २१.१-११; मरकुस ११.१-११; योहन १२.१२-१९)

२८इनी बातहुंण के केवा का बाद
ऊ अगड़े-अगड़े यरुसलेम आड़ी चड़तो
ग्यो। २९असो होयो के जदे ऊ बेतफगे
अने बेतनिय्याह गांम माय ऊनी डूंगरी
कने जो जेतून केवाय हे, पोंच्या तो
ऊने चेलाहुंण माय से दोई के यो कई
के मोकल्या, ३०"अपणा सामे का गांम
माय चल्या जाव। वां जाताज तमारे
एक गदड़ी को बच्चो जेका पे कईं
को कदी नी बेठ्यो बन्द्यो मिळेगा।
ऊके छोड़ी के यां ल्याव। ३१अगर कईं
को तमार से पुछे 'कायसरु छोड़ी र्‌या
हो?' तो कोजो, 'परभु[k] के इकी जरुवत
हे।' "
३२जो चेलाहुंण मोकल्या ग्या था ऊणने
जई के, जसो ऊने ऊणकासे क्यो थो
वसोज मिळ्यो। ३३ज्योंज वी गदड़ी का
बच्चा के छोड़वा लाग्या ऊका मालेख ने
क्यो, "तम इके कायसरु छोड़ी र्‌या हो?"
३४ऊणने क्यो, "परभु के इकी जरुवत
हे।" ३५तो वी गदड़ी का बच्चा के ईसु
कने ल्याया, अने चेलाहुंण ने अपणा
लतरा गदड़ी का बच्चा पे लाखी के ईसु
के ऊका पे बेठाड़्यो। ३६जदे ऊ चलवा
लाग्यो तो लोगहुंण अपणा लतरा बाट
माय बिछाड़वा लाग्या।
३७अबे जदे ऊ जेतून डूंगरी की कराई
माय यरुसलेम कने पोंच्यो तो चेलाहुंण
की सगळी भीड़ ऊना सगळा सामरत का
कामहुंण सरु जो ऊणने देख्या था बड़ी
खुसी का साते ऊंची अवाज से परमेसर
की बड़ई करवा लाग्या: ३८[†] "धन्य हे
ऊ राजो जो परभु परमेसर का नाम
से आवे हे! परमेसर अने लोगहुंण का
माय सांती अने ऊंची से ऊंची जगा पे
म्हेमा होय!"
३९भीड़ माय ऊब्या थोड़ाक फरीसिहुंण
ने ऊकासे क्यो, "हे गरु, अपणा चेलाहुंण
के डांट!"
४०ऊने ऊणके जुवाब द्‌यो, "हूं तमार
से कूं अगर ई छाना रेगा तो भाटाहुंण
चिल्लई पड़ेगा।"

ईसु यरुसलेम नगर अने इसराइल देस सरु रोयो

४१जदे ऊ यरुसलेम नगर कने पोंच्यो
तो यरुसलेम नगरी के देखी के ऊका
सरु रोयो। ४२अने क्यो, "अगर आज
का दन तू हां तूज ऊनी बातहुंण के
जाणतो जो सांती की हे! पण अबे
वी थारी आंखहुंण से छिपी गी हे।
४३क्योंके थार पे वी दन आयगा के
थारा बेरी थारा सामे मोरचो बान्देगा
अने थारे चारी आड़ी से घेरी के कुच्ची
लाखेगा। ४४अने बेरिहुंण थारे अने थारा
बाळकहुंण के धूळा माय मिळई के
बराबर करी लाखेगा, अने थार पे एरण
पे एरण बी नी राखेगा, क्योंके ऊना

---

[k] **१९.३१** परभु; या स्वामी या मालेख।
[†] **१९.३८:** भजन संहिता ११८.२६

बखत के जेका माय परमेसर का बेटा ने
थार पे किरपा करी तने नी पेचाण्यो।"

मन्दर की सफई

*(मत्ती २१.१२-१७; मरकुस ११.१५-
१९; योहन २.१३-२२)*

४५अने उ मन्दर माय ग्यो अने
बेपारीहुंण के यो कई के बायरे हेड़वा
लाग्यो: ४६† "धरम सासत्तर माय लिख्यो
हे, 'म्हारो घर पराथना को घर केवायगा,'
पण तमने उके डाकूहुंण को अड्डो बणई
लाख्यो हे।"
४७† उ हरदन मन्दर माय परबचन
द्या करतो थो पण मुख-पुरोहित, अने
सासतरी अने लोगहुंण का परधान
उके नास करवा की कोसिस करवा
लाग्या था। ४८पण उणके असो करवा
को मोको नी मिळ्यो, क्योंके सगळा
लोग उकी बातहुंण के बड़ा ध्यान दई
सुणता था।

ईसु का हक पे यहूदिहुंण को सवाल

(मत्ती २१.२३-२७; मरकुस ११.२७-३३)

२० असो होयो के एक दन जदे उ
मन्दर माय लोगहुंण के परबचन
दई र्यो थो अने सुब-समिचार परचारी
र्यो थो तो मुख-पुरोहितहुंण अने
सासतरिहुंण अने थोड़ाक सियाणाहुंण का
गेले अई के उको सामो कर्यो, २अने
उकासे क्यो, "हमारे बताड़ के तू यो काम
किका हक से करे हे। या उ कुंण हे जेने
थारे यो हक द्यो?"
३उने उणके जुवाब द्यो, "हूं बी तमार
से एक सवाल पुछुं। तम म्हारे बताड़ो,
४योहन के बपतिसमो देवा को हक कंई
सरग आड़ी से मिळ्यो थो के मनख
आड़ी से?"
५तो वी माय-माय केवा लाग्या, "अगर
हम कां परमेसर आड़ी से, तो उ केगा,
'तो तमने उका पे बिसास कायसरु नी
कर्यो?' ६पण अगर हम कां, 'मनख
आड़ी से' तो सगळा मनख भाटा मारी के
हमारे मारी लाखेगा, क्योंके उणके भरोसो
हे के योहन एक नबी थो।" ७इका पे
उणने जुवाब द्यो के "हमारे नी मालम
के उके बपतिसमा देवा को हक कंय्यांड़ी
से थो।
८ईसु ने उणकासे क्यो, "हूं बी तमारे
नी बतउंवां के केका हक से हूं यो काम
करूं।"

दाख का बगीचा का बुरा किरसाण

(मत्ती २१.३३-४६; मरकुस १२.१-१२)

९† तो उ लोगहुंण के इनी मिसाल
माय केवा लाग्यो, "कइंका मनख
ने अंगूर को बगीचो लगाड़िके उके
किरसाणहुंण के बांटा पे दई के खुद
घणो दूरो जातरा पे चल्यो ग्यो।
१०फसल पादरी[1] आवा का बखत उने
किरसाणहुंण कने एक दास के मोकल्यो
के वी उके बगीचा की फसल माय से
कंई दे, पण उणने उके मार्यो-कुट्यो
रीतो हात भगाड़ी द्यो। ११इका पे उने
दूसरा दास के मोकल्यो, पण उणने उके

[1] **२०.१०** पादरी; फसल पाकणो।

† **१९.४६:** यसायाह ५६.७; यरमियाह ७.११ † **१९.४७:** लूका २१.३७ † **२०.९:** यसायाह ५.१

बी मार्‍यो-कुट्‍यो अने माजनो उतारी
के रित्ता हात मोकल्यो। [१२]असोज उने
तीसरा के मोकल्यो पण उणने उके
बी घायळ करिके भगाड़ी लाख्यो।
[१३]तो बगीचा का मालेख ने क्यो, 'हूं
कंई करूं? हूं अपणा परमिला बेटा के
मोकलुंवां। कंई जाणे वी उको मान
राखे!' [१४]पण जदे किरसाणहुंण ने उके
देख्यो तो माय-माय यो कई के एको
कर्‍यो, 'यो तो वारिस हे'। आव, हम
इके मारी लाखां के जायजाद हमारी
हुई जाय।' [१५]तो उणने उके अंगूर का
बगीचा से हेड़ी ने मारी लाख्यो।

"तो बगीचा को मालेख उणका
साते कंई करेगा? [१६]उ अई के उना
किरसाणहुंण के सजा दई के नास करेगा
अने अंगूर को बगीचो दूसरा लोगहुंण के
दई देगा!"

यो सुणी के उणने क्यो, "असो कदी
नी होय!"

१७[†] पण ईसु ने उणका आड़ी देखी के
क्यो, "तो सासत्तर माय यो कंई लिख्यो
के,

'जेना एरण के राज कारीगरहुंण ने
खारिज करी द्‍यो थो
उज कोणा को एरण बणी ग्यो।'

[१८]हरेक जो उकासे भाती पड़े चूरो-चूरो हुई
जायगा पण जेका पे उ पड़ेगा उके धूळा
सरीको पीसी लाखेगा।"

यहूदिहुंण ईसु के कर का बारामें फंसावा की कोसिस माय

(मत्ती २२.१५-२२; मरकुस १२.१३-१७)

१९उनीज घड़ी सासतरिहुंण अने मुख-
पुरोहितहुंण ने उके पकड़वा की कोसिस
करी, क्योंके वी जाणी ग्या था के "उने
या मिसाल हमाराज बारामें कई हे!"
पण वी लोगहुंण से डरी ग्या। [२०]वी ईसु
की थाग माय र्‍या, अने असा भेदुहुंण
मोकल्या जो धरमी होवा को ढोंग करिके
उकीज कइंकी बात से उके पकड़ी के उके
राजपाल का हाते अने रोमी हाकिमहुंण
का हक माय दई दे। [२१]तो भेदुहुंण ने या
कई के उकासे सवाल कर्‍या, "हे गरु, हम
जांणां के तू ठीक बोले हे अने सई-सई
सीखाड़े बी हे, अने तू कइंका की बी पीछ
नी ले पण परमेसर को मारग सच्चई से
सीखावे। [२२]तो हमारे बताड़, "रोमी राजा
केसर, के कर चुकाणो ठीक हे के नी?"

२३पण उने उणकी चालाकी[m] के जाणी
के उणका से क्यो, [२४]"म्हारे एक रोमी
कलदार सिक्को[n] दिखाड़ो।" तो ईसु ने
पुछ्‍यो, "इका पे छाप अने लिख्यो केको
हे'?"

उणने क्यो "केसर राजा को।"

२५उने उणकासे क्यो, "तो जो केसर
को हे, उ केसर के दो; अने जो परमेसर
को हे, उ परमेसर के दो।"

---

[m] **२०.२३** उने उणकी चालाकी; उणको बिचार थो के, अगर ईसु केतो के केसर के कर देणो ठीक हे तो यहूदिहुंण ईसु का बिरोदी हुई जाता, अने नी सुणता अने उका पाछे नी चलता। अगर उ केतो के केसर के कर देणो ठीक नी हे तो रोमी सिपई ईसु के पकड़ी लेता अने जेळ माय लाखी देता।

[n] **२०.२४** कलदार सिक्को; करीब एक दन की मजुरी। ई लोगहुंण तो दिखावटी धारमिक था, पण सांचा धारमिक यहूदिहुंण तो रोमी सिक्का के हात बी नी लगाड़ता था।

[†] **२०.१७:** भजन संहिता ११८.२२

२६तो वी लोगहुंण का सामे उके कइंकी
बात माय नी पकड़ी सक्या, पण उका
जुवाब सुणी के अचम्बो करिके छाना
रई ग्या।

सवाल मोत का बाद जीवन को

(मत्ती २२.२३-३३; मरकुस १२.१८-२७)

२७† फेर थोड़ाक सदुकी जिणको
केणो हे के, जी उठणो हेज नी ईसु
कने आया। २८† उणने उकासे सवाल
कर्‍यो, "हे गरु, मूसा ने सासत्तर माय
लिख्यो हे, 'अगर कईं को मनख जेकी
घराळी रे, अने उ बे-ओलाद मरी जाय,
तो उको भई उकी बइरा से ब्याव
करिके अपणा भई सरु ओलाद पेदा
करे।' २९अने असो होयो के सात भई
था। पेलां भई ने ब्याव कर्‍यो पण
उ बे-ओलाद मरी ग्यो। ३०अने दूसरा
ने बी, उनी बइरा से ब्याव कर्‍यो,
३१अने तीसरा ने बी उनी बइरा के
अपणी घराळी बणई, पण बे-ओलाद
मरी ग्यो। असतरा सातीज बे-ओलाद
मरी ग्या। ३२आखर माय वा बइरा
बी मरी गी ३३इकासरु जदे जी उठणो
होयगा तो वा केकी घराळी रेगा जदके
सातीज ने उके अपणी-अपणी घराळी
बणई ली थी?"

३४ईसु ने उणकासे क्यो, "इना जुग
का लोगहुंण ब्याव-सादी करे अने
करवावे हे, ३५पण वी जो उना जुग
माय जावे अने मर्‍या माय से जी
उठवा का लायक होय, वी नी तो
ब्याव-सादी करेगा अने नी करायगा।
३६नी तो वी फेर कदी मरेगा, क्योंके
वी धरमी जिणके परमेसर ने मोत
से जीवाड़ी के सरगदूतहुंण सरीका
बणाया, परमेसर की ओलाद रेगा।
३७† पण मर्‍या होया तो जिवाड़्या
जावे हे। इनी बात के मूसा बी बळती
हुई झांडी का बखाण माय परगटे हे:
यां उ 'परभु के इबराइम को परमेसर,
इसाक को परमेसर अने याकूब को
परमेसर' के हे। ३८उ मर्‍या होया को
नी पण जीवताहुंण को परमेसर हे।
क्योंके सगळा उका लोग उका सरु
जीवता रे हे।"

३९थोड़ाक सासतरिहुंण ने जुवाब द्‍यो,
"हे गरु, तने ठीक क्यो।" ४०इका बाद
कइंका के ईसु के बात माय फंसावा की
हिम्मत नी हुई।

दाऊद का बेटा का बारामें सवाल

(मत्ती २२.४१-४६; मरकुस १२.३५-३७)

४१तो ईसु ने उणकासे क्यो, "या
कसी बात हे के वी के हे, के मसीह
तो दाऊद को बेटो हे?" ४२† क्योंके
राजा दाऊद खुद भजन संहिता की
पोथी माय के हे,

'परभु परमेसर ने म्हारा परभु से
क्यो;
म्हारा सुदा हाताड़ी बेठ।
४३ † जदत्तक के हूं थारा बेरिहुंण के
थारा पगहुंण की चोकी नी
बणई दूं।'

---

† **२०.२७:** परेरितहुंण २३.८ † **२०.२८:** नेम-बिधान २५.५ † **२०.३७:** निरगमन ३.६
† **२०.४२–४३:** भजन संहिता ११०.१ † **२०.४३:** भजन संहिता ११०.१

[४४]असतरा दाऊद तो मसीह के 'म्हारा परभु' के हे। तो मसीह उको बेटो कसे हुई सके?"

धोका देवा वाळा यहूदी धारमिक नेताहुंण के ईसु की चेतावणी

(मती २३.१-३६; मरकुस १२.३८-४०)

४५जदे सगळा मनख सुणी र्‌या था तो उने चेलाहुंण से क्यो, [४६]"सासतरिहुंण से सावधान रो, जिणके लम्बा-लम्बा चोगा पेरिके अंई-वंई फरनो, हाट-बजारहुंण माय मान का गेले-गेल परणाम पाणो, पराथनाघरहुंण माय खास जगा पे बेठणो अने जिमवा का बखत आदर-मान की जगा पाणो अच्छो लागे। [४७]अने वी जो रांडी बइराहुंण का घरहुंण धोका से हड़पी जाय अने खुद के धरमी दिखाड़वा सरु बड़ी-बड़ी पराथनाहुंण करे। उणके नरी सजा मिळेगा।"

रांडी बइरा की दो छदाम

(मर १२.४१-४४)

२१ ईसु ने नगे अदरे उठाड़ी ने देख्यो के धणी लोग अपणी अपणी भेंट मन्दर का खजाना माय लाखी र्‌या था। [२]उने एक गरीब रांडी बइरा के बी तांबा की दो नानी-नानी छदाम लाखता देख्या। [३]तो उने क्यो, "हूं तमार से खास बात कूं के इनी गरीब रांडी बइरा ने सगळा से बड़ी के भेंट मन्दर का खजाना माय लाखी हे। [४]क्योंके उण सगळा ने अपणी अपणी बचत माय से भेंट करी, पण इने अपणी घटी माय से अपणा जीवन को जो सगळो कंई थो, सगळो लाखी द्‌यो।"

ईसु ने क्यो इना जुग माय यो मन्दर खतम हुई जायगा

(मती २४.१-२; मरकुस १३.१-२)

५जदे थोड़ा मनख मन्दर का बारामें बात करी र्‌या था के उ सुन्दर एरणहुंण अने 'मानता' की भेंटहुंण से कसे बणायो हे, तो उने क्यो, [६]"इनी चीजहुंण का बारामें जिणके तम देखी र्‌या हो, असा दन आयगा, जदके एक एरण का अदरे दूसरो एरण, बी नी रेगा, जो ढळ्डायो नी जायगा।"

अबदा अने सताव

(मती २४.३-१४; मरकुस १३.३-१३)

७तो उणने या कई के उकासे सवाल कर्‌यो: "हे गरु, ई बातहुंण कदे होयगा? अने जदे ई बातहुंण जो होवा वाळी हे, तो इकी सेलाणी कंई रेगा?"

८उने क्यो, "होसियार रो, के तम भरमाया नी जाव, क्योंके नरा लोग म्हारा नाम से अई के केगा, 'हूं मसीहज हूं,' अने 'जुग का अंत को बखत कने अई पोंच्यो हे!' पण तम उणका पाछे चल्या मती जावजो। [९]जदे तम लड़इहुंण अने बलवाहुंण का बारामें सुणो तो डरजो मती, इनी बातहुंण के पेलां होणो जरुरी हे पण उना बखत एक दम से अंत नी होयगा।"

१०तो उ उणकासे केवा लाग्यो, "जात का बिरोद माय जात अने राज का बिरोद माय राज उठेगा। [११]जगा-जगा

धरती को कांपणो होयगा, म्हामरी
अने बिखो पड़ेगा। असमान माय
भयानक घटणाहुंण अने मोटी-मोटी
सेलाणी नगे आयगा। १२"पण इण
सगळी बातहुंण का होवा से पेलां म्हारा
नाम की वजासे लोग तमारे पकड़ेगा,
तमारे सताड़ेगा, यहूदी पराथनाघरहुंण
माय ल्या जायगा अने जेळखाना माय
लाखेगा अने राजाहुंण अने हाकिमहुंण
कने ल्या जायगा। १३इका से तमारे
गवई देवा को मोको मिळेगा। १४†
तो अपणा मन माय खुद के बचाणे
सरु पेलां से तय्यारी मती करजो।
१५क्योंके हूं तमारे असी बोली अने
असो ज्ञान दूंवां के दुसमनहुंण माय से
कइंकोज तमारो नी तो सामो अने नीज
खण्डण करी सकेगा। १६पण तमारा
मां-बाप, भई-बन्द अने दोसज धोको
दई के तमारे पकड़वायगा अने तमारा
माय से कितरा के मरवई लाखेगा।
१७म्हारा नाम की वजासे सगळा तमार
से घिरणा करेगा। १८पण तमारा माथा
को एक बाल बी बांको नी होयगा
क्योंके तम म्हारा गेले हमेस्या तक
रोगा। १९अपणी सबुरी से तम अपणा
पराण के बचाड़ोगा।

दूसरा देसहुंण से यरुसलेम को नास

(मत्ती २४.१५-२१; मरकुस १३.१४-१९)

२०"पण जदे तम यरुसलेम के सेनाहुंण
से घिर्यो होयो देखो, तो जाणी जावजो
के उको उजाड़ कने हे। २१तो वी जो
यहूदा नगर माय हे, बळडीहुंण पे भागी
जावे: जो यरुसलेम नगर माय रे, वी
बायरे हिटी जाय: अने वी जो गांम माय
होवे नगर आड़ी नी पलटे, २२† क्योंके
ई बादळा लेवा का असा दन रेगा, के
वी सगळी बातहुंण जो लिखी पूरण हुई
जायगा। २३उना दनहुंण माय जो भारीपग
से, अने दूद धवाड़ती रे, उणका सरु
हाय! क्योंके देस माय बड़ो कळेस रेगा,
अने इनी जात पे संकट रेगा। २४दुसमन
का सिपईहुंण यहूदिहुंण के तरवार से
काटी लाखेगा, अने जो बच्या रेगा उना
सगळा के दूसरा देसहुंण माय बन्दी बणई
के मोकलेगा। जदत्तक गेर यहूदिहुंण को
बखत जो परमेसर ने द्यो पूरण नी हुई
जाय तदत्तक यरुसलेम गेर यहूदिहुंण का
पग निच्चे कुच्यो जायगा।

हूं मनख का बेटो जदे पाछो अउं, उकी सेलाणी

(मत्ती २४.२९-३१; मरकुस १३.२४-२७)

२५† "सूरज चन्दरमा अने ताराहुंण
माय सेलाणी नगे आयगा, अने धरती
पे की सगळी जातहुंण माय संकट रेगा।
अने समन्दर की गरजन अने लेरहुंण
का बेदा से उणका माय घबराट रेगा।
२६डर अने जगत पे घटवा वाळी बातहुंण
की बाट जोता-जोता मनखहुंण का हात-
पग ढीळा पड़ी जायगा, क्योंके असमान
की ताकतहुंण हलाड़ी जायगा। २७† जदे
लोगहुंण हूं मनख का बेटा के सामरत
का गेले बादळाहुंण पे घणी म्हेमा का

† **२१.१४–१५:** लूका १२.११–१२ † **२१.२२:** होसे ९.७
† **२१.२५:** यसायाह १३.१०; यहेजकेल ३२.७; योएल २.३१; दरसन ६.१२–१३
† **२१.२७:** दानियल ७.१३; दरसन १.७

गेले आता होया देखेगा। [२८]पण जदे ई घटणाहुंण घटवा लागे तो सुदो हुई के अपणो माथो अदरे उठाजो, क्योंके तमारो उध्दार कनेज हे।"

अंजीर का झाड़ से सीख

(मत्ती २४.३२-३५; मरकुस १३.२८-३१)

२९तो उने उणके मिसाल दई क्यो, "अंजीर का झाड़ अने दूसरा सगळा झाड़का के देखो। [३०]ज्यौंज उणका माय कोंपळाहुंण फुटे तो तम देखी के खुद जाणी जाव हो के अबे उनाळो कने अई ग्यो। [३१]असतरा तम बी, जदे यो सगळो होतो देखो, तो जाणी लीजो के परमेसर को राज कने हे।

३२"हूं तमार से खास बात कूं के जदत्तक सगळी बातहुंण घटी नी जाय, इनी पीड़ी को अंत नी होयगा। [३३]असमान अने धरती टळी जायगा, पण म्हारो बचन कदी नी टळेगा।

होसियार रेवा की जरुवत

३४"होसियार रो। कंई असो नी होय के तमारो हिरदो दूराचारी, दारुड़्यो अने जीवन की चिन्ताहुंण का बजन से दबी जावे अने म्हारा आवा को दन एकदम से तमार पे फरफुंदा की तरा अई जाय। [३५]क्योंके आखी धरती पे रेवा वाळा सगळा मनखहुंण पे असतरा अई जायगा। [३६]पण तम हर बखत होसियार हुई के पराथना माय लाग्या रो जेकासे के इनी सगळी बातहुंण से बची-हिटो अने हूं मनख का बेटा का सामे बिसास का साते उबा होवा सरु तमारा माय सामरत रे।"

३७[†] हरदन तो उ मन्दर माय जई के परबचन देतो थो, पण सांज का बखत यरुसलेम से बायरे हिटी के आखी रात उना बळ्डा पे जो जेतून केवाय, बिताड़तो थो। [३८]सगळा लोग सवेरे झट उठी के उका कने मन्दर माय उकी सुणवा सरु अई जाता था।

ईसु के पकड़वाणे सरु कुचक्कर

(मत्ती २६.१-५; मरकुस १४.१-२; योहन ११.४५-५३)

२२ [†] अने बिना खमीरा रोटा को तेवार, जो फसह[०] केवाय, अई र्‌यो थो। [२]अने मुख-पुरोहित अने सासतरिहुंण इनी फिराक माय लाग्या होया था, के ईसु के कसे छाने से मारी लाखां, क्योंके वी लोगहुंण से डरता था।

यहूदा इस्करियोती ईसु के पकड़वाणे सरु तय्यार

(मत्ती २६.१४-१६; मरकुस १४.१०-११)

३तो सेतान उना यहूदा माय भरायो जो इस्करियोती केवातो थो अने जो बारा चेला माय को एक थो। [४]उने जई के मुख-पुरोहितहुंण अने हाकिमहुंण का गेले बात-चित करी के ईसु के कसतरे उणका हात माय पकड़वई दे। [५]इका पे वी घणा खुस होया अने

[०] **२२.१** फसह; सबद् भण्डार माय देखो।

[†] **२१.३७:** लूका १९.४७ [†] **२२.१:** निरगमन १२.१–२७

रुप्या देवा सरु राजी हुई ग्या। ⁶यहूदा
इस्करियोती ने या बात मानी ली अने
उ एक खास मोका की फिराक माय
रेवा लाग्यो के भीड़ से छेटी ईसु के
धोका से पकड़वई लाखे!

ईसु के फसह का भोज खावा सरु तय्यारी करनों

(मत्ती २६.१७-२५; मरकुस १४.१२-२१; योहन १३.२१-३०)

७तो बिना खमीरा रोटा का तेवार
को पेलो दन आयो। जेना दन फसह
को मेमणो बली करनों पड़तो थो।
⁸ईसु ने पतरस अने योहन के यो
कई के मोकल्या, "जई के हमारा सरु
फसह को भोज तय्यार करो के हम
उके खावां।"
९तो उणने उकासे पुछ्यो, "तू कां चावे
के हम उके तय्यार करां?"
१०उने उणकासे क्यो, "नगर माय
जाताज, तमारे एक मनख मिळेगा, जो
पाणी को चकल्यो ल्यो होयो रेगा। तम
बी उका पाछे पाछे उना घर माय चल्या
जावजो जेका माय उ जाय। ¹¹तम उना
घर मालेख से किजो, 'गरु थार से के
हे, के पांमणा रुकाड़वा की जगा कां हे
जां हूं अपणा चेलाहुंण का गेले फसह को
भोज खउं?' ¹²तो उ तमारे सजी-सजई
बड़ी अटारी दिखाड़ेगा। वइंज तय्यारी
करजो।"
१३उणने जई के सगळो कंई वेसोज
देख्यो जसो उने बताड़्यो थो अने उणने
वां फसह तय्यार कर्‌यो।

परभु भोज

(मत्ती २६.२६-३०; मरकुस १४.२२-२६; १ कुरिन्थिहुंण ११.२३-२५)

१४जदे बखत होयो तो ईसु जिमवा
बेठ्यो अने परेरितहुंण बी उका गेले
बेठ्या। ¹⁵उने उणकासे क्यो, "म्हारी
घणी मन्सा थी के हूं दुःख भोगवा से
पेलां तमारा गेले फसह खउं। ¹⁶क्योंके
हूं तमार से कूं के जदत्तक यो परमेसर
का राज माय पूरण नी हुई जाय, हूं इके
पाछो कदी नी खउंवां।"
१७प्यालो लई के जदे उने धन्यबाद दई
के क्यो, "इके लई लो अने माय-माय
बांटी लो। ¹⁸क्योंके हूं तमार से कूं के
जदत्तक परमेसर को राज नी अई जाय हूं
दाखरस[p] कदी नी पिउंवां।"

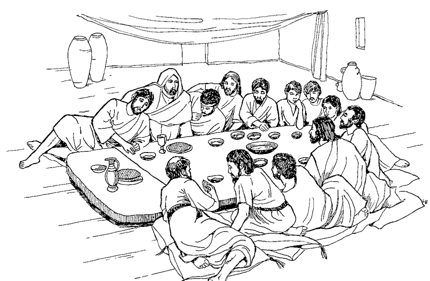

चेलाहुंण का गेले आखरी परभु-भोज (LUK २२.१८)

१९फेर रोटो लई के अने धन्यबाद दई
के तोड़्यो अने चेलाहुंण के देता होयो
क्यो: "या म्हारी काया हे जो तमारा

---

[p] २२.१८ दाखरस; अंगूर रस।

सरु दई जाय: म्हारी रियाद माय असोज करजो।" २०[†] जदे वी खई चुक्या तो वेसोज उने प्यालो लई के क्यो, "यो प्यालो जो तमारा सरु रेड़्यो, म्हारा लोई माय एक नवो करार हे।[q]

२१[†] "पण देखो, जो म्हारे धोको दई के पकड़वाणे वाळो हे उको हात म्हारा साते मेंज पे हे। २२क्योंके हूं मनख को बेटो तो मार्‌यो जउंवां जसो के म्हारा सरु ठेराड़्यो हे, पण उना मनख पे धिक्कार हे के उ म्हारे धोको दई के पकड़वाय हे।"

२३तो वी माय-माय पुछवा लाग्या के "हमारा माय से कुंण यो काम करेगा?"

मोटो कुंण

२४[†] उणका माय एक यो बिवाद उठ्यो के हमारा माय से मोटो कुंण समज्यो जाय। २५[†] ईसु ने उणकासे क्यो, "गेर यहूदिहुंण का राजा उणका पे राज करे अने जिणको उणका पे हक रे, वी 'लोगहुंण की मदद करवा वाळा' केवाय हे। २६[†] पण तमारा माय असो नी होय। उ जो तमारा माय सगळा से मोटो हे उ सगळा से नानो बणे। अने जो मुख्यो हे उ सेवक सरीको बणे। २७[†] क्योंके मोटो कुंण, जो जिमवा बेठ्यो, या उ जो सीदो परोसे हे? कंई उ नी जो जिमवा बेठ्यो? पण हूं तमारा बीच माय परोसवा वाळा सरीको हूं।

२८तम वी हो जो म्हारी अजमाइसहुंण माय म्हारा गेले र्‌या। २९जसे म्हारा पिता ने म्हारे एक राज द्यो, वेसोज हूं बी तमारे दउं हूं, ३०[†] के तम म्हारा राज माय म्हारा गेले खाव-प्यो अने न्याव-आसण पे बेठिके इसराइल का बारा गोतहुंण को न्याव करो।

पतरस को नटणो

(मत्ती २६.३१-३५; मरकुस १४.२७-३१; योहन १३.३६-३८)

३१"सिमोन, हे सिमोन, देख! सेतान ने तम लोगहुंण के गंउ सरीको उफणवा[r] सरु हक मांगी ल्यो हे, ३२पण म्हने थारा सरु पराथना करी हे के थारो बिसास डगी नी जाय। अने जदे तू म्हार पे पक्को बिसास करिके पाछो पल्टे तो अपणा भई-बेनहुंण को बिसास मजबूत करजे।"

३३पण पतरस ने उकासे क्यो, "परभुजी, हूं थारा गेले जेळ जावा अने मरवा सरु बी तय्यार हूं।"

३४फेर उने क्यो, "पतरस, हूं थार से कूं के जदत्तक तू इनी बात से के म्हारे

---

[q] **२२.२०** थोड़ाक हात का लिख्या होया लेखहुंण माय ईसु का बचन १९ आयत माय या म्हारी काया हे के बाद नी आयो हे, अने २० आयत बी नी हे। [r] **२२.३१** उफणवा; जदे गंउ पाकी जाय तो काटिके भेळा करे अने फेर उणके कुटे या दामण दई के तेज बायरा माय उफणे ताके गंउ निच्चे पड़े अने सुक्लो बायरा का गेले उड़ी जाय।

[†] **२२.२०:** यरमियाह ३१.३१–३४ [†] **२२.२१:** भजन संहिता ४१.९

[†] **२२.२४:** मत्ती १८.१; मरकुस ९.३४; लूका ९.४६

[†] **२२.२५–२६:** मत्ती २०.२५–२७; मरकुस १०.४२–४४ [†] **२२.२६:** मत्ती २३.११; मरकुस ९.३५

[†] **२२.२७:** योहन १३.१२–१५ [†] **२२.३०:** मत्ती १९.२८

नी जाणे, आज तीन कावा तू नटी नी
जाय, मुरगो बांग नी देगा।"

बटवो, झोळो अने तरवार

३५† उने उकासे क्यो, "जदे म्हने
तमारे बटवा बिना, झोळा बिना अने
चप्पलहुंण बिना मोकल्या था तो कंई
तमारे कसी चीज की कमती पड़ी थी?"
उणने क्यो, "नी, कसी चीज की नी।"
३६उने उणकासे क्यो, "पण अबे
जेका कने बटवो होय, गेले लई के
जाय। असतरा झोळो बी लई जाय,
अने जिणका कने तरवार हयनी, अपणा
लतरा बेची के एक मोल लई ले। **३७**†
क्योंके हूं तमारे बतंउं के या बात जो
सासत्तर माय लिखी गी, वा म्हारा से
हर हाल माय पूरण होयगा, याने 'उ
मुलजिमहुंण का गेले गिण्यो ग्यो, 'क्योंके
जो बातहुंण म्हारा बारामें करी गी पूरण
होवा पे हे।"
३८उणने क्यो, "परभुजी, देखतो, यां
दो तरवार हे।"
उने उणकासे क्यो, "बस, बस!"[s]

ईसु जेतून परबत पे जई पराथना करे

(मत्ती २६.३६-४६; मरकुस १४.३२-४२)

३९तो ईसु नगर से बायरे हिटी के
अपणी रीति मुजब जेतून का बळडा
आड़ी नगर का बायरे चल्यो, अने
चेलाहुंण बी उका पाछे चली पड़्या।
४०जदे उ वां पोंच्यो तो उने क्यो,
"पराथना करो के तम अजमाइस माय
नी पड़ो।"
४१उ उणकासे करीब ढेला फेंके इतरी
छेटी ग्यो अने गोड़ा टेकी के पराथना
करवा लाग्यो **४२**"हे परमेसर पिताजी,
अगर तू चावे तो इना कटोरा के म्हारा
कने से सरकई दे; फेर बी म्हारी नी
पण थारी मरजी पूरण होय।" **४३**तो
सरग से एक दूत उके नगे आयो जो
उके सामरत देतो थो। **४४**ईसु बेचेन हुई
के पराथना करी र्‌यो थो, अने उको
पसीनो लोई का टपका सरीको जमीन
पे पड़ी र्‌यो थो।[t]
४५जदे उ पराथना करिके उठ्‌यो अने
चेलाहुंण कने आयो तो उने देख्यो के वी
दुःखी हुई के सोइर्‌यो र्‌या था। **४६**उने
उणकासे क्यो, "तम कायसरु सोइर्‌यो
र्‌या हो? उठ्‌याव, पराथना करो के तम
अजमाइस माय नी पड़ो।"

ईसु के यहूदी नेताहुंण अने मन्दर का नेपादारहुंण ने पकड़्यो

(मत्ती २६.४७-५६; मरकुस १४.४३-५०; योहन १८.३-११)

४७जदे ईसु बात करीज र्‌यो थो, तो
देखो, एक भीड़ अइगी अने बाराहुंण
माय से एक चेलो जो यहूदा केवातो थो,
उणका अगड़े अगड़े चल्यो अई र्‌यो थो।
उ ईसु कने आयो के उको चुम्मो ले।

---

[s] **२२.३८** बस, बस; ईसु की बात से चेलाहुंण डरी ग्या था, चेलाहुंण नी चाता था के तरवार के काम माय ले। वी नी समजी सक्या के उ असी भासा माय असा बखत माय जदके बखत कठण हे कायसरु बात करे हे (आयत ३६)। ईसु नी चातो थो के वी तरवार के काम माय ले जदे उ गिरपतार होयो थो (आयत ४९-५१)। [t] **२२.४४** थोड़ाक हात का लेखहुंण माय ४३-४४ आयतहुंण नी मिळे हे।
† **२२.३५:** मत्ती १०.९–१०; मरकुस ६.८–९; लूका ९.३, १०.४ † **२२.३७:** यसायाह ५३.१२

पतरस को नकार्‌यो जाणों (LUK २२.५८)

[४८]पण ईसु ने उकासे क्यो, "यहूदा कंई
तू हूं मनख का बेटा के चुमी के धोको
दई के पकड़वाय हे?"
४९जो उका ऐरे-मेरे उब्या था जदे
उणने देख्यो के कंई होणे जई र्‌यो हे।
तो क्यो, "परभु जी, कंई हम तरवार
चलांवां?" [५०]उणका माय से कइंका ने
म्हापुरोहित का सेवक पे तरवार चलाड़ी
के उको सुदो कान काटी लाख्यो।
५१पण ईसु ने क्यो, "थमो, असो मती
करो!" उने उको कान हात लगाड़ी के
पाछो नज करी लाख्यो।
५२ईसु ने मुख-पुरोहितहुंण अने मन्दर
का हाकिमहुंण अने सियाणाहुंण से जो
उके पकड़वा आया था क्यो, "कंई तरवार
अने लट्‌ठ लई ने म्हारे पकड़वा आया
हो? जसोके हूं कईं को डकेत हूं? [५३]† जदे
हूं हरदन मन्दर माय तमारा गेले र्‌यो तो
तमने म्हार पे हात नी लाख्यो! पण यो
बखत अने इन्दारा को हक तमारो हे।"

पतरस को नटणो के हूं ईसु के नी जाणूं

(मती २६.५७-५८,६९-७५; मरकुस १४.५३-५४,६६-७२; योहन १८.१२-१८,२५-२७)

५४फेर वी उके बन्दी बणई के
म्हापुरोहित का घरे लई चल्या। पतरस
थोड़ोक छेटी से हुई के पाछे-पाछे चली
र्‌यो थो। [५५]जदे वी आंगणा माय ताप
लगाड़ी के बेठी चुक्या तो पतरस बी
उणका गेले बेठी ग्यो थो। [५६]तो एक
दासी ने ताप का उजाळा माय उके बेठ्‌यो
देखी के उका आड़ी ध्यान से देखता होय
क्यो, "यो बी तो उका गेलेज थो।"
५७पण उने यो कई के इका से नटी
ग्यो: "ऐ बई, हूं उके नी जाणूं।"
५८थोड़िक देर बाद कइंका दूसरा ने
उके देख्यो अने क्यो, "तू बी उणका माय
से एक हे।"
पण पतरस ने क्यो, "अरे नी भई, हूं
हयनी!"
५९करीब एक घंटो बितवा का बाद
एक हजु मनख जोर दई के केवा लाग्यो,
"पक्कोज यो मनख बी उका गेले थो,
क्योंके यो बी गलील को हे।"
६०पण पतरस ने क्यो, "अरे भई, हूं
नी जाणूं तू कंई के!"
जदे उ बात करीज र्‌यो थो झट मुरगा
ने बांग लगाड़ी दी। [६१]तो परभु ने मुड़ी
के पतरस के देख्यो अने पतरस के
परभु की बात रियाद अई गी, के उने
यो क्यो थो: "आज मुरगो बांग दे उका

† **२२.५३:** लूका १९.४७, २१.३७

पेलां तू तीन बखत नटेगा के हूं नी
जाणूं।" ६२अने उ बायरे जई के फुटी-
फुटी के रोयो।

नेपादारहुंण ने ईसु का गेले मसकरी करी अने मार्‍यो

(मत्ती २६.६७-६८; मरकुस १४.६५)

६३वी सिपईहुंण जो ईसु के पकड़्या
होया था, उकी मसकरी करिके कुटी
र्‍या था। ६४उणने उकी आंख ढांकी
अने यो कई के उकासे पुछवा लाग्या,
"भविसबाणी कर! केने थारे मार्‍यो?"
६५वी उकी निंदा करिके उका बिरोद माय
हजु नरी बातहुंण करी र्‍या था।

म्हासबा माय ईसु की पेसी

(मत्ती २६.५९-६६; मरकुस १४.५५-६४; योहन १८.१९-२४)

६६जदे दन उग्यो तो लोगहुंण का
सियाणाहुंण की म्हासबा[u] बुलाड़ी, जेका
माय मुख-पुरोहित अने सासतरी बी था।
अने सिपईहुंण ईसु के म्हासबा माय या
केता होया लई ग्या: ६७"अगर तू मसीह
हे तो हमारे बताड़।"
पण उने उणकासे क्यो, "अगर हूं कुंवां
फेर बी तम बिसास नी करोगा, ६८अने
अगर हूं सवाल पुछुं तो तम जुवाब नी
दोगा। ६९पण अबे से हूं मनख को बेटो,
सरवसक्तिमान परमेसर की सगळी
सामरत का सुदा हाताड़ी बेठाड़्यो जउंवां।"
७०तो सगळा ने पुछ्यो, "तो तू कंई
परमेसर को बेटो हे?"
"उने क्यो, 'हां हूं'।"
७१उणने क्यो, "अबे हमारे अगड़े गवई
की कंई जरुवत? क्योंके हमने खुदी उका
मुन्डा से सुणी ल्यो।"

पिलातुस राजपाल का सामे ईसु

(मत्ती २७.१-२,११-१४; मरकुस १५.१-५; योहन १८.२८-३८)

२३ तो आखी म्हासबा उठी के ईसु
के पिलातुस राजपाल कने लई
गी। २वी यो कई के उका पे आरोप
लगाड़वा लाग्या: "हमने इना मनख
के देसवासिहुंण के भड़कातो अने रोम
का राजा केसर के तोजी देवा सरु मना
करतो अने यो केतो सुण्यो के हूं खुद
मसीह, याने राजो हूं।"
३पिलातुस ने उकासे पुछ्यो, "कंई तू
यहूदिहुंण को राजो हे?"
उने उके जुवाब द्‌यो, "ठीक, तू खुदज
कई र्‍यो हे।"
४पिलातुस ने मुख-पुरोहितहुंण अने
भीड़ से क्यो, "हूं इना मनख माय कईं
को कसूर नी पउं।"
५पण वी या कई के दबाव लाखता
र्‍या के, "उ गलील से लई के तो आखा
यहूदिया माय सीख दइ-दई के लोगहुंण
के भड़कावे हे, यां तक के इनी जगा
माय बी।"

हेरोदेस का सामे ईसु

६जदे पिलातुस ने यो सुण्यो तो पुछ्यो,
"कंई यो मनख गलील को हे?" ७जदे

[u] **२२.६६** म्हासबा; यहूदी परजा का सियाणाहुंण की सबा, इबराणी भासा माय जेके सनहेन्द्रयोन के हे।

उने जाण्यो के उ हेरोदेस का राज को
रेवा वाळो हे, तो उने उके हेरोदेस राजा
कने मोकल्यो। हेरोदेस सासक खुद बी
उना बखत यरुसलेम नगर माय थो ८जदे
हेरोदेस सासक ने ईसु के देख्यो तो घणो
खुस होयो क्योंके घणा लम्बा बखत से
उके देखणो चातो थो। उ उका बारामें
सुण्या करतो थो अने उकासे कइंका
चमत्कार देखवा की आस करी र्‌यो थो।
९उने ईसु से नरा सवाल पुछ्‌या पण ईसु
ने कइंका को जुवाब नी द्‌यो। १०मुख-
पुरोहित अने सासतरी वां उबा हुई के
घणा जोर दई के आरोप लगाड़ी र्‌या था।
११तो हेरोदेस सासक ने सिपईहुंण समेत
ईसु की मजाक उड़ई अने उका साते बुरो
बरताव करवा का बाद उके चटकदार
लतरो पेरायो अने पाछो पिलातुस
राजपाल कने मोकली द्‌यो। १२उणाज
दन से हेरोदेस अने पिलातुस माय-माय
दोस बणी ग्या। इका से पेलां उणका माय
दुसमनी थी।

ईसु सरु फेसलो

*(मत्ती २७.१५-२६; मरकुस १५.६-
१५; योहन १८.३९-१९.१६)*

१३पिलातुस ने मुख-पुरोहितहुंण
सासकहुंण अने लोगहुंण के तेड़्‌या,
१४अने उने क्यो, "तम म्हारा कने
इना मनख के बलवो करवा वाळो
अने भड़काणे वाळा की कई के लाया
हो। देखो तमारा सामे इना मनख
के जांचवा पे म्हने इका माय उनी
बातहुंण को कईं को कसूर नी पायो
जेको तम दोष लगाड़ी र्‌या हो। १५अने
नी हेरोदेस ने, क्योंके उने इके हमारा
कने पाछो मोकल्यो हे। अबे देखो, इने
मोत की सजा सरीको कंई काम नी
कर्‌यो। १६तो हूं इके पिटवई के छोड़ी
लाखुंवां।" १७(तेवार का दन पिलातुस
के उणका सरु एक मुलजिम छोड़णो
जरुरी थो।)[v]

१८पण वी एक साते चिल्लाड़ी उठ्‌या,
"इना मनख के मारी लाख अने हमारा
सरु बरअब्बा के छोड़ी दे।" १९यो बरअब्बा
उज थो जो नगर माय बलवो करावा
अने हत्या का कसूर सरु जेळखाना माय
लाख्यो थो।

२०पिलातुस ने ईसु के छोड़वा की
मन्सा से लोगहुंण के फेर समजायो,
२१पण वी यो केता होया चिल्लाता र्‌या:
"उके कुरुस पे चड़ाव, कुरुस पे।"

२२तो उने तीसरी कावा उणकासे क्यो,
"कायसरु? इना मनख ने कंई बुरई करी?
म्हने इका माय मोत की सजा लायक
कंई कसूर नी पायो। तो हूं उके कोड़ा
लगवई के छोड़ी लाखुंवां।"

२३पण वी उंची अवाज से चिल्लाड़ी-
चिल्लाड़ी के के पाछे पड़ी ग्या के उ
कुरुस पे लटकाड़्‌यो जाय अने उणका
चिल्लाड़्‌वा को असर बड़वा लाग्यो। २४तो
पिलातुस ने फेसलो कर्‌यो के उणकी
मरजी पूरण करी जाय। २५तो उने उना
मनख के जो दंगा अने हत्या का कसूर
की वजासे बन्दी बणायो थो उणकी मांग
मुजब छोड़ी लाख्यो: पण ईसु के उणकी
मरजी पे छोड़ी लाख्यो।

---

[v] **२३.१६** थोड़ाक हात का लेखहुंण माय १७ आयत मिळे हे (देखो मरकुस १५.६)।

कुरुस पे लटकाड़्यो जाणो

(मती २७.३२-४४; मरकुस १५.२१-३२; योहन १९.१७-२७)

२६जदे वी ईसु के लइ-जई र्या था तो
उणने गांम आड़ी से आता होया सिमोन
नामका एक कुरेनी नगर का रेवा वाळा
के पकड़्यो अने कुरुस उका कांधा पे धरी
के, के उ कुरुस के ईसु का पाछे-पाछे
लई चले।

२७उका पाछे लोगहुंण की बड़ीमेक
भीड़ चली अइरी थी अने उणका माय
बइराहुंण बी थी जो ईसु सरु रोई अने
कळिपरी थी। २८पण ईसु ने उणका
आड़ी फरिके क्यो, "यरुसलेम की
बेटिहुंण, म्हारा सरु मती रोव, पण
अपणा अने अपणा बाळकहुंण सरु
रोव। २९क्योंके देखो असा दन अई
र्या जदके लोग केगा 'धन्य वी बांझ
अने वी कोख जिणने जन्म्यो हयनी
अने वी स्तन जिणने कदी दूद नी
पिवाड़्यो' ३०† तो

'वी परबतहुंण से केवा लागेगा,
"हमार पे हिटी पड़ो," अने
बळडीहुंण से केगा, "हमारे
ढांकी लो।" '

३१क्योंके अगर वी लिल्ला झाड़ का गेले
असो करे हे, तो सुक्या का गेले कजा
कंई नी होयगा?"

३२सिपईहुंण ने दूसरा दोई डाकूहुंण
के बी जो कसुरवार था, उका गेले मोत
की सजा देवा सरु लइ-जई र्या था।

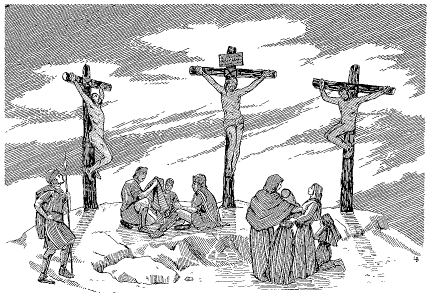

ईसु का अगल-बगल दो डाकू कुरुस पे (LUK २३.३२)

३३जदे वी उनी जगा पे जो कपाळ की
जगा केवाय पोंच्या तो वां उणने ईसु
के अने उका गेले दो डाकूहुंण के बी
कुरुस पे टांग्या एक के सुदा हाताड़ी
अने दूसरा के डाबा हाताड़ी। ३४† पण
ईसु ने क्यो, "हे परमेसर पिता, इणके
मांफ कर, क्योंके ई नी जाणे के कंई
करी र्या हे।" अने उणने चिट्ठिहुंण
लाखी के उका लतरा माय-माय बांटी
ल्या।

३५† लोग कने उबी के देखी र्या था:
यां तक के हाकिमहुंण बी या कई के उके
ताणा दई र्या था, "इने दूसरा लोगहुंण
के बचाड़्या। अगर यो परमेसर को मसीह
याने उको छांट्यो होयो हे तो अपणे खुद
के बचाड़े!"

३६† सिपईहुंण बी उका कने अई के
मजाक उड़ावा, अने सिरको पिवाड़ी के
३७केवा लाग्या, "अगर तू यहूदिहुंण को
राजो हे तो अपणे खुद के बचाड़।"

† **२३.३०:** होसे १०.८; दरसन ६.१६ † **२३.३४:** भजन संहिता २२.१८
† **२३.३५:** भजन संहिता २२.७ † **२३.३६:** भजन संहिता ६९.२१

३८अने उका अदरे यो आरोप-पत्तर बी
लगाड़्यो थो, "यो यहूदिहुंण को राजो
हे।"
३९जो वां लटकाड़्या ग्या था उणका
माय से एक कुकरमी यो कई के कोसी
र्‌यो थो: "कंई तू मसीह हयनी? तो फेर
अपणे खुद के अने हमारे बचाड़"
४०पण दूसरा ने उके डांटी के क्यो,
"कंई तू परमेसर से बी नी डरे? तू बी
तो इना फेसला का मुजब सजा पई र्‌यो।
४१हमारा गेले तो सांची माय न्याव होयो
अने हम अपणी करनी को ठीक फळ
भुगती र्‌या हे। पण इना मनख ने कंई
कसूर नी कर्‌यो।" ४२तो उने ईसु से क्यो,
"हे परभु ईसु, जदे तू अपणा राज माय
आवे तो म्हारे रियाद करजे।"
४३ईसु ने उकासे क्यो, "हूं थार से
सांची कूं के आजज तू म्हारा गेले सरग-
लोक माय रेगा।"

ईसु ने कुरुस पे पराण छोड़्या

*(मती २७.४५-५६; मरकुस १५.३३-
४१; योहन १९.२८-३०)*

४४† अबे यो दफोर्‌या का करीब बारा
बजे को बखत थो अने तीन बज्या दन
तक आखा देस माय इन्दारो छायो र्‌यो।
४५क्योंके सूरज को उजाळो जातो र्‌यो।
अने यरुसलेम मन्दर माय को परदो
अदाड़ से फाटी ग्यो। ४६† ईसु ने उंची
अवाज से हेला पाड़ी के क्यो, "हे परमेसर
पिता, हूं अपणी आतमा थारा हात माय
दई र्‌यो हूं।" या कई के उने पराण छोड़ी
लाख्यो।

४७जदे सुबेदार ने यो सगळो देख्यो तो
उ या कई के परमेसर की बड़ई करवा
लाग्यो: "सांची माय यो मनख निरदोस
थो।"
४८तो आखो हुजुम जो तीन मनखहुंण
की मोत देखवा सरु भेळो होयो थो जो
कंई होयो उके जदे देखी ल्यो, तो अपणी
छाती कूटता होया पाछा जावा लाग्या।
४९† उका सगळा जाण-पेचाण वाळा अने
वी बइराहुंण जो गलील से उका गेले अई
थी, थोड़िक दूरी पे उबी हुई के यो सगळो
देखी री थी।

ईसु की लोथ के गाड़्यो जाणो

*(मती २७.५७-६१; मरकुस १५.४२-
४७; योहन १९.३८-४२)*

५०-५१अने, यूसफ नामको एक मनख
जो यहूदिया का नगर अरमतियाह को
रेवा वाळो थो सुदो अने धरमी मनख थो
अने परमेसर का राज की बाट जोई र्‌यो
थो। उ म्हासबा को एक सदस्य, पण
उणकी योजणा अने काम सरु राजी नी
थो। ५२यूसफ ने पिलातुस कने जई के
ईसु की लोथ मांगी ली। ५३तो उने ईसु
की लोथ के उतारी के मलमल का लतरा
माय लपेटी अने एक कबर माय धरी जो
सिल्ला माय कोरी के बणई थी, जेका
माय कदी कइंका की लोथ नी धरी थी।
५४उ यहूदिहुंण को तय्यारी को दन थो
अने सबत् को दन सुरु होवा वाळो थो।
५५उनी बइराहुंण ने, जो गलील से ईसु
का गेले अई थी, पाछे पाछे जई के उनी
कबर के देखी अने यो बी देख्यो के उकी

† **२३.४५:** निरगमन २६.३१–३३ † **२३.४६:** भजन संहिता ३१.५ † **२३.४९:** लूका ८.२–३

लोथ कसे धरी हे। ५६[†] तो वी पाछी वइंज
अई के जां रुकी थी सुगन वाळा मुसाला
अने अतर तय्यार कर्‌या।
फेर सबद् का दन हुकम का मुजब
उणने अराम कर्‌यो।

ईसु मर्‌या माय से जी उठ्यायो

(मत्ती २८.१-१०; मरकुस १६.१-८; योहन २०.१-१०)

२४ सबद् बितवा पे दितवारे हफ्ता
का पेलां दन पो फाटतांज वी
बइराहुंण उना सुगन वाळा मुसालाहुंण के
जो उणने तय्यार कर्‌या था लई के कबर
पे अई। २उणके बड़ी सिल्ला, कबर पे से
सरकी नगे अई। ३पण जदे वी भित्तरे ग्यी
तो उणके परभु ईसु की लोथ नी लादी।
४असो होयो के जदे वी अचरज करीज
री थी तो देखो, दो मनख चळकण्यां
लतरा पेर्‌या उणका कने अई उब्या। ५तो
बइराहुंण डरी हुई अने जमीन आड़ी मुन्डो
नमाड़ी के उबी थी तो उना मनखहुंण ने
उणकासे क्यो, "तम जीवता के मर्‌या
माय कायसरु ढुंडो हो? ६[†] उ यां नी हे
पण जीवतो हुई ग्यो। रियाद करो के जदे
उ गलील मायज थो तो उने तमार से यो
क्यो थो: ७"हूं मनख को बेटो जरुरीज
पापी मनखहुंण का हात माय करी द्‌यो
जउंवां, कुरुस पे लटकाड़्यो जउंवां अने
तीसरा दन जीवतो हुई जउंवां।"
८तो उणने उकी बातहुंण रियाद करी,
९अने कबर से पाछी अई के सगळी बात
ग्यारा चेलाहुंण के अने सगळा के सुणई।
१०जिणने ई बातहुंण, परेरितहुंण के बतई,
वी मरियम मगदलीनी, योअन्ना अने
याकूब की मेतारी मरियम अने उणका
गेले दूसरी बइराहुंण बी थी। ११पण ई
बातहुंण परेरितहुंण के गप सरीकी लागी।
अने उणने बइराहुंण को बिसास नी
कर्‌यो। १२पण पतरस उठ्यो अने दोड़्यो
दोड़्यो कबर पे ग्यो जदे उने नमिके
भित्तरे देख्यो तो उके सिरप मलमल को
लतरो नगे आयो, अने इनी घटणा पे
अचरज करतो होयो उ अपणा घरे चल्यो
ग्यो।[w]

पतरस ईसु की कबर पे (LUK २४.१२)

इम्माउस की बाट पे दो चेलाहुंण के ईसु को दरसन

(मर १६.१२-१३)

१३अने देखो, उणाज दन उणका माय
से दो जणा इम्माउस नाम का गांम
आड़ी जई र्‌या था जो यरुसलेम से करीब
छः कोस[x] छेटी थो। १४वी इनी सगळी
घटणाहुंण का बारामें माय-माय बात

[w] **२४.१२** थोड़ाक हात का लिख्या होया लेखहुंण माय १२ वीं आयत नी मिळे हे । [x] **२४.१३** छः कोस; या ११ किलो मीटर ।

[†] **२३.५६:** निरगमन २०.१०; नेम-बिधान ५.१४

[†] **२४.६–७:** मत्ती १६.२१, १७.२२–२३, २०.१८–१९; मरकुस ८.३१, ९.३१, १०.३३–३४; लूका ९.२२, १८.३१–३३

करता जई र्‍या था। [१५]पण असो होयो
के जदे वी माय-माय बात करी र्‍या था
तो ईसु खुद वां अई के उणका गेले-गेल
चलवा लाग्यो, [१६]पण उणकी आंखहुंण
असी बन्द करी लाखी थी के ईसु के
ओळखी नी सक्या। [१७]उने उणकासे
क्यो, "तम चलता चलता माय-माय कंई
बातहुंण करी र्‍या हो?"

इम्माउस का रस्ता पे ईसु अने दो मनख (LUK २४.२७)

अने वी उदास हुई के उबा रई ग्या।
[१८]उणका माय से एक ने, जेको नाम
क्लियोपास थो, उके जुवाब द्‍यो, "कंई
तूज एखलो असो मनख यरुसलेम माय
आयो होयो हे के इनी सगळी बातहुंण
से जो इना दनहुंण माय घटी अण्जाण्या
हे?"

१९उने उणकासे क्यो, "कां की
बातहुंण?"

उणने उकासे क्यो, "ईसु नासरी
का बारामें, जो परमेसर अने सगळा
मनखहुंण की नगे माय काम अने बचन
माय सामरती नबी थो। [२०]पण हमारा
मुख-पुरोहितहुंण अने हाकिमहुंण ने उके
पकड़वई के मोत की सजा का लायक
ठेराड़्यो अने उके कुरुस पे टांग्यो।
[२१]पण हम तो या आसा करी र्‍या था
के उज मनख इसराइल के छुटकारो देवा
वाळो हे। इनी बातहुंण का अलावा इनी
घटणाहुंण के घट्‍या आज तीसरो दन हुई
चुक्यो हे। [२२]पण हमारा गेले की थोड़िक
बइराहुंण ने बी हमारे अचरज माय लाखी
द्‍यो। जदे वी सवेरे माय कबर पे ग्यी,
[२३]अने उकी लोथ नी लादी, तो यो केता
हुई अई के 'हमने सरगदूतहुंण को बी
दरसन कर्‍यो जिणने क्यो के उ जीवतो
हे।' [२४]जो हमारा गेले का चेला था उणका
माय से थोड़ाक कबर पे ग्या अने जेनी
बात के बइराहुंण ने जसी कई थी वसीज
मिळी। पण, उणने ईसु के नी देख्यो।"

२५तो ईसु ने उणकासे क्यो, "अरे
कमअकल्याहुंण, जो बात नबिहुंण ने कई
उनी सगळी बातहुंण पे बिसास करवा
माय मतिबन्द लोगहुंण। [२६]मसीह सरु
कंई यो जरुरी नी थो के यो सगळो दुःख
भोगे अने परमेसर की म्हेमा माय जई
पोंचे?" [२७]तो उने मूसा से सुरु करिके
सगळा नबिहुंण अने आखा धरम सासत्तर
माय से अपणा बारामें कई गी बातहुंण
को अरथ उणके समजई द्‍यो।

२८जदे वी उना गांम कने पोंच्या जां
जई र्‍या था, तो उने असो कर्‍यो जसेके
उ अगड़े जाणो चई र्‍यो। [२९]पण उणने
जोर दई के क्यो, "हमारा गेले रुकी जा,
क्योंके सांज हुई चली हे अने दन करीब-
करीब अथणी चुक्यो हे।" तो उ उणका
गेले रुकवा सरु भित्तरे ग्यो। [३०]तो असो
होयो के जदे ईसु उणका गेले जिमवा
बेठ्‍यो तो उने रोटा लई के धन्यबाद

द्यो, अने तोड़ी के उणके देवा लाग्यो।
[३१]तो उणकी आंखहुंण खुली गी अने
उणने उके ओळखी ल्यो, पण उ उणकी
नगे से लोप हुई ग्यो। [३२]वी एक दूसरा
से केवा लाग्या, "जदे उ बाट माय हमार
से बातहुंण करी र्‌यो अने हमारे पवित्तर
सासत्तर को मतलब समजई र्‌यो थो, तो
कंई हमारा हिरदा उतेजणा से नी भरई
ग्या था?

३३उणाज बखत वी उठी के यरुसलेम
पाछा ग्या अने ग्याराहुंण अने उणका
सातिहुंण के भेळा पई के [३४]उणने क्यो,
"परभु सांचीज जी उठ्‌यो, अने सिमोन
के नगे आयो।"

३५अने दोई चेला इम्माउस बाट की
माईथी के अने या के रोटा तोड़ता बखत
वी ईसु के कसे ओळखी ग्या था बताड़वा
लाग्या।

बन्द कोठड़ी माय चेलाहुंण के ईसु ने दरसन द्यो

(मत्ती २८.१६-२०; मरकुस १६.१४-१८; योहन २०.१९-२३ परेरितहुंण १.६-८)

३६जदे वी ई बातहुंण कर्‌या जई र्‌या
था, ईसु उणका अदाड़ माय अई के उबो
हुई ग्यो, अने उणकासे क्यो, "तमारे
सांती मिळे।"

३७पण वी चोंकी ग्या अने डरी ग्या।
उणने बिचार्‌यो के हम कइंका भूत के
देखी र्‌या हे। [३८]ईसु ने उणकासे क्यो,
"तम कायसरु घबराव? तमारा हिरदाहुंण
माय सक कायसरु उठे हे? [३९]म्हारा हात
अने म्हारा पगहुंण के देखो के हूं खुदज
हूं। म्हारी काया के हात लगाड़ी ने देखो,
क्योंके आतमा के हाड़-मांस नी होय,
जसाके तम म्हारा माय देखो हो!"

४०जदे उ यो कई चुक्यो तो उने
अपणा हात अने पग उणके दिखाड़्‌या।[y]
[४१]जदे वी खुसी का मारे अबे बी बिसास
नी करी सक्या अने चेलाहुंण के अचरज
हुई र्‌यो थो। तो ईसु ने उणकासे क्यो,
"कंई तमारा कने यां थोड़ो खावा सरु
हे?" [४२]तो उणने उके सेंकी हुई मच्छी
को एक गांगडो द्‌यो। [४३]अने उने उके
लई के उणका सामे खायो।

४४तो उने उणकासे क्यो, "ई म्हारी वी
बातहुंण हे, जिणके म्हने तमारा गेले रई
के करी, के उनी सगळी बातहुंण के जो
मूसा का नेम-बिधान माय, नबिहुंण, अने
भजनहुंण की पोथी माय, म्हारा बारामें
लिखी गी थी पूरण होणो जरुरी हे।"

४५उने उणके अक्कल दई के वी
पवित्तर सासत्तर के समजे। [४६]अने उने
क्यो, "यो लिख्यो के मसीह दुःख भोगेगा
अने तीसरा दन मर्‌या माय से जीवतो
हुई जायगा। [४७]अने यरुसलेम से सुरु
करिके सगळी जातहुंण माय उका नाम
से पापहुंण की मांफी सरु मन बदळवा
को परचार कर्‌यो जायगा। [४८]तम इनी
सगळी बातहुंण का गवा हो। [४९][†] देखो,
जो करार म्हारा पिता ने कर्‌यो हे, हूं उके
तमार पे उतारुंवां पण जदत्तक तम सरग
की सामरत से भर्‌या-पुर्‌या नी हुई जाव,
इना नगर माय रुक्या री जो।"

---

[y] **२४.४०** थोड़ाक हात का लिख्या होया लेख माय ४० आयत नी मिळे हे ।

[†] **२४.४९:** परेरितहुंण १.४

ईसु असमान पे चड़ि्ग्यो
(LUK २४.५०)

ईसु सरग पे चेलाहुंण का देखता-देखता चल्यो ग्यो

(मर १६.१९-२०; परेरितहुंण १.९-११)

५०† जदे उ उणके बेतनिय्याह तक
बायरे लई ग्यो अने उने अपणा हात अदरे
उठई के उणके आसीस दई। [५१]जदके उ
आसीस दई र्‌यो थो तो उणकासे इकाड़ी
होयो अने उके सरग पे उठई ल्यो। [५२]तो
उणने ईसु के सास्टांग परणाम कर्‌यो
अने वी घणी खुसी का साते यरुसलेम
नगर पाछा अई ग्या [५३]अने रोज-रोज
मन्दर माय जई के परमेसर की बड़ई
करता र्‌या।

---

† **२४.५०–५१:** परेरितहुंण १.९–११